कृष्ण पक्ष, 22 वर्ष, अंक 346, पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 14 जनवरी 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

नवी मुंबई हवाई अड्डे का परिचालन अगले साल 31 मार्च तक

मुंबई/नई दिल्ली

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने शनिवार को कहा कि निमार्णाधीन नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का वाणिज्यिक परिचालन 31 मार्च, 2025 तक शुरू हो जाएगा।ज्योतिरादित्य सिंधिया ने यहां प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि 18 हजार करोड़ रुपये की लागत से बन रहे नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का 55 फीसदी काम पूरा हो चुका है। उन्होंने कहा कि इस एयरपोर्ट का वाणिज्यिक परिचालन 31 मार्च, 2025 तक शुरू हो जाएगा। इससे पहले सिंधिया ने एक बैठक में इस परियोजना की प्रगति की समीक्षा की। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ने कहा कि इस परियोजना के पांचों चरण पूरे हो जाने पर इस हवाई अड्डे पर चार टर्मिनल और दो हवाई पट्टियां होंगी। उन्होंने कहा कि हवाई अड्डे को सड़क, रेल, मेट्रो और जल मार्ग से भी जोड़ा जाएगा। सिंधिया ने कहा कि पहले चरण में इस एयरपोर्ट की सालाना क्षमता 2 करोड़ यात्रियों की होगी। उल्लेखनीय है कि अडाणी समूह द्वारा विकसित की जा रही नवी मुंबई एयरपोर्ट परियोजना को पांच चरणों में बांटा गया है। इस हवाई अड्डे की कुल वार्षिक क्षमता 9 करोड़ यात्रियों की होगी।

अविरल और मृत्युंजय है भारतीय संस्कृति : आरिफ मोहम्मद खान

लखनऊ

केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने शनिवार को एक कार्यक्रम में कहा कि जीवन के अंतिम क्षण तक विद्यार्थी को ज्ञानार्थी बने रहना चाहिए। भारतीय संस्कृति को उन्होंने अविरल और मृत्युंजय बताया तथा कहा कि भारत की संस्कृति अकेली ऐसी संस्कृति है जो आत्मा से परिभाषित होती है। उन्होंने शिक्षा का मतलब संवेदनशीलता बताया। आरिफ मोहम्मद खान आज यहां ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,लखनऊ के अष्टम दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस संसार में जितने भी विषय और मामले हैं,उनका शांतिपूर्ण समाधान तथा निष्पादन का माध्यम केवल वाक्य है, जो भाषा से आता है।

इंडिया गठबंधन : खरगे को अध्यक्ष बनाया

खरगे ने विपक्षी दलों को 'भारत न्याय यात्रा' में बुलाया

नई दिल्ली

विपक्षी गठबंधन की बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को गठबंधन का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। वहीं बैठक में बिहार सीएम और जदयू के नेता नीतीश कुमार ने संयोजक पद ठुकरा दिया। इसकी पुष्टि बिहार सरकार के मंत्री संजय झा ने भी की है। बैठक में नीतीश कुमार ने कहा कि उनकी संयोजक बनने की कोई इच्छा नहीं है बल्कि वह चाहते हैं कि गठबंधन जमीन पर मजबूत बने और बढ़ता रहे। विपक्षी गठबंधन की वर्चुअल बैठक में नीतीश कुमार ने सलाह दी कि कांग्रेस में से किसी को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए। गौरतलब है कि पिछली बैठक में भी टीएमसी चीफ ममता बनर्जी और सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाने की बात कही थी।

विपक्षी गठबंधन की बैठक में ये नेता हुए शामिल

विपक्षी गठबंधन के शीर्ष नेतृत्व की आज हुई बैठक करीब दो घंटे चली और इस बैठक में गठबंधन को मजबूत करने, सीट बंटवारे के लिए रणनीति बनाने और गठबंधन का संयोजक बनाने पर चर्चा हुई। यह बैठक वर्चुअली हुई, जिसमें 10 पार्टियों के नेता शामिल हुए। बैठक में नीतीश कुमार, एमके स्टालिन, शरद पवार, डी राजा, मल्लिकार्जुन खरगे, उमर अब्दुल्ला, राहुल गांधी, सीताराम येचुरी, लालू यादव-तेजस्वी यादव, अरविंद केजरीवाल शामिल हैं। हालांकि बैठक से पहले ही विपक्ष को झटका लगा जब पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने इस बैठक में शामिल होने से मना कर दिया। साथ ही शिवसेना (यूबीटी) के नेता उद्धव ठाकरे और सपा नेता अखिलेश यादव भी विपक्षी गठबंधन की इस बैठक में शामिल नहीं हुए।

आज से 'भारत न्याय यात्रा'

कांग्रेस की यह यात्रा रविवार यानी 14 जनवरी से मणिपुर से शुरू होगी। इससे पहले शुक्रवार शाम को कांग्रेस नेता मुकुल वासनिक के आवास पर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के नेताओं की भी बैठक हुई, जिसमें सीट बंटवारे पर चर्चा हुई।

भाजपा ने साधा निशाना

विपक्षी गठबंधन की बैठक पर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा 'जब मैंने विपक्षी गठबंधन की बैठक के बारे में सुना तो पता चला कि यह एक वर्चुअल बैठक है। वर्चुअल गठबंधन सिर्फ वर्चुअल बैठक ही करेगा। इससे ज्यादा वे कुछ नहीं कर सकते।' विपक्षी गठबंधन की बैठक को लेकर भाजपा सांसद दिलीप घोष ने तंज कसा है। उन्होंने कहा 'विपक्षी गठबंधन कोई काम नहीं करता और सिर्फ बैठकें करता है।

टीएमसी ने कांग्रेस के साथ बैठक से इनकार किया

ममता बनर्जी के बैठक में शामिल ना होने पर टीएमसी ने कहा कि उन्हें बैठक के लिए शॉर्ट नोटिस पर सूचना दी गई और साथ ही कांग्रेस ने बैठक के एजेंडे के बारे में भी कोई जानकारी नहीं दी। हाल के दिनों में यह दूसरी बार है जब टीएमसी ने कांग्रेस के साथ बैठक से इनकार किया है। गुरुवार को ही टीएमसी ने बंगाल में सीट बंटवारे को लेकर कांग्रेस के साथ बैठक से इनकार कर दिया था। दरअसल रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल में कांग्रेस को दो सीटें देने की पेशकश कर रही हैं और ज्यादा से ज्यादा तीन पर वह मान सकती हैं, लेकिन कांग्रेस इस पर सहमत नहीं है।

नीतीश कुमार बोले- किसी पद में कोई रुचि नहीं

विपक्षी गठबंधन के संयोजक पद के लिए बिहार के सीएम नीतीश कुमार के नाम की चर्चा थी। जदयू नेताओं के बयान से भी ऐसा लगा था कि पार्टी नीतीश के लिए संयोजक का पद चाहती है, लेकिन अब खुद नीतीश कुमार ने साफ कर दिया है कि उनकी संयोजक बनने में कोई रुचि नहीं है। बैठक में कांग्रेस की भारत जोड़ो न्याय यात्रा को लेकर भी चर्चा हुई।

सभी मुद्दों को उठाने का सही अवसर: मल्लिकार्जुन खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने लिखा, भारतीय समन्वय समिति के नेताओं ने आज ऑनलाइन मुलाकात की और गठबंधन पर सार्थक चर्चा की। हर कोई इस बात से खुश है कि सीट बंटवारे पर बातचीत सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ रही है। हमने आने वाले दिनों में इंडिया पार्टियों द्वारा संयुक्त कार्यक्रमों के बारे में भी चर्चा की। मैंने राहुल गांधी के साथ सभी भारतीय दलों को अपनी सुविधानुसार 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। हम सबको सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों को उठाने के अवसर का उपयोग करना चाहिए।

योजना बनाने के लिए एक समिति भी बनाई

वहीं आज हुई इंडिया गठबंधन की बैठक पर एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने कहा, मल्लिकार्जुन खरगे की अध्यक्षता में इंडिया अलायंस की बैठक हुई। हमारी चर्चा हुई कि हम सब जल्द से जल्द सीट शेयरिंग पर फैसला लेंगे। कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि गठबंधन का नेतृत्व मल्लिकार्जुन खरगे को करना चाहिए और सभी इस पर सहमत हुए। हमने आने वाले दिनों की योजना बनाने के लिए एक समिति भी बनाई है। सभी ने सुझाव दिया कि नीतीश कुमार को संयोजक के रूप में जिम्मेदारी लेनी चाहिए, लेकिन उनकी राय यह है कि जो पहले से ही प्रभारी है, उसे बने रहना चाहिए।

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह को मिला राम मंदिर का न्योता।

पीएम ने 22 को हर घर में 'श्रीराम ज्योति' प्रज्ज्वलित करने का किया आग्रह

नई दिल्ली

प्रधानमंत्री ने शनिवार को सोनल माता के जन्म शताब्दी कार्यक्रम को वीडियो संदेश के माध्यम से संबोधित किया। सोनल मां गुजरात में गढ़वी चारण समाज की एक प्रसिद्ध समाज सुधारक थीं। उन्होंने कहा कि हम सब कल्पना कर सकते हैं कि आज जब अयोध्या में 22 जनवरी को श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम होने जा रहा है, तो सोनल मां कितनी प्रसन्न होंगी। प्रधानमंत्री ने सभी से 22 जनवरी के शुभ अवसर पर श्रीराम ज्योति जलाने का आग्रह करते हुए कहा, ह्लआज इस अवसर पर मैं आप सभी से, 22 जनवरी को हर घर में श्रीराम ज्योति प्रज्ज्वलित करने का आग्रह भी करूंगा। प्रधानमंत्री ने देश में मंदिरों के लिए कल शुरू हुए स्वच्छता अभियान का भी जिक्र किया और कहा, हमें इस दिशा में भी मिलकर काम करना होगा। मुझे विश्वास है कि हमारे ऐसे प्रयासों से श्री सोनल मां की खुशी अनेक गुणा बढ़ जाएगी। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर पूरे चारण समाज और सभी व्यवस्थापकों को बधाई दी और कहा, ह्लमढड़ा धाम चारण समाज के लिए श्रद्धा, शक्ति, संस्कार और परंपराओं का केंद्र है। मैं आई के चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम करता हूं।

प्राण प्रतिष्ठा: 3 ट्रकों से अयोध्या जाएगा भगवान महाकाल का लड्डू

उज्जैन

अयोध्या में भगवान श्री राम के मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह 22 जनवरी 2024 को भव्य समारोह के रूप में आयोजित होने जा रहा है। इस समारोह में बाबा महाकाल के लड्डू प्रसाद अयोध्या भेजे जा रहे हैं।

बता दें कि जिसकी तैयारी जोरों शोर से चल रही है। प्रसाद को लेकर लड्डू बनाने वाले कारीगर भी बढ़ा दिए गए हैं, 16 जनवरी से यह लड्डू ट्रक में रखकर अयोध्या भेजे जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में महाकाल मंदिर से 5 लाख लड्डू प्रसाद भेजने का निर्णय लिया गया है। किसी क्रम में महाकाल मंदिर प्रबंध समिति द्वारा लड्डू प्रसाद तैयार कराया जा रहा है। महाकाल मंदिर के सहायक प्रशासक मूलचंद जूनवाल ने बताया 5 लाख लड्डुओं के लिए 5 लाख पैकेट बनाए जा रहे हैं और पहले 80 कारीगर लड्डू बना रहे थे, लेकिन समय को देखते हुए 20 कारीगर और बढ़ा दिए गए हैं।

अयोध्या भेजने का काम शुरू हो जाएगा

इस प्रकार अब 100 कारीगर प्रतिदिन लड्डू बनाने में लगे हुए हैं। 16 जनवरी 2024 तक लड्डू तैयार कर लिए जाएंगे और इसके बाद ट्रक में रखकर अयोध्या भेजने का काम शुरू हो जाएगा। संभावना है कि 2 से 3 ट्रकों में रखकर यह लड्डू भेजे जाएंगे।

22 जनवरी को दीपोत्सव मनाने के लिए बाजार में दीयों और मिट्टी की कमी

नई दिल्ली

राम मंदिर के भव्य उद्घाटन के मौके पर देशभर में दिवाली जैसा जश्न मनाया जाएगा। राम भक्तों ने अभी से ही श्रीराम की मूर्ति, फोटो लेकर तैयारियां शुरू कर दी हैं। दीये खरीदने से लेकर साज-सजावट का सामान खरीदने के लिए लोगों की भीड़ बाजार पहुंच रही है। ऐसे में राम मंदिर को लेकर शहरों में मिट्टी के दीयों की डिमांड एकदम बढ़ गई है। दिवाली न होते हुए भी देशभर में दीयों की डिमांड तेजी से बढ़ रही है। शहरों में हालात ये हैं कि कारीगरों के लिए दीयों का ऑर्डर पूरा करना मुश्किल हो रहा है। वहीं, बाजार में भी दीयों की कीमतें दोगुनी हो गई हैं। लेकिन फिर भी कारीगरों के लिए ऑर्डर पूरा करना मुश्किल होता जा रहा है। बाजार में जो मिट्टी का सामान्य दीया पहले एक या दो रुपये का मिलता था, वह अब सीधे पांच रुपये तक का मिल रहा है। दिये बनाने वाले कारीगरों का कहना है कि दीपावली पर दीये बनाने की तैयारी वह करीब छह महीने पहले ही शुरू कर देते हैं। इस समय दीयों की मांग अचानक बढ़ गई है। बीते एक महीने से उन्हें ऑर्डर मिलने लगे हैं। इसके लिए वह तैयार नहीं थे। इसलिए मुश्किलें आ रही हैं। इस पर बिना धूप वाले मौसम ने उनकी मुश्किलें और बढ़ा दी हैं।

एलायंस एयर 21 जनवरी से लक्षद्वीप के लिए शुरू करेगी अतिरिक्त उड़ानें

नई दिल्ली

भारत-मालदीव विवाद के बीच लक्षद्वीप घूमने जाने वाले पर्यटकों के लिए खुशखबरी है। एलायंस एयर ने लक्षद्वीप के लिए अतिरिक्त उड़ानें शुरू करने की घोषणा की है। एलायंस एयर लक्षद्वीप समूह में परिचालन करने वाली एकमात्र भारतीय एयरलाइन कंपनी है। एयरलाइन ने शनिवार को एक्स पर बताया कि एलायंस एयर 21 जनवरी से कोच्चि-अगत्ती-कोच्चि के लिए अतिरिक्त फ्लाइट्स शुरू करेगी। यह अतिरिक्त फ्लाइट्स हफ्ते में दो दिन रविवार और बुधवार को अपनी उड़ानें भरेगी। पर्यटकों की बढ़ती मांग के कारण यह फैसला लिया गया है। उसकी अतिरिक्त उड़ानें 21 जनवरी से 27 मार्च तक के लिए होंगी। एलायंस एयर केरल के कोच्चि और लक्षद्वीप के अगत्ती द्वीप के बीच उड़ानें भरती है।

एमपी में भाजपा की पूरी तैयारी, विधायक और सांसदों को मिली बड़ी जिम्मेदारी

भोपाल

भाजपा ने मिशन-2024 की तैयारी के लिए केंद्र की योजनाओं के हितग्राहियों से सीधे संपर्क की योजना बनाई है। प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्जवला योजना, मुद्रा योजना सहित अन्य योजनाओं के हितग्राहियों की लोकसभावार सूची के आधार पर क्षेत्र के सांसद-विधायक और निकाय, जनपद व जिला पंचायत के सदस्य सहित सभी जनप्रतिनिधि इनसे प्रत्यक्ष संपर्क साधेंगे। पार्टी की तैयारी यह भी है कि इन हितग्राहियों को ही बूथ स्तर पर तैनात किया जाए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी नमो एप के माध्यम से हितग्राहियों से बात कर सकते हैं।

लोकसभा क्षेत्र की जिम्मेदारी

पार्टी की तैयारी है कि लोकसभा चुनाव के लिए प्रत्याशी भले घोषित न हों, लेकिन जनवरी अंत तक हर संसदीय क्षेत्र में चुनाव कार्यालय प्रारंभ कर दिए जाने चाहिए। हर लोकसभा क्षेत्र में एक लोकसभा चुनाव प्रभारी संगठन की ओर से तैनात कर दिया जाए। इसके अलावा भाजपा सरकार के एक मंत्री को भी लोकसभा क्षेत्र की जिम्मेदारी सौंप दी जाए। पार्टी नेताओं के मुताबिक पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम अनुकूल आने से कार्यकताओं में उत्साह का माहौल है, लेकिन अब इस जीत की खुमारी से निकलकर लोकसभा चुनाव में जीत सुनिश्चित करनी है।

लोकसभा चुनाव की तैयारी

मार्च में आचार संहिता लगने की संभावना है। इसे देखते हुए भाजपा की कोशिश है कि चुनाव प्रबंधन से जुड़ी तैयारियां जल्द शुरू कर मार्च से पहले पूरी कर ली जाएं। इसके अलावा पार्टी लोकसभा चुनाव से पहले चलाए जाने वाले अभियान भी इसी महीने शुरू करने के प्रयास में है। हर लोकसभा सीट पर संगठन की ओर से एक नेता और सरकार की ओर से एक मंत्री को चुनाव प्रभारी बनाया जाएगा। पार्टी ने लोकसभा चुनाव की तैयारी के हिसाब से केंद्र की योजनाओं के हितग्राहियों की सूची बनाने का काम लगभग पूरा कर लिया है।

छिंदवाड़ा की अलग से तैयारी

सूत्रों के मुताबिक कांग्रेस के गढ़ छिंदवाड़ा सीट पर जीत हासिल करने के लिए पार्टी ने पहले से ही दिग्गज नेताओं को तैनात कर रखा है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की टीम इन क्षेत्रों पर लगातार नजर रख रही है। टीम कई बार क्षेत्र का दौरा भी कर चुकी है। आचार संहिता के पहले होंगी बड़ी घोषणाएं सूत्रों के ही मुताबिक मार्च 2024 में लोकसभा चुनाव के लिए आचार संहिता लागू होने की संभावना है। पार्टी इससे पहले मतदाताओं के लिए कुछ बड़ी घोषणाएं कर सकती है।

भाजपा की डबल इंजन सरकार

मध्य प्रदेश में भाजपा की डबल इंजन सरकार के लाभार्थी बड़ी संख्या में हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शत-प्रतिशत पात्र नागरिकों को योजनाओं का लाभ सुनिश्चित हो, इसका प्रयास विकसित भारत संकल्प यात्रा के माध्यम से भी हुआ है। हम सामूहिक तौर पर सम्मेलन और घर-घर संपर्क की तैयारी कर रहे हैं। विधानसभा चुनाव में लाभार्थियों ने बड़ी संख्या में हमें आशीर्वाद दिया है। लोकसभा चुनाव में भी उनका आशीर्वाद प्रधानमंत्री मोदी के लिए प्राप्त होगा।

समाधान दिवस : आदेश के बाद कार्यवाही में लग जाता है घुन

अखंड भारत संदेश

कोराव। सम्पूर्ण तहसील समांधान एवं थाना दिवस में फरियादियों की दी गई शिकायतों का समुचित निस्तारण न होने से विशेष तौर पर भूमि विवाद को लेकर कई स्थानों पर अप्रिय घटना घटने की प्रबल संभावनाएं बढ़ती जा रही हैं। उल्लेखनीय है कि चाहे जन सुनवाई पोर्टल हो या आईजीआरएस हो या थाना तहसील संपूर्ण समाधान दिवस हो या डीएम,आयुक्त या सीएम कार्यालय का आदेश हो निचले स्तर पर भू अतिचारियों की ही चलती है। चाहे जितना प्रयास करें। एक उदाहरण थाना कोराव इलाके के ग्राम महुली का है। जहां चकबंदी विभाग ने एक काश्तकार राम दयाल पांडे रिटायर्ड कानूनगो,तथा राजेश्वरी प्रसाद पांडे एवं विद्याकांत पांडे का चक है। उसी के मध्य चकबंदी विभाग ने किसानों की सहूलियतों के लिए मध्य भाग से चकमार्ग और नाली कायम कर दिया है। जिसे कुछ काश्तकार जबरन उक्त सरकारी मार्ग नाली को आवागमन अवरुद्ध कर देते हैं। जिसकी

चकमार्ग,नाली,ग्राम समाज की जमीनों पर सरहंगो का कब्जा, जिलास्तरीय गठित टीमों की कार्यवाही का भी उल्लंघन

शिकायत तहसील कोरांव प्रशासन स्तर से पीड़ितों ने की। किंतु कार्यवाही सीमांकन करने वाली टीमें जब कार्य करके चली जाती हैं तो पुनः कब्जा कर लिया जाता है। पीड़ितों ने यह समझ कर जिला स्तरीय अफसरों से गुहार लगाई तो डीएम के आदेश पर पांचवी बार अंत में मेजा, कोरांव के चकबंदी अधिकारियों कर्मचारियों, राजस्व और पुलिस विभाग की टीमें गठित हुई किंतु पुनः टीम के जाने के बाद अतिचारी सरहंग उक्त नाली चक मार्ग को अवरूद्ध कर देते हैं जिससे किसानों को आवागमन में असुविधा हो गई है। थाना समाधान दिवस में शनिवार को राजेश्वरी प्रसाद तिवारी कृषक एवं राम दयाल पांडे रिटायर्ड राजस्व निरीक्षक निवासी महुली ने उक्त हरकतों का विरोध किया तो पुनः प्रभारी अधिकारी थाना दिवस अजय कुमार संतोषी तहसीलदार/ मजिस्ट्रेट ने थानाध्यक्ष कोरांव, कानूनगो, लेखपाल और चकबंदी कर्ता को महिला पुरुष,पुलिस बल और राजस्व टीम के साथ मौके पर जा कर अवैध कब्जा मुक्त कराने एवम मौके पर शांति व्यवस्था सुनिश्चित का फरमान जारी किया। इसके पूर्व भी शहायक चकबंदी अधिकारी कोरांव ने भी 12 जनवरी 2024 को थाना अध्यक्ष कोरांव को उक्त किस्म का आदेश जारी किया है। देखना यह है कि इस बार क्या कार्यवाही होती है। अन्यथा शांति व्यवस्था भंग हो सकती है। पीड़ितों का कथन है कि इसकी सारी जिम्मेदारी स्थानीय इलाकाई पुलिस राजस्व विभाग की होगी। इस समय भू माफिया, अतिचारी आगे आगे चल रहे हैं और पुलिस राजस्व विभाग के लोग पीछे पीछे चलते दिख रहे हैं। कई स्थानों पर तो एसडीएम ने राजस्व पुलिस बल टीम गठित कर दिया है किंतु कोई टीम का सदस्य बिना सुविधा शुल्क के जाने को तैयार नहीं है। ईसी तरह अल्हवा ग्राम सभा में भी भू अतिचारियों के खिलाफ राजस्व पुलिस टीम गठित गत माह हो गई थीं किंतु टीम अभी ठंडी के कारण नहीं जा पा रही है। इसी तरह विभिन्न इलाके से आए फरियादियों ने अपनी अपनी समस्याएं सुनाई, पत्र दिए जिस पर संबंधित को समुचित कार्यवाही के आदेश जारी किए गए।

समाधान दिवस पर छह प्रार्थना पत्र आए, निस्तारण शून्य

मांडा। यमुनापार का मांडा क्षेत्र प्रयागराज व जिगना मीरजापुर जनपद का अन्तिम छोर सत्तर किमी दूरी होने के कारण जिले का कोई सक्षम अधिकारी समाधान दिवस पर आना अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते हैं। जिससे समाधान दिवस औपचारिकता बनकर रह जाती हैं और एक ही फरियादी कई बार समाधान दिवस पर चक्कर लगाता रहता हैं। शासन, प्रशासन की कार्यप्रणाली एवं उदासीनता से फरियादी मायूस होकर घर के लिए लौट जाते है। ऐसे ही धीरे- धीरे आयोजित समाधान दिवस से फरियादियों ने मुंह चिढ़ा कर मोड़ ले रहे हैं। वही शनिवार को थाना समाधान दिवस पर नायब तहसीलदार मांडा अशोक कुमार के नेतृत्व में आयोजन किया गया। जिसमे भूमि सम्बंधी छह फरियादियों ने प्रार्थना पत्र न्याय की गुहार लगाई। लेकिन समाधान दिवस केवल औपचारिकता बनकर रह गई है। वहीं निस्तारण के नाम पर शून्य परिणाम आने से फरियादी मायूस होकर अपने घर के लिए लौट जाते हैं। समाधान दिवस पर थाना प्रभारी निरीक्षक वैभव सिंह, चौकी प्रभारी दिघिया व भारतगंज के अलावा राजस्व निरीक्षक नूर मोहम्मद, हल्का लेखपाल अशोक कुमार पाण्डेय सहित दर्जनों अधिकारी,कर्मचारी मौजूद रहे। उधर पुलिस चौकी भारतगंज पर पीस कमेटी की बैठक नवागंतुक एसीपी मेजा रवि गुप्ता के नेतृत्व में आयोजन किया गया जिसमें एसीपी मेजा ने उपस्थित क्षेत्रीय लोगों से शान्ति पूर्वक 22 जनवरी को अयोध्या में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया है। उक्त कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का सहयोग जरूरी है।

श्री राम मंदिर उत्सव के निमित्त बांटे गए अक्षत व आमंत्रण पत्र

लालापुर। आगामी 22 जनवरी, 2024 को प्रभु श्रीराम के बाल रूप नूतन विग्रह को, श्रीराम जन्मभूमि पर बन रहे नवीन मंदिर भूतल के गर्भगृह में विराजित करके प्राण-प्रतिष्ठा की जायेगी। इस अवसर पर अयोध्या में अभूतपूर्व आनन्द का वातावरण होगा। इसी क्रम लालापुर क्षेत्र के ग्राम पंचायत मझियारी में कलश यात्रा निकाल कर बाजे गाजे के साथ अक्षत और आमंत्रण पत्र घर घर वितरण किया गया। साथ ही कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे समाजसेवी अंकुश पाण्डेय ने लोगों को बताया कि प्राण-प्रतिष्ठा के दिन (पूर्वाह्न 11:00 बजे से अपराह्न 01:00 बजे के मध्य) अपने ग्राम, मोहल्ले, कॉलोनी में स्थित किसी मंदिर में आस-पड़ोस के रामभक्तों को एकत्रित करके, भजन-कीर्तन करें, टेलीविजन अथवा लगाकर अयोध्या का प्राण-प्रतिष्ठा समारोह देखें और समाज को दिखायें, शंखध्वनि, घंटानाद, आरती करें, प्रसाद वितरण करें।कार्यक्रम का स्वरूप मंदिर-केन्द्रित रहे, अपने मंदिर में स्थित देवी-देवता का भजन-कीर्तन-आरती-पूजा तथा "श्रीराम जय राम जय जय राम" विजय महामंत्र का 108 बार सामूहिक जाप करें। इसके साथ हनुमान चालीसा, सुंदरकाण्ड, रामरक्षा स्तोत्र आदि का सामूहिक पाठ भी कर सकते हैं। सभी देवी-देवता प्रसन्न होंगे, वातावरण सर्वत्र सात्विक एवं राममय हो जायेगा। इस दौरान स्वयं सेवक संघ के राजेश जी , मनकामेश्वर मंडल अध्यक्ष शंकर लाल पांडेय, विनोद पाण्डेय, बूथ अध्यक्ष रविंद्र नाथ पांडेय,वेद प्रकाश मलैहा,अंकुश पांडेय, कृष्णानंद पांडेय, राजेश पांडेय, कुलदीप पाण्डेय , आशीष पाण्डेय, विपिन पाण्डेय सहित अन्य ग्रामवासी शामिल रहे।

रिश्तेदार ने अरब भेजने के लिए वीजा के नाम पर पांच लाख रूपया हड़पा

मऊआइमा। सऊदी अरब भेजने के लिए रिश्तेदार ने एक युवक को वीजा के लिए पांच लाख रुपए हड़प लिया।पैसा मांगने पर जान से मारने की धमकी दी गई। एसीपी के आदेश पर मऊआइमा पुलिस ने अमानत में ख्यानत का मुकदमा दर्ज किया गया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम रामनगर गंसियारी निवासी मोहम्मद परवेज आलम पुत्र अब्दुल जब्बार का कहना है कि मेरे बहनोई मोहम्मद शमशाद सऊदी अरब के रियाज जिले में रहते हैं। आरोप है कि बहनोई शमशाद के मामा मोहम्मद मुस्लिम अंसारी लोगों को खलीज देश भेजने का काम करता है। आरोप है कि उसे भी वीजा देने के नाम पर मोबाइल के जरिए विभिन्न तिथियों को तीन लाख छब्बीस हजार तथा नगदी एक लाख चौहत्तर हजार रूपया लिया।तथा आज कल वीजा देने की बात करते करते कई महीना गुजार दिया। परवेज आलम का आरोप है कि उसे पता चला कि प्रतापगढ़ के बृजेश कुमार और महमूद से पैसा लेकर मुस्लिम नकली वीजा दे दिया था। परवेज आलम ने पांच लाख रुपए वापस मांगा तो उसे गालियां दी गई और जान से मारने की धमकी देते हुए पैसा हड़प लिया। परवेज आलम ने मऊआइमा थाने में एसीपी के आदेश पर मोहम्मद मुस्लिम अंसारी पुत्र साजिद अंसारी पैगम्बरपुर थाना रामपुर जिला मथुरा के खिलाफ अमानत में ख्यानत का मुकदमा दर्ज करा दिया है।

जर्जर तारों के गिरने से आए दिन हो रही दुर्घटनाएं ग्रामीणों ने विद्युत उपकेंद्र की किया घेराव

मऊआइमा। मऊआइमा उपकेंद्र से घना का पूरा आदि तक गए विद्युत तारों के जर्जर हो जाने से आए दिन हो रही दुर्घटनाएं से आजिज आ कर ग्रामीणों ने मऊआइमा विद्युत उपकेन्द्र पर ज्ञापन सौंपा तथा मांग की यदि तार नहीं बदला गया तो धरना दिया जाएगा। मऊआइमा विद्युत उप केन्द्र से नौगिरा, अलीपुर, कटभर परमेजपुर, धरौता, बोडीपुर होते हुए घीनपुर, तिलईबाजार,घना के पूरा तक विद्युत तार जर्जर हो जाने से दो सितम्बर को एक महिला तार टूटने से उसके चपेट में आने से मौत हो गई थी।इसी प्रकार तार टूटने ने घना के पूरा में नहर के पास तार टूटने से एक नील गाय की मौत हो चुकी है। बावजूद इसके विद्युत विभाग तमाम आश्वासन दे कर चुप्पी साध लेता है। रोज बिजली का तार टूटने से आजिज आए ग्रामीणों ने बताया कि प्राथमिक विद्यालय घना का पूरा के दो मासूम छात्र तार के चपेट में आने से बाल बाल बच गए। शनिवार को गांव के सूरज यादव, अमित यादव, विनोद कुमार, अमित,,राम सिंह, प्रदीप कुमार, रंजीत, बसंत आदि मऊआइमा विद्युत उप केन्द्र के अवर अभियंता संतोष यादव को ज्ञापन सौंपा तथा कहे कि यदि अब कोई घटना होगी तो विद्युत विभाग पूर्ण रूप से जिम्मेदार होगा। ग्रामीणों ने जे ई पर आरोप लगाया है कि वह कह रहे हैं कि उनके पास तार नहीं है यदि कनेक्शन धारकों द्वारा तार उपलब्ध करा दिया जाए तो वह लगवा देगें। जब जेई से इस बाबत बात करने की कोशिश की गयी तो उनका फोन बंद था।

न्यूज झरोखा

ग्रामीण फाउंडेशन इंडिया द्वारा मऊआइमा के हरिसेनगंज में हुआ कार्यक्रम

मऊआइमा। बाल विकास सभागार हरिसेनगंज मऊआइमा में (एफ एल डब्ल्यू) प्रोत्साहन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मऊआइमा ब्लॉक के समस्त क्षेत्र की आंगनवाड़ी ,आशा बहू ,एवं एएनएम ने प्रतिभा किया' .जिसमें स्वास्थ्य एवं पोषण ,बाल विकास एवं महिला सशक्तिकरण को लेकर जागरूक किया गया उक्त कार्यक्रम में सीडीपीओ श्रीमती मंजू आदित्य ,सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी एवं ग्रामीण फाउंडेशन इंडिया के जिला पर्यवेक्षक संदीप सिंह स्वराज मुकेश यादव अमरेंद्र सिंह शिवानी अविनाश उपस्थित रहे।

उचित अक्षत निमंत्रण पत्र का किया गया वितरण

सिरसा मेजा क्षेत्र के मिश्रपुर व्लाक उरुवा के अंतर्गत में अयोध्या में रामलला के विराजमान होने का निमंत्रण पत्र लेकर भाजपा कार्यकर्ता घर-घर मे अक्षत वितरण का कार्यक्रम कर रहे हैं जिसने पूरे वातावरण को रामायण किया हुआ है भीषण शीतलहर में युवाओं की टोली जय श्री राम जय हनुमान के नारे लगाते हुए घर-घर जाकर लोगों को आमंत्रण पत्र एवं अक्षत का वितरण किया गया। भाजपा कार्यकताओं ने आह्वान किया कि 22 जनवरी को अपने-अपने घरों में राम भगवान के घर वापसी की खुसी में दीपक जलाने को कहा गया। और मंदिरों में कीर्तन ,सुंदरकांड और पूजा-पाठ करने को कहा साथ ही साथ मन्दिर को लाइट और दीपक के रोशनी से सजाने को कहा। घर-घर मे दीपक जलाने को कहा गया घर पर रहकर भी श्रीराम नाम का कीर्तन हर्षोल्लास के साथ करने को कहा। पूजित अक्षत और निमंत्रण पत्र के वितरण में मुख्य रूप से रणजीत सिंह पटेल, आर्यन मिश्रा, अनुराग मिश्रा, निहाल मिश्रा, सुधांशु पटेल दर्जनों के संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

घर घर जाकर राम भक्तों ने बांटा पुजित अक्षत व चित्र

सहसों। श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा निमंत्रण कार्यक्रम को लेकर श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट अयोध्या द्वारा भेजे गए पूजित अक्षत एवं श्री राम मंदिर का चित्र एवं पत्रक, हर घर पहुंचाने का अभियान विभिन्न मंडलों में राम भक्तों की टोली द्वारा जोर शोर से किया जा रहा है। इसी तरह सहसों मंडल के इनायतपुर मौजे में पूजित अक्षत, राम मंदिर का चित्र एवं पत्रक का वितरण राम भक्तों की टोली ने किया। इस अवसर पर लोगों ने पुजित अक्षत आदि वितरण कर रहे टोली का भाव पूर्ण स्वागत किया। इस अभियान में सह जिला संघचालक गंगापार बद्री प्रसाद सिंह, सह जिला बौद्धिक शिक्षण प्रमुख गंगापार डॉ प्रमोद कुमार गुप्ता, जिला संयोजक नमामि गंगे भाजपा गंगापार राजधर द्विवेदी, शिवबाबू केसरवानी, जयेश केसरवानी सहित आदि उपस्थित रहे।

मृतक के परिजनों के घर जाकर पूर्व कैबिनेट मंत्री ने व्यक्त की शोक-संवेदना

करछना प्रयागराज क्षेत्र के अंतहिया ग्राम पंचायत के कालू का पुरा मजरा निवासी राज कुमार पटेल का पुत्र बम्बई में एक कंपनी में कार्यरत था गत दिनों उसकी बम्बई में आकस्मिक मृत्यु हो गई थी, जिससे उसके घर में मातम छा गया था,जिसका अंतिम संस्कार के पश्चात जानकारी होने पर पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं करछना विधायक रह चुके उज्वल रमण सिंह ने राजकुमार पटेल के घर जाकर परिजनों को हर संभव मदद का भरोसा दिलाया और शोक संवेदना व्यक्त किया इस मौके पर उनके साथ सपा जिला उपाध्यक्ष विनय कुशवाहा, गांव के प्रधान माधवेन्द्र नारायण मिश्र उर्फ बाबा के अलावा कयी गणमान्य लोग उपस्थित रहे,

छत्तौना गांव में अयोध्या पूजित अक्षत वितरित किया गया

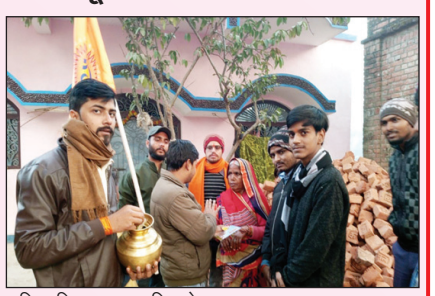

जंघई। मनुपुर मंडल के ग्रामसभा छतौना में हर घर सम्पर्क करके अयोध्या से आए पूजित अक्षत को वितरित किया गया और श्रीरामलला के दर्शन हेतु निमंत्रण पत्र दिया गया। भगवान श्रीराम मंदिर अयोध्या में 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा किया जाएगा जिसके फलस्वरूप इस समय घर घर जाकर अयोध्या पूजित अक्षत, निमंत्रण पत्रक एवं श्रीराम मंदिर अयोध्या की प्रतिमा का वितरण किया जा रहा है। इस अवसर पर खंड सह कार्यवाह रितेश जी, जिला बालोपासना प्रमुख देवेन्द्र जी, भारतीय किसान संघ मनस्वी जी, बजरंग दल प्रखंड संयोजक बृजेश जी, टोली प्रमुख मानस, सुरेन्द्र, मनीष, आकाश, अवनीश, आशीष, शैलेश, अखिलेश जी, दिशु, अमन, आयुष सहित तमाम स्वयंसेवक मौजूद रहे।

स्वामी विवेकानंद जीवन की प्रेरणा है : चंद्र प्रकाश

सहसों। युवा डेवलपमेंट वेलफेयर सोसाइटी सहसों कार्यालय पर संगोष्ठी के माध्यम से स्वामी विवेकानंद जी की जयंती युवा दिवस के रूप में मनाई गई। सर्वप्रथम स्वामी विवेकानंद के छाया चित्र पर पुष्पांजलि के साथ उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए संस्था के अध्यक्ष चंद्र प्रकाश केसरवानी ने स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला और कहा कि स्वामी विवेकानंद जी युवाओं के प्रेरणा स्रोत हैं सभी भारतीय युवाओं को उनके द्वारा बताए गए समय संयम इंद्रिय अर्थ संयम का अक्षर सह पालन करना चाहिए यह हमारे जीवन में बड़ा बदलाव लेकर आएगा। संगोष्ठी का संचालन अधिवक्ता ओम प्रकाश सिंह ने किया। गोष्ठी में इंजीनियर बद्री प्रसाद सिंह, डॉक्टर अमित यादव, हिमांशु सिंह, महेंद्र सिंह, कुंवर मौर्य, आलोक केसरवानी, दीपांशु गुप्ता सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

चाय नास्ता की दुकान में चोरी

घूरपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के सेमरा कल्बना गांव में शुक्रवार की रात अज्ञात चोरो ने चाय नास्ता की दुकान में हजारों रुपए का सामान चोरी कर गए। घूरपुर थाना क्षेत्र के करमा रोड से सौ मीटर अन्दर सेमरा कल्बना गांव के मार्ग पर महेश पटेल निवासी सेमरा कल्बाना की चाय नास्ता की दुकान है। शुक्रवार की रात दुकान के दरवाजे को काट अज्ञात चोरो ने गैस सिलेंडर और बर्तन सहित हजारों रुपए का सामान उठा ले गए । दुकानदार महेश पटेल ने बताया कि दुकान कर्ज लेकर खोला था। अब दुबारा सामान लाने की उसके सामने चुनौती खड़ी हो गई है। चोरी की सूचना घूरपुर पुलिस को दी गई लेकिन मौके पर घूरपुर पुलिस का कोई भी कर्मचारी जांच करने शाम तक तक नहीं पहुंचा।

दलित शोषित वंचितों के लिए भाजपा का दरवाजा सदैव खुला है : डॉ संगम मिश्र

बिरवल गांव में स्वेटर व कंबल का हुआ वितरण

जसरा। बारा विधानसभा के बिरवल ग्राम में आयोजित दलित पिछड़ा वर्ग महासम्मेलन में मुख्य अतिथि भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ संगम मिश्र ने कहा मैं यमुनापार की जनता की सेवा का संकल्प लेकर आया हूं। दलित शोषित वंचितों की भलाई के लिए संघर्ष करता रहा हूं,आगे भी करता रहूंगा।डॉ संगम मिश्र ने कहा दलित शोषित वंचितों असहयों के लिए भाजपा का दरवाजा सदैव खुला है, और खुला रहेगा।दलित शोषित वंचित एवं जरूरतमंदों के लिए यमुना पार क्षेत्र में स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन मेरे द्वारा लगातार हो रहे हैं।जिसमें हजारों लोगों को चश्मा एवं दवाइयों का वितरण किया जा रहा है। ठंडी के मौसम को देखते हुए क्षेत्र में बड़ी संख्या में कंबल टोपी एवं स्वेटर भी बांटे जा रहे हैं। डॉ संगम मिश्र के द्वारा आज जसरा ब्लाक के बिरबल गांव में बड़ी संख्या में लोगों को कंबल एवं स्वेटर का वितरण किया गया। कार्यक्रम के उपरांत आए हुए सैकड़ो लोगों के जलपान की व्यवस्था भी डॉ संगम मिश्र के द्वारा की गई। डॉ संगम मिश्र ने कहा यदि आप हमें यहां से सांसद बनाकर दिल्ली भेजेंगे तो मैं यहां बंद सभी कारखाने को चालू करवाऊंगा। जिससे बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्राप्त होगा। डॉ मिश्र ने उज्ज्वला योजना, राशन कार्ड व आयुष्मान कार्ड आदि सरकार के द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं से जनता को हो रहे लाभ के विषय में लोगों को अवगत कराया। डॉ. संगम मिश्र ने कहा इस क्षेत्र में लोगों को सड़क, पानी, नाली एवं पशुओं से आ रही कठिनाइयों की जानकारी मुझे है। इस विषय में मैं उच्च अधिकारियों से मिल कर शीघ्र समस्या के समाधान का प्रयास करूंगा। सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि दिलीप शुक्ल ने डॉ संगम मिश्र द्वारा क्षेत्र में किए जा रहे दलित शोषित वचित के प्रति कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कोई भी दलित शोषित वंचित अपने सुख-दुख में हमेशा डॉ. संगम मिश्र को याद करता है, तो डॉ संगम स्वयं उनके सुख-दुख में सदैव उपस्थित रहते हैं और यथाशक्ति सहायता प्रदान करते हैं। मंच का संचालन करते हुए शंकरदेव त्रिपाठी ने संसदीय क्षेत्र में डॉ. संगम मिश्र द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी देते हुए बताया की पूरे यमुनापार क्षेत्र में स्वास्थ्य कैंपों में हजारों लोगों को आंखों का चश्मा एवं दवाइयां लगातार वितरित की जा रही हैं। जाड़े की मौसम को देखते हुए डॉ संगम मिश्र के द्वारा बड़ी संख्या में कंबल स्वेटर एवं टोपी जरूरतमंदों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। कार्यक्रम के आयोजक राजाराम चौधरी ने दलितों ,शोषितों, वंचितों एवं जरूरतमंदों से कहा आपके सुख-दुख में डॉ संगम मिश्र सदैव खड़े रहेंगे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से एस.के. तिवारी डायरेक्टर सेंट्रल अकादमी प्रयागराज, राजाबाबू पाठक, यश विक्रम त्रिपाठी, हरिश्चंद्र निषाद, सिद्धार्थ राव, बंसीलाल निषाद, बिहारी लाल निषाद, गुलाब प्रधान, लवकुश निषाद, छोटेलाल निषाद, बडेलाल,दशरथ नेता, काली चरण, गेंदालाल, अमरेश मिश्र, विजय प्रकाश, आकाश, व बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता एवं क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिक एवं महिलाएं उपस्थित रहीं।

मऊआइमा पुलिस ने दो चोरी के बाइकों के साथ तीन को गिरफ्तार कर भेजा जेल

थाने के अन्दर चोरी हुई दो बाइकों में एक पूर्व में जा चुका है जेल ,एक फरार

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र में हो रही बाइक चोरों के एक गिरोह के तीन चोरों को दो बाइकों के साथ पुलिस ने दबोचकर कर जेल भेज दिया है।एक फरार है जो थाने के अन्दर से बाइक चोरी किया था। मऊआइमा कस्बा चौकी प्रभारी शरद सिंह, ज्ञानेंद्र सिंह हमराही पुलिसकर्मियों के साथ मुखबिर खास की सूचना पर मऊआइमा कस्बा के पक्का तालाब पर शनिवार को सुबह दबिश डाल कर दो चोरी की बाइकों के साथ आकाश सिंह पुत्र अजय सिंह,अमन सिंह पुत्र विनोद सिंह ग्राम वैशन का पुरवा उर्फ पूरे लीला कोतवाली प्रतापगढ़ तथा नन्हें लाल पटेल पुत्र राम किशुन थाना मऊआइमा के तेजपुर निवासी को दबोचकर कर बडी कामयाबी हासिल की है। पुलिस ने बताया कि एक चोर थाने के अन्दर बाइक चोरी का मुल्जिम फरार है जबकि एक पूर्व में जेल भेजा जा चुका है।फरार चल रहे बाइक चोर को जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

स्मार्टफोन के माध्यम से सोशल वर्क आसान : डॉ. रीता जोशी

छात्र- छात्राओं को वितरित किया गया स्मार्ट फोन

मांडा। स्मार्टफोन से बच्चों को पढ़ाई में आसानी होगी। व छात्र-छात्राओं को ऑनलाइन व्यवसाय तथा स्मार्टफोन के माध्यम से सोशल वर्क तथा अन्य कार्यों को करने के लिए भाजपा सरकार छात्र-छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित कर रही है। उक्त विचार महावीर कैलाश महाविद्यालय कोसड़ा कला, मांडा व श्रीनाथ रामनाथ महाविद्यालय धनावल , मांडा में मोबाइल वितरण के दौरान भाजपा सांसद डॉ. रीता बहुगुणा जोशी ने व्यक्त किया। संचालन निदेशक डॉ. रवि शंकर पांडेय व आयोजन अंकित त्रिपाठी ने किया। अध्यक्षता कृपा शंकर तिवारी व श्रीनाथ रामनाथ महाविद्यालय का संचालन नीरज त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर दोनों महाविद्यालयों के सैकड़ों छात्र छात्राओं को मोबाइल वितरण किया गया। कार्यक्रम में डा. अमरेश तिवारी, राजेश्वरी प्रसाद तिवारी, हृदेश त्रिपाठी,प्रेम शंकर दूबे, चेयरमैन कोरांव, डा. अखिलेश शुक्ल , अरविन्द कुमार यादव, शिव रक्षा यादव, रमा शंकर, संदीप कुमार आदि मौजूद रहे।

आधुनिक परिवेश में अंग्रेजी भाषा पूरे देश में जगह बना ली है : हर्षवर्धन वाजपेई

करछना। आधुनिकता के दौर में अंग्रेजी पूरे संसार की भाषा हो गई है । अंग्रेजी का ज्ञान भी उतना ही जरूरी है । जितना कि हिंदी का। हमें अपनी मातृभाषा हिंदी पर गर्व है। हम लोग हिंदी का सम्मान करते हैं। आपका धन लोग छीन सकते हैं । लेकिन नॉलेज नहीं। उक्त बातें शहर उत्तरी के विधायक इं हर्षवर्धन बाजपेई ने करछना के शुक्लगंज में संचालित एक अंग्रेजी शिक्षण संस्थान के दसवीं वर्षगांठ पर छात्र व छात्राओं की ओर से आयोजित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में बृहस्पतिवार शाम को कहा । उन्होंने बच्चों से अंग्रेजी के अच्छे लेखकों की किताबों के अध्ययन के साथ अंग्रेजी के न्यूज पेपरो का अध्ययन भी करने की सलाह दी। और कहा कि बच्चे अंग्रेजी तो लिख भी लेते हैं और पढ़ भी लेते हैं । लेकिन बोलने में हिचकिचाते हैं। जबकि विदेशों में अंग्रेजी बोलने की सख्त जरूरत होती है। उन्होंने 22 जनवरी को अयोध्या में श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव को लोगों से घरों व मंदिरों में पूजन अर्चन करने व दीप जलाए जाने की भी अपील की। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती मां की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। साथ ही साथ- साथ छात्राओं की ओर से सरस्वती वंदना सहित स्वागत गान की प्रस्तुतियां भी हुई। वही कार्यक्रम के आयोजक व संयोजक की ओर से मुख्य अतिथि का माल्यार्पण करके व अंग वस्त्रम् तथा फरसा भेंट कर उन्हें सम्मानित भी किया गया । उसके बाद छात्राओं की ओर से रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नृत्य की प्रस्तुतियां भी हुई । कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा के वरिष्ठ नेता शोभनारायण द्विवेदी ने किया। और संचालन उच्च न्यायालय के अधिवक्ता व भाजपा नेता पंकज शुक्ल ने किया। और उन्होंने विधायक का स्वागत भाषण करते हुए उन्हें राम की प्रतिमा भी भेंट की। संस्थान के निदेशक रत्नेश कुमार तिवारी की ओर से सभी के प्रति आभार भी जताया गया । इसके पूर्व करछना - कोहडार घाट मार्ग पर विधायक का जगह-जगह लोगों की ओर से फूल मालाओं से स्वागत व अभिनंदन भी किया गया। इस मौके पर विश्वनाथ शुक्ल, अवध नारायण शुक्ल, करछना ब्लॉक प्रधान संघ के अध्यक्ष अवतार किशन सिंह दादू, भाजपा भडेवरा मंडल अध्यक्ष प्रदीप पांडेय ,भाजपा भीरपुर मंडल अध्यक्ष अजय सिंह , समाजसेवी बृजेश पांडेय ,बंदना तिवारी, अमित मिश्र, अनिल तिवारी,प्रधान पंकज पांडेय प्रधान प्रतिनिधि राजमणि विश्वकर्मा, शिशिन सिंह , अतुल मिश्र,राजेश शुक्ल, प्रकाश नारायण द्विवेदी, भाजपा युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष भडेवरा विकास पांडेय ,गणेश शुक्ल,सुरेश शुक्ल, अखिलेश मिश्र, विवेक शुक्ल, नीरज मिश्र, देवमणि मिश्र, विनायक पंडित , सिद्धेश शर्मा , सुशील ओझा,आदि लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात धरवारा न्याय पंचायत में गतदिवस हुई तीन लोगों की मृत्यु पर उनकी आत्माओं की शांति के लिए दो मिनट का मौन भी रखा गया।

संगम तट पर 15 जनवरी से शुरू हो रहा माघ मेला, पुलिस, डॉक्टर और सफाईकर्मी मुस्तैद

बस गया तंबुओं का शहर, पहुंचने लगे कल्पवासी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। संगम नगरी प्रयागराज में तंबुओं का शहर बस चुका है। गंगा, यमुना और सरस्वती के किनारे बसे इस मेले में देश भर से साधु संत व कल्पवासियों का आना भी शुरू हो गया है। यहां 15 जनवरी यानी मकर संक्रांति पर्व से माघ मेले की शुरूआत हो जाएगी। 15 को ही पहला स्नान पर्व होता है जिसमें देश भर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाने पहुंचेंगे। गंगा यमुना के किनारे बड़ी मात्रा में पुआल बिछाने का काम जोरों से चल रहा है ताकि स्नानार्थियों को ठंड से बचाया जा सके। पुलिस व पैरामिलिट्री के जवानों को मुस्तैद कर दिया गया है। श्रद्धालुओं की सेहत का ख्याल रखने के लिए बड़ी संख्या में डॉक्टर व अन्य स्वास्थ्यकर्मी अपने तैनात स्थल लग गए हैं। पूरा मेला पांच सेक्टरों में बसाया गया है। मेला प्रशासन का अनुमान है कि करीब 2 करोड़ स्नार्थी स्नान के लिए पहुंचेंगे।

2 बड़े अस्पताल व 12 स्वास्थ्य केंद्रों की व्यवस्था : माघ मेले में 2 बड़े यानी 20-20 बेड के अस्पताल बनाए गए हैं जिसका नाम त्रिवेणी और गंगा है। त्रिवेणी अस्पताल बनकर तैयार है, यहां आज यानी 13 दिसंबर से आने वाले श्रद्धालुओं का इलाज शुरू हो जाएगा। इसी तरह विभिन्न स्थानों पर 12 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बनाए गए हैं जहां मरीज सामान्य बीमारियों की दवाईयां ले सकेगा। 2 हजार से ज्यादा स्वास्थ्यकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। 30 एंबुलेंस होंगी जो जरूरत पड़ने पर तत्काल मौके पर पहुंचेंगे और अस्पताल पहुंचाएंगे। मेले में गर्भवती महिलाओं के प्रसव की भी व्यवस्था होगी इसके लिए महिला चिकित्सकों की ड्यूटी लगाई गई है।

सिर्फ सुरक्षा ही नहीं सेवा भी करेगी पुलिस : माघ मेला क्षेत्र में अलग अलग शिफ्ट में पुलिस के जवानों की ड्यूटी 24 घंटे के लिए लगाई गई है।यहां 14 थाने बनाए गए हैं। 14 फायर स्टेशन, 41 पुलिस चौकी, 14 वाच टावर भी हैं। मेला में खो जाने वालों के लिए छह खोया पाया केंद्र भी है जहां 14 घंटे लोगों की मदद की जाएगी। खास बात यह है कि पुलिस यहां श्रद्धालुओं पर रौब नहीं दिखाएगी बल्कि पूरे श्रद्धाभाव से उनकी मदद व सेवा करेगी। इसके लिए उच्चाधिकारियों को पुलिस के जवानों को निर्देशित भी किया गया है। सिर्फ प्रयागराज ही नहीं बल्कि प्रदेश के विभिन्न जनपदों से पुलिस (महिला व पुरुष) को यहां तैनात किया गया है।

माघ मेले में स्वच्छता पर विशेष फोकस : दरअसल, 2024 के माघ मेले को महाकुंभ 2025 के ट्रेलर के रूप में देखा जा रहा है। पूरे मेला क्षेत्र में स्वच्छता पर विशेष फोकस किया गया है। इसके लिए यहां 7 हजार से ज्यादा कूड़ादान रखवाया गया है ताकि लोग कचरा इसी में डालें और कचरा गाड़ी इस कचरे को मेला से बाहर ले जाएगी। 21000 टायलेट की व्यवस्था की गई है जो 2000 यूरिनल भी बनाए गए हैं। मेला क्षेत्र में 6 बड़े अस्थायी पार्किंग स्थल भी बने हैं। इसके अलावा 21 विद्युत उपकेंद्र बनाए गए हैं ताकि पूरा मेला क्षेत्र रात में भी और सुंदर चमकता हुआ दिखे।

मकर संक्रांति पर चलेंगी 10 स्पेशल ट्रेन : डीआरएम हिमांशु बडोनी ने बताया कि मकर संक्रांति के दिन 15 जनवरी को 10 अतिरिक्त ट्रेनें चलाएंगे इसके अलावा पांच ट्रेन रिजर्व में होंगे। इसी तरह मौनी अमावास्या के लिए 20 ट्रेनें चलाई जाएंगी। प्रयागराज जंक्शन व नैनी जंक्शन से मेजा रोड, मांडा रोड, विध्याचल, मीरजापुर, चुनार एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन की तरफ जाने वाली ट्रेनें मिलेंगी। प्रयागराज जंक्शन से भरवारी, सिराथू, खागा, फतेहपुर एवं कानपुर आदि रेलवे स्टेशनों के लिए ट्रेनें यात्रियों को मिलेंगी। प्रयागराज जंक्शन, नैनी जंक्शन व छिवकी रेलवे स्टेशन से शंकरगढ़, डभौरा, मानिकपुर, वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी, सतना, जबलपुर आदि स्टेशनों की तरफ जाने वाली ट्रेनें मिलेंगी। प्रयाग एवं फाफामऊ स्टेशन से फूलपुर, भदोही, जौनपुर, लालगंज, अमेठी, प्रतापगढ, ऊंचाहर, रायबरेली, लखनऊ, बरेली, सुल्तानपुर, अयोध्या कैंट, अयोध्या आदि स्टेशनों की तरफ जाने के लिए ट्रेनें यात्रियों को मिलेंगी। इसके अलावा प्रयागराज रामबाग व झूंसी रेलवे स्टेशन से ज्ञानपुर रोड, बनारस, वाराणसी, मऊ, बलिया, भटनी, गोरखपुर आदि स्टेशनों की तरफ जाने वाली ट्रेनें मिलेंगी।

हाईकोर्ट समाचार

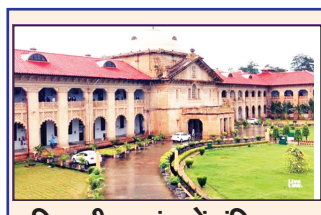

विभागीय जांच में दंडित कर हुई बर्खास्तगी मनमानी व सनक भरी, पुलिस अधिकारी की बर्खास्तगी रद्द

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पीड़ित व एक मित्र चश्मदीद की सवा चार लाख की लूट की गवाही पर बिना दोषी करार दिए आरोपी पुलिस अधिकारी की बर्खास्तगी को रद्द कर दिया है। साथ ही विभागीय जांच रिपोर्ट पर विभाग को नियमानुसार कार्रवाई की छूट दी है। यह आदेश न्यायमूर्ति अजित कुमार ने केशव देव की याचिका को स्वीकार करते हुए दिया है।कोर्ट ने विभागीय जांच कार्यवाही में प्रक्रियात्मक दोष और बिना आरोप साबित किए बर्खास्त करने के दंड को मनमाना व सनक पूर्ण आदेश करार दिया है। साथ ही जारी कारण बताओ नोटिस, बर्खास्तगी आदेश व अपीलीय व पुनरीक्षण आदेशों को रद्द कर दिया है। याची अधिवक्ता का कहना था कि आरोपी याची के खिलाफ दर्ज एफआईआर पर चले आपराधिक केस में कोर्ट ने सबूतों के अभाव में बरी कर दिया और उसी एफआईआर के आधार पर आरोपित कर विभागीय जांच में केवल पीड़ित व मित्र की गवाही पर लूट का जिम्मेदार मानते हुए सेवा से बर्खास्त कर दिया गया। मामले में कन्हैयालाल मिश्र ने घटना के पांच दिन बाद याची पर उसकी जेब से सवा चार लाख छीन लेने के आरोप में 17 दिसंबर 2016 को एफआईआर दर्ज कराई। वारदात के समय मित्र गोपाल शर्मा मौजूद था।विभागीय जांच अधिकारी ने दोनों के बयान व दर्ज एफआईआर के आधार पर याची को कारण बताओ नोटिस दी। इसके बाद याची के जवाब को संतोषजनक नहीं माना गया और उसे बर्खास्त कर दिया गया। सजा के खिलाफ अपील खारिज कर दी गई। इस पर इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई थी।याची का कहना था कि आपराधिक केस में कोर्ट ने 31 जुलाई 23 को उसे बरी कर दिया और कन्हैया लाल के खिलाफ कार्रवाई करने को कहा। इसलिए विभागीय कार्रवाई के लिए फैसले का इंतजार करना चाहिए था। सरकारी वकील ने विरोध किया कहा कि आपराधिक केस में बरी होने से विभागीय जांच में स्वतः मुक्त नहीं हो सकते। कोर्ट ने कहा कि जांच अधिकारी को कारण बताओ नोटिस का अधिकार नहीं। आरोप साबित हुए बगैर दंडित कर दिया गया। बर्खास्तगी मनमानी व सनक भरा आदेश है। यदि इसे कायम रखा गया तो न्याय की भ्रूण हत्या के समान होगा।

गौशाला का विशेष सचिव ने किया औचक निरीक्षण

व्यवस्था देख खुश हुए विशेष सचिव और अच्छा करने का निर्देश

अखंड भारत संदेश

सोरांव। शनिवार को शासन स्तर से नामित नोडल अधिकारी विशेष सचिव शेषमणि पांडे हथकरघा एवम वस्त्र उद्योग विभाग ने आदर्श गो आश्रय स्थल सोरांव व कान्हा गो आश्रय स्थल हाजीगंज का औचक निरीक्षण किया। लगभग एक घंटा निरीक्षण के दौरान वहां पर रखे गए चारा स्टोर, चूनी चोकर, केयर टेकर,चौकीदार,गौ वंशो के ठंड से बचाव, स्वास्थ्य परीक्षण,संबंधी विस्तृत निरीक्षण किया। तथा सोरांव के गौशाला में गौपालक उपस्थिति रजिस्टर संग गौपालक के कार्य भी पूछे, तथा गौशाला में उपस्थित हरा चारा (बरसेम) को भी देखकर खुश हुए। इतना ही नहीं गौ वंशो को पुष्प की माला पहनाकर व गुड़ खिलाकर आशीर्वाद भी लिए। सोरांव व हाजीगंज गौशाला साफ सफाई और व्यवस्था के लिए क्षेत्र का एक अच्छा गौशाला माना जाता है। इसीलिए अक्सर अधिकारियों और मंत्रियों का औचक निरीक्षण लगा ही रहता है। शासन स्तर से नामित विशेष सचिव शेष मणि पांडे ने सोरांव क्षेत्र के दोनो गौशाला की व्यवस्था देख करके संतुष्टि जाहिर करते हुए संबंधित ग्राम पंचायत अधिकारी व ग्राम प्रधानों की पीठ भी थपथपाई। तथा गो वंशो को ठंड से बचाव, भरण पोषण, आदि के कड़े निर्देश भी दिए। वहीं उचित देखभाल, उचित रख रखाव करने की नसीहत भी गौ पालकों को दिए। इस मौके पर मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर अनिल कुमार, उप जिलाधिकारी सोरांव डॉक्टर गणेश कनौजिया, उप पशु चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर रेवती प्रसाद, ग्राम पंचायत अधिकारी कौशल कुमार, ग्राम विकास अधिकारी मिथलेश मिश्र, सेक्टर प्रभारी पंकज गिरि एडीओ (एसटी) व सचिव मोहम्मद साकिब एवं पशुधन प्रसाद अधिकारी डॉक्टर अयोध्या प्रसाद एवं डॉ सुभाष चंद्र, सहायक सदाकांत,ग्राम प्रधान प्रेम सत्यर्थी, ग्राम प्रधान मोहम्मद शाहिद अली, सफाई कर्मचारी एवम गौपालक संग चौकीदार व पंचायत सहायक उपस्थित रहे।

मुआवजा न मिलने से नाराज किसानों ने रुकवाया रिंग रोड का काम

झूंसी। मुआवजा न मिलने से नाराज किसानों ने शनिवार को झूंसी में चल रहे रिंग रोड के काम को रुकवा दिया। किसानों का आरोप है कि अभी हम लोगों को पूरा मुआवजा भी नहीं मिला है और जमीन भी अधिक अधिग्रहित की जा रही है। काम रुकने की जानकारी मिलते ही राजस्व टीम मौके पर पहुची और किसानों को समझने का प्रयास किया। नैनी, झूंसी होते हुए सहसों तक जाने वाली रिंग रोड का काम शुरू हुए महीने भर से ऊपर हो गया है। लेकिन अभी तक किसानों को पूरा मुआवजा नहीं मिल पाया है। शनिवार को किसानों के सब्र का बांध टूट गया और दर्जनों किसान बन रहे रिंग रोड का काम रुकवाने पहुंच गए। किसानों के आक्रोश को देखते हुए रिंग रोड के काम में लगे कर्मचारियों ने काम रोक दिया। पूर्व प्रधान राजेश सिंह, राकेश पांडे, मूलचंद गुप्ता, श्याम बहादुर, जय सिंह, राहुल, राकेश का कहना था कि हम लोगों को पूरा मुआवजा नहीं मिला है और कुछ लोहा की जमीन भी अधिक अधिग्रहित की जा रही है। वही बजहा निवासी माला सिंह ने बताया कि जो हम लोगों को पुराने सर्किल रेट से मुआवजा दिया जा रहा है। जो की बेहद कम है जिसके लिए उन्होंने कोर्ट की शरण ली है। किसानों के काम रुकवाने की जानकारी पर राजस्व टीम मौके पर पहुंची और लोगों को समझा बूझकर जल्द से जल्द मुआवजा उनके खाते में भिजवाने का आश्वासन दिया और जो जमीन अधिक अधिग्रहित की गई थी उसकी नाप भी कराई। लेकिन किसान मुआवजा मिलने के बाद ही काम करने की बात पर आने हैं।

श्रद्धालुओं के साथ अच्छा बर्ताव करेंगे पुलिस के जवान

युनाइटेड भारत

प्रयागराज। 15 जनवरी से मकर संक्रांति स्नान पर्व के साथ माघ मेले की शुरूआत हो रही है। इसमें पुलिस की तैनाती की जा चुकी है। पुलिस के उच्चाधिकारियों ने श्रद्धालुओं की सुरक्षा की गारंटी लेने का संकल्प लिया है। प्रयास होगा कि मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं को कोई दिक्कत न हो। माघ मेले में देश-विदेश से आने वाले तीर्थयात्रियों को किसी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े, इसके लिए एडीजी-112 नीरा रावत और पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा ने शुक्रवार को पुलिस लाइन में संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। मेला क्षेत्र में घूमकर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा भी लिया।

पूरे भाव से करें तीर्थयात्रियों की मदद : एडीजी

बैठक में एडीजी नीरा रावत ने कहा कि विभिन्न जनपदों से आए यूपी-112 के ढफ्र कर्मी प्रयागराज पुलिस के साथ मिलकर माघ मेले को सफल बनाएं ताकि देश विदेश से आने वाले तीर्थयात्री उत्तर प्रदेश पुलिस की अच्छी यादों को अपने साथ लेकर जाएं। एडीजी-112 ने बताया कि देश के कोने कोने से आने वाले तीर्थ यात्रियों को यूपी-112 से मदद लेने में भाषा बाधा नहीं बनेगी। ऐप के माध्यम से मदद मांगने वाले की भाषा का हिंदी में अनुवाद कर के तत्काल सहायता पहुंचाई जाएगी।

श्रद्धालुओं के साथ करें अच्छा बर्ताव : पुलिस कमिश्नर

बैठक में पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा ने कहा कि हर पुलिसकर्मी अपने ड्यूटी के क्षेत्र की पूरी जानकारी रखे और अपराध के प्रति पूरी तरह सतर्क रहे। उन्होंने निर्देश दिया कि सभी पुलिसकर्मी तीर्थ यात्रियों के साथ मित्रवत व्यवहार करें ताकि किसी एक के खराब खराब व्यवहार से हम सब का सामूहिक प्रयास असफल न हो। इस मैके पर 112 के डीआईजी एसपी सिंह, पुलिस अधीक्षक दिनेश त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

नैनी में एसपीओ टीम की विशेष तैयारी माघ मेला में

आम नागरिकों व श्रद्धालुओं को अपनी सेवा प्रदान करने के लिए पूरी तरीके से तैयार हैं हम, शेख लियाकत अली

नैनी। नैनी एसपीओ टीम की विशेष तैयारी माघ मेला 2024 का आगाज होते ही विशेष पुलिस अधिकारी एसपीओ टीम के सदस्यों ने माघ मेला में पुलिस प्रशासन एवं आम नागरिकों व श्रद्धालुओं को अपनी सेवा प्रदान करने के लिए पूरी तरीके से तैयारी कर ली है। इसी सम्बन्ध में एसपीओ टीम के प्रभारी अभय राज सिंह उप प्रभारी परवेज अहमद जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली ने शनिवार को एसीपी करछना महोदय एवं नैनी कोतवाली प्रभारी यशपाल सिंह से माघ मेला में ड्यूटी करने के लिए परिचय पत्र जारी करने हेतु मुलाकात किया। मुलाकात के दौरान एसीपी करछना ने आवश्यक दिशा निर्देश एसपीओ टीम को जारी किया। माघ मेला में सेवा देने व ड्यूटी करने के लिए एसपीओ टीम की नैनी स्थित एसपीओ कार्यालय में एक विशेष बैठक बुलाई गई जिसमें ड्यूटी करने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली ने कहा की टीम के सदस्यों को मेला में आए हुए स्नानार्थियों एवं श्रद्धालुओं को सहायता पहुंचाना टीम का पहला कर्तव्य होगा। वहीं भीड़ को नियंत्रित करने के लिए प्रशासन के साथ ट्रैफिक व्यवस्था देखने के लिए विभिन्न स्थानों पर एसपीओ टीम की तैनाती की जाएगी। बैठक में कुछ महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। बैठक के दौरान प्रभारी अभज राज सिंह उप प्रभारी परवेज अहमद जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली संगठन सचिव रविन्द्र सिंह रवि मिश्रा वीरेंद्र पटेल इकरामुल्ला राम जी जायसवाल संदीप विश्वकर्मा विशाल जायसवाल राजु साहनी राकेश सोनकर रमाशंकर संजीव कुमार सुरेंद्र कुमार गुप्ता आरिफ तौसीफ खान रामजी आशीष कुमार मनीष कुमार सिंह सोनू भारतीया मयंक कुमार दिनेश कुमार सोनकर मोहम्मद फिरोज आदि सदस्यगण मौजूद रहे।

छह लाख रिक्त पदों को भरने के लिए युवाओं ने प्रदर्शन कर बुलंद की आवाज

प्रयागराज। युवाओं ने पत्थर गिरजाघर पर प्रदर्शन कर हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी और प्रदेश में छह लाख रिक्त पदों को तत्काल भरने को लेकर आवाज बुलंद की। 32 दिनों भीषण ठंड में अनवरत जारी धरना के क्रम में शुक्रवार को युवा दिवस के मौके पर युवाओं के युवा मंच के बैनर तले घंटों चले प्रदर्शन व सभा के उपरांत मुख्यमंत्री को संबोधित पत्रक एसीएम द्वितीय तपन मिश्रा को सौंपा गया।युवाओं ने वाजिब सवालों को हल करने को लेकर सुनवाई न होने से प्रशासन से नाराजगी जताई और बेमियादी धरना जारी रखने का ऐलान किया। एमसीएम द्वितीय ने मुख्यमंत्री को संबोधित पत्रक को शासन को प्रेषित करने और युवाओं की मांगों पर शासन के निर्णय से जल्द अवगत कराने का आश्वासन दिया गया।हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी और छह लाख रिक्त पदों को तत्काल भरने के अलावा प्रमुख रूप से शिक्षा सेवा आयोग का 30 जनवरी तक विधिवत गठन, टीजीटी पीजीटी विज्ञापन में 25 हजार रिक्त सीटें शामिल करने, एलटी व प्रवक्ता जीआईसी, प्राथमिक शिक्षक भर्ती, उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 46 हजार बीपीएड शिक्षकों के लिए नियमित भर्ती, माध्यमिक विद्यालयों में योगा के पांच हजार पदों के प्रस्ताव पर अमल करने, समूह 'ग' व तकनीकी संवर्ग समेत अन्य विभागों में रिक्त पदों को तत्काल विज्ञापित करने, सभी भर्तियों में न्यूनतम तीन साल उम्र सीमा में छूट, सभी लंबित भर्तियों को चुनाव आचार संहिता लागू होने से पहले पूरा करने जैसे सवालों को हल करने की मांग की गई। वक्ताओं ने कहा कि प्रदेश सरकार के सरकारी नौकरी व रोजगार सृजन के दावे सच्चाई से परे हैं। प्रदेश से वास्तव में पूंजी और श्रम दोनों का पलायन तेजी से बढ़ा है जो कि सरकार के दावों की असलियत को उजागर करने के लिए पर्याप्त है। प्रस्ताव लेकर रोजगार समेत ज्वलंत मुद्दों को लेकर बने एजेंडा यूपी का समर्थन किया गया और 17 जनवरी को लखनऊ में आयोजित सम्मेलन में युवा प्रतिनिधियों के शामिल होने का भी निर्णय लिया गया। इस मौके पर संयुक्त युवा मोर्चा केंद्रीय टीम सदस्य राजेश सचान, युवा मंच अध्यक्ष अनिल सिंह, पीयूसीएल के मनीष सिन्हा, बीपीएड मोर्चा के अंशुमान सिंह, एलके चौधरी, अर्जुन प्रसाद, अजय गौतम, सुधीर कुमार, पुष्प राज सिंह, प्रदीप चौधरी, जंग बहादुर पटेल, विजय मोहन पाल, राम सागर चौधरी, रूपा देवी, सुनीता प्रजापति, अनिल कुमार सिंह, बृजेश पटेल, रमेश यादव, निशा कुशवाहा, इमरान अंसारी, राजेश यादव, हरिश्चंद्र सैनी समेत सैकड़ों युवा शामिल रहे।

दो शातिर अभियुक्तों को तमंचा और कारतूस के साथ किया गिरफ्तार

झूंसी। इलाकाई पुलिस ने पिछले कई महीने से आतंक का पर्याय बने दो शातिर अ?भियुक्तों को शनिवार की सुबह गिरफ्तार कर लिया। उनके पास से तमंचा और कारतूस भी बरामद किया गया है। थानाध्यक्ष उपेंद्र प्रताप सिंह को मुखबिर से सूचना मिली थी कि वांछित अभियुक्त राघवेंद्र उर्फ बऊ यादव पुत्र जबर सिंह यादव, निवासी नारायणदास का पूरा थाना झूंसी और शुभम आदित्य उर्फ अभिमन्यु पुत्र छोटेलाल निवासी आवास विकास कालोनी योजना दो कनिहार रोड के पास मौजूद हैं। इस पर एसओ उपेंद्र, एसआई संतोष कुमार सिंह, अजीत यादव,विपिन कुमार यादव और कांस्टेबल अभिषेक सिंह के साथ कनिहार रोड पर पहुंचे। पुलिस टीम को देखते ही दोनों अ??भियुक्त भागने लगे। इस पर पुलिस ने टीम ने थोड़ी सी मशक्कत के बाद दोनों अभियुक्तों को दबोच लिया। इनके पास से तमंचा और कारतूस बरामद किया गया। दोनों अ?भियुक्तों ने 24 जुलाई 2023 को लीलापुर रोड ?स्थित एक रेस्टोरेंट में घुसकर मारपीट करने के साथ ही अवैध असहले से फायरिंग भी की थी। इससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई थी।

सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं चिकित्सा शिक्षा माघ मेला का किया स्थलीय निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शुक्रवार को पार्थ सारथी सेन शर्मा, प्रमुख सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं चिकित्सा शिक्षा उ०प्र० शासन द्वारा माघ मेला 2023-24 का स्थलीय निरीक्षण किया गया। जिसके क्रम में सर्वप्रथम प्रमुख सचिव ने मेलाधिकारी एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी, प्रयागराज के साथ गंगा पूजन किया एवं संगम क्षेत्र का भ्रमण किया, तत्पश्चात बड़े हनुमान जी महाराज का दर्शन एवं पूजन किया। पूजन के उपरान्त प्रमुख सचिव महोदय ने माघ मेला में स्थित त्रिवेणी अस्पताल का उदघाटन किया। अस्पताल के चिकित्सको के साथ विचार-विमर्श करते हुये उन्हें महत्वपूर्ण सुझाव दिया गया साथ ही चिकित्सालय में मरीजो के लिये मेला क्षेत्र के आस-पास विभिन्न चिकित्सकीय सेवायें जिन अस्पतालों में उपलब्ध हो उसकी सूचना डिस्पले बोर्ड पर लगाने के निर्देश दिये। प्रमुख सचिव महोदय ने अस्पताल की तैयारियों के लिये संतोष व्यक्त किया। इसके उपरान्त संगम नोज पर स्थित प्राथमिक उपचार केन्द्र का निरीक्षण किया एवं वहां पर लगे आई.ई.सी. के पोस्टर तथा बैनर देख कर प्रसन्नता व्यक्त की, साथ ही यह भी निर्देश दिये कि मेला क्षेत्र के सभी प्राथमिक उपचार केन्द्रों को आयुष्मान भारत के हेल्थ एण्ड वेलनेस सेण्टर के मॉडल के रूप में स्थापित किया जाये और वह सारी सुविधाएँ दी जाये जो हेल्थ एण्ड वेलनेस सेण्टर पर दी जाती है, जिससे जनमानस में हेल्थ एण्ड वेलनेस सेण्टर के प्रति रूझान बढ़े। संगम नोज पर लगे शौचालयों का निरीक्षण करते हुये संतोष व्यक्त किया। तत्पश्चात प्रमुख सचिव महोदय ने आई.सी.सी.सी. के सभा कक्ष में माघ मेला एवं कुम्भ मेला के कार्यो के प्रगति की समीक्षा बैठक की। जिसमें सभी कार्यदायी संस्था को कड़े निर्देश दिये कि सभी कार्य ससमय एवं गुणवत्ता पूर्वक पूर्ण होने चाहिए। साथ ही मेलाधिकारी, कुम्भ मेला को यह सुझाव दिया कि समस्त कार्यों के प्रगति की समीक्षा कार्यदायी संस्थाओं के साथ की जाये तथा सम्पूर्ण मेला क्षेत्र में आई.ई.सी. के माध्यम से लोगो को जागरूक किया जाये। उक्त बैठक में मेलाधिकारी कुम्भ मेला, प्रधानाचार्य मेडिकल कॉलेज, अपर निदेशक, मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं समस्त जिला चिकित्सालयों के प्रमुख अधीक्षकों ने प्रतिभाग किया।

मुख्यमंत्री सहभागिता योजना का किसान ले रहे फायदा, हो रहे मालामाल

अधिकतम चार गाय को सुपुर्दगी में लेने का है प्रावधान

सोरांव। किसानों की आय दुगनी करने के लिए सरकार किसानों को तरह-तरह की योजनाएं दे रही है। चाहे किसान सम्मान निधि हो,किसान समृद्धि योजना आदि का लाभ किसानों को मिलने के साथ ही साथ मुख्यमंत्री सहभागिता योजना अंतर्गत किसानों को एक गाय गौशाला से सुपुर्दगी में लेने पर गौपालक को पचास रुपए प्रतिदिन यानी पंद्रह सौ रुपए प्रति माह प्रोत्साहन के रूप में देने का प्रावधान है। जिसमे किसान अधिकतम चार गाय सुपुर्दगी में लेकर अधिकतम छः हजार रुपए का लाभ ले सकते है। इस योजना का लाभ के लिए किसानों को आधार कार्ड, बैंक की पासबुक के साथ ही साथ एक शपथ पत्र राजकीय पशु चिकित्सालय सोरांव के कार्यालय में जमा करना होगा। संपूर्ण प्रकिया पूर्ण होने के बाद किसानों को सुपुर्दगी में गाय दे दी जाएगी। सुपुर्दगी में ली गई गाय को सही से देखभाल करने की जिम्मेदारी गौपालक (किसान) की होगी। पशु चिकित्साधिकारी डॉक्टर रेवती प्रसाद ने बताया कि गाय को सुपुर्दगी में लेने से दूध दही के साथ ही साथ किसानों को बहुत फायदा भी होता है। जिस भी किसान को मुख्यमंत्री सहभागिता योजना का लाभ लेना हो ऐसे किसान पशु अस्पताल सोरांव में संपर्क कर फॉर्म प्राप्त कर लें। उक्त जानकारी पशु चिकित्सा अधिकारी सोरांव डॉक्टर रेवती प्रसाद ने दी है।

लाला लक्ष्मी नारायण डिग्री कालेज को बनाया गया दस महाविद्यालयों का परीक्षा केंद्र

मेजा। प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा आयोजित विषम सेमेस्टर एल एल बी एवं बी एड की परीक्षाएं लाला लक्ष्मी नारायण डिग्री कालेज सिरसा में दिनांक 6 जनवरी से संचालित हो रही हैं जिसमें एलएलबीके 7 तथा बीएडके 4 महाविद्यालयों का परीक्षा केन्द्र बनाया गया है जिसमें श्रीधर सिंह यादव लॉ कालेज, गोसौरा कला,मोती लाल सिंह विधि महाविद्यालय, प्रयाग सिटिजन महाविद्यालय, नैनी, बाबा लाल प्रताप सिंह महाविद्यालय, मुंगारी, मंगला देवी स्मारक विधि महाविद्यालय नैनी कृष्णा एजूकेशन विधि महाविद्यालय संत सिंह लॉ कालेज भुस्का मंगला देवी स्मारक महाविद्यालय नैनी, टी०एन० सिंह एजूकेशन महाविद्यालय, बासुदेव सिंह महिला महाविद्यालय, तरवाई शामिल हैं उल्लेखनीय है कि शनिवार को प्रथम पॉली में एलएलबी प्रथम सेमेस्टर कुल पंजीकृत 789 परीक्षार्थी थे जिसमें 657 उपस्थित और 132 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे जबकि सायंकाल में एलएलबी पंचम सेमेस्टर में कुल 671 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं। बीएड तृतीय सेमेस्टर के 23 परीक्षार्थियों की परीक्षा होनी है। महाविद्यालय के प्राचार्य/ वरिष्ठ केन्द्राध्यक्ष प्रो० महेन्द्र कुमार जायसवाल ने बताया कि उक्त परीक्षाएं विश्वविद्यालय के मानक के अनुसार नकलविहीन पारदर्शी एवं सुचितापूर्ण तरीके से कराई जा रही है।

अनुशासन में शांति पूर्ण ढंग से होगी नकल विहीन परीक्षा : महेंद्र

आरएसएस ने जिले के विभिन्न क्षेत्रों में वितरित किया पूजित अक्षत

राम भक्तों से राष्ट्रीय उत्सव मनाने की अपील

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा गृह संपर्क अभियान के अंतर्गत पूजित अक्षत वितरण अभियान लगातार गतिमान है। इस क्रम में आज जिले के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ नगर के सगरा, मीरा भवन आदि क्षेत्रों में उत्साहित श्री राम भक्तों के समूह द्वारा पूजित अक्षत, चित्र वितरित किया गया।

स्थान-स्थान पर लोग भक्ति भाव से संकीर्तन करते रहे। चारों ओर उत्साह और प्रसन्नता का वातावरण व्याप्त है। 15 जनवरी तक पूजित अक्षत वितरण अभियान चलेगा। इसी क्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतापगढ़ के बौद्धिक शिक्षण प्रमुख डॉ सौरभ पांडेय ने विभिन्न मंदिरों पर होने

लोगों को पूजित अक्षत वितरित करते आरएसएस के पदाधिकारी।

वाले उत्सवों को लेकर स्थानीय लोगों के साथ योजना को व्यापक स्वरूप प्रदान करने हेतु बैठक मे विस्तार से चर्चा की। आने वाले 16 जनवरी से 22 जनवरी के मध्य प्रत्येक मोहल्ले, गांव में प्रभात फेरी के साथ-साथ सभी मंदिरों पर 22 जनवरी को हिंदू समाज के एकत्रीकरण और प्राण प्रतिष्ठा समारोह को एक साथ देखने की योजना बनाई गई। इस अवसर पर अभियान के सह संयोजक डॉ रंगनाथ शुक्ल, भाजपा जिला मंत्री राम जी मिश्र, सभासद सुनील दुबे, सभासद विनोद रजक, नितेश खंडेलवाल, दिनेश अग्रहरि, भाजपा जिला मंत्री यशोदा शुक्ला, विनय शुक्ल, रेनू पांडेय, विनोद द्विवेदी, संजय तिवारी, युवा मोर्चा के महामंत्री सुजीत पांडेय, अश्वनी पांडेय, सुशील, जयप्रकाश आदि उपस्थित रहे।

नगर के मोहल्ले में बांटा गया पूजित अक्षत

अखंड भारत संदेश

लोगों को अक्षत बांटती आयोजिका सारिका श्रीवास्तव।

प्रतापगढ़। अयोध्या में राम जन्म भूमि पर 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लिये घर-घर अक्षत बांटकर उन्हें 22 जनवरी को अपने घरों में राम ज्योति जलाने का आग्रह किया जा रहा है। आज रेलवे स्टेशन, सीताराम की गली, रेलवे स्टेशन के पुराने रिवरडेल स्कूल की गली में कार्यक्रम की आयोजिका सारिका श्रीवास्तव के नेतृत्व में अक्षत वितरण का कार्यक्रम हुआ जिसमें सारिका श्रीवास्तव ने कहा कि कई पीढ़ियों के बाद अयोध्या में भगवान की राम जन्म भूमि की प्राण प्रतिष्ठा हो रही है। इससे देश में उत्साह व खुशी है। उन्होंने 22 जनवरी को अपने-अपने घरों में राम ज्योति जलाने की अपील की। इस अवसर पर आशा मिश्रा, मंजीत कौर, नीतू सिंह, रेनुका श्रीवास्तव, नीरज सिंह सहित अनेक महिलाएं व पुरुष शामिल रहे।

थाना समाधान दिवस पर डीएम ने दो लेखपालों को लगायी कड़ी फटकार

थाना समाधान दिवस पर देल्हूपुर थाना में डीएम-एसपी ने सुनी समस्याएं

अखंड भारत संदेश

थाना दिवस में समस्याएं सुनते जिलाधिकारी संजीव रंजन।

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन एवं पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने थाना समाधान दिवस के अवसर पर थाना देल्हूपुर में पहुॅचकर दूर-दराज से आये हुये फरियादियों की शिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु निर्देश दिये।

थाना समाधान दिवस में कुल 06 राजस्व विभाग से सम्बन्धित शिकायतें प्राप्त हुई। प्राप्त शिकायतों के निस्तारण के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि पुलिस विभाग व राजस्व विभाग की संयुक्त टीम मौके पर जाकर बिना किसी पक्षपात के सम्बन्धित शिकायतों का जल्द से जल्द निस्तारण करायें। थाना समाधान दिवस के अवसर पर देल्हूपुर क्षेत्र के लेखपाल रमेश से उसके बस्ते के सम्बन्ध में जानकारी ली तो वह मौके पर बस्ता नही लाया था जिस पर जिलाधिकारी ने लेखपाल को कड़ी फटकार लगाये और कहा कि समस्त अभिलेख साथ में रखें। सहिजनपुर (मानधाता) के लेखपाल विकास के बस्ते में रिकार्ड पूरा न पाये जाने पर लेखपाल को जिलाधिकारी ने कड़ी फटकार लगायी और निर्देशित किया कि नक्सा, खसरा आदि रिकार्ड साथ में रखें। जिलाधिकारी ने लेखपालों को निर्देशित किया कि जिन सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जे किये गये है उसे खाली कराया जाये। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने कहा कि पुलिस थाने में आये हुये फरियादियों से सम्मानपूर्वक व्यवहार करें, उनकी शिकायतों को सावधानीपूर्वक सुने तथा जल्द से जल्द उनकी शिकायतों का निस्तारण करायें।

विकास की गंगा का सामना दिशाहीन विपक्ष नहीं कर पा रहाः हरिप्रताप

हादीहाल व चिलबिला में विकसित भारत संकल्प यात्रा का हुआ आयोजन

नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह का स्वागत करते लोग।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका द्वारा शहर के हादीहाल में और चिलबिला में विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्र व राज्य के जनकल्याण योजनाओं पर नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने विस्तृत रुप से लोगों को बताया।

नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने कहा कि सरकार की उज्जवला योजना, आयुष्मान योजना, धनजन योजना, किसानों को हर माह दो हजार की सहायता के अलावा डीएम स्वनिधि योजना का भरपूर लाभ जनता को मिल रहा है। पहले हादीहाल में फिर चिलबिला में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में सरकार की इन योजनाओं पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यही कारण है कि जनता का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भरपूर समर्थन मिल रहा है। दोनों कार्यक्रमों का संचालन पूर्व सभासद ज्ञानेश मिश्रा ने किया। इस अवसर पर नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी राम अचल कुरील, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, सभासद दीपक उमरवैश्य, सभासद पति पवन जायसवाल सहित बड़ी संख्या में लोग इस विकसित भारत संकल्प यात्रा के गवाही बने। सभा में अधिकांश वक्ताओं ने प्रधानमंत्री मोदी की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने देश में बिना किसी भेदभाव के विकास की गंगा बहायी है जिसका सामना दिशाहीन विपक्ष नहीं कर पा रहा है।

समाजसेवी श्रद्धालुओं को मुफ्त में कराएंगे गंगा स्नान

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। श्रद्धा और भक्ति का भाव हो तो बड़े से बड़े कार्य भी आसानी से किया जा सकता है, बस उसके लिए मजबूत इरादा होना आवश्यक है। पट्टी तहसील क्षेत्र के समाज सेवी हल्लू रामसुंदर यादव अपने इसी सेवा भाव के लिए जाने जाते हैं। वह गरीबों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। मकर संक्रांति के अवसर पर श्रद्धालुओं के गंगा स्नान के लिए बस सेवा की व्यवस्था किए हैं, जहां से लोग आसानी से गंगा स्नान कर सकते हैं। समाजसेवी हल्लू रामसुंदर यादव ने बताया कि 15 जनवरी को सुबह छह बजे ग्राम सभा भिटार से रामदुलार यादव तथा बींद गांव से संदीप यादव के यहां से बस प्रस्थान करेगी और जो भी श्रद्धालु गंगा स्नान करना चाहते हैं वह बिना संकोच भाव से मुफ्त सेवा का लाभ उठा सकते हैं। हल्लू राम सुंदर यादव के इस पुनीत कार्य की सभी लोग भूरी-भूरी प्रशंसा कर रहे हैं।

राम की खुशी में शरीक होंगे रहीम के वंशज

मजहब की टूटी दीवारें एक साथ जलाएंगे दीप, देश का कोना-कोना बन गया अयोध्या

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। समूचा देश राम ही राम के रंग में राममय हो चला है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि देश में एक अयोध्या नही बल्कि देश का कोना-कोना अयोध्या बन गया है। मजहब की दीवारे टूटती नजर आ रही है। राम व रहीम के वंशज दोनो मिलकर श्रीराम महोत्सव की तैयारी में तन-मन से लगे दिखाई दे रहे है।

गांव हो या शहर, हिंदू हो या मुसलमान सभी लोग श्रीराम महोत्सव की तैयारियों में बिना भेदभाव के लगे है।रामलला के आगमन की घड़ी के इंतजार में बुजुर्ग, नवयुवक ही नही बल्कि देश का बच्चा-बच्चा भी उत्सुक दिखाई दे रहा है। गांव की गलियों में भी बस एक ही धुन आ रहे है मेरे राम, दशरथ के प्यारे राम, लोगो के मुंह से निकल रही है। जैसे चारों तरफ राम ही राम का आगमन हो रहा है देश में एक ही अयोध्या नही देश का कोना-कोना इस समय अयोध्या बन गया है इस अद्भुत घड़ी का का इंतजार हिंदुओं को जितना है, उतने ही बेसब्री मुसलमानो को भी है। मानो सभी अपने गावों को अयोध्या की तरह सजाने की तैयारी में लगा हुआ है। क्षेत्र के डा० मो० शमीम ने बताया कि राम किसी एक के नही हो सकते वह सबके हैं, बस हम सभी धर्म के लोग उन्हें अलग-अलग नाम से पुकारते है। वहीं कौशांबी जिले के डा०शब्बीर से हुई मुलाकात में बात की तो उन्होंने कहा कि हमारे देश में कई मजहब के लोग रहते है, सभी अपने धर्म को मानते हैं।

जब हम सभी एक साथ रहते है, इसी देश का अन्न-जल ग्रहण करते है, तो हम एक दूसरे के सुख-दुख मे क्यों शरीक नही हो सकते? रास्ते भले ही अनेक हो लेकिन सभी धर्म के लोगो की मंजिले एक ही है, तो भेद-भाव किस बात का, हम सभी को इस पावन पर्व को धूम-धाम से मनाना चाहिए।

परेशान ग्रामीणों ने छुटटा मवेशियों को किया कैद

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। बेसहारा मवेशियों से परेशान ग्रामीणों ने शुक्रवार को दोपहर सैकडो की संख्या में गांव में मौजूद मवेशियो को विद्युत उपकेन्द्र परिसर में ले जाकर कैद कर दिया। विद्युतकर्मियों के बहुत समझाने के बाद ग्रामीणों ने वहां से मवेशियों को ले जाकर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र परिसर में कैद कर दिया। ग्रामीणों ने मवेशियों को गौआश्रय केन्द्र भेजवाये जाने की मांग उठायी है। विकासखण्ड रामपुर संग्रामगढ़ अन्तर्गत रामपुर बावली, पूरे जोधा, टोडरपुर, नेकनामपुर गांव के ग्रामीण बेसहारा मवेशियों से परेशान है। दिन रात बेसहारा मवेशी उनके खेतों में मौजूद फसल को नष्ट कर रहे हैं।

तमाम शिकायतों के बाद भी सुनवाई न होने पर शनिवार को दोपहर ग्रामीणों ने सैकड़ो की संख्या में गांव में विचरण कर रहे मवेशियों को इकटठा कर उन्हें विद्युत उपकेन्द्र रामपुर बावली परिसर में ले जाकर कैद कर दिया। इससे अनहोनी की आशंका में विद्युतकर्मी परेशान हो उठे। विद्युतकर्मियों के काफी समझाने के बाद ग्रामीणों ने मवेशियों को वहां से हटाकर करीब सौ मीटर दूर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पूरे जोधा के परिसर में ले जाकर कैद कर दिया है। ग्रामीणों का कहना है कि मवेशियों के स्वास्थ्य केंद्र में कैद होने की सूचना ब्लाक में दी गयी है। इन्हें शीघ्र ही गौआश्रय केन्द्र न भेजवाये जाने पर ग्रामीण विरोध प्रदर्शन के लिए भी बाध्य होंगे। बीडीओ अश्विनी कुमार सोनकर का कहना है कि मामला संज्ञान में नही है। जानकारी करके मवेशियों को गौआश्रय केंद्र भेजवाये जाने की व्यवस्था की जाएगी।

खेलों को बढ़ावा दे रही है डबल इंजन की सरकारः राजेंद्र मौर्य

जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम में हुई जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता

अखंड भारत संदेश

विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य।

प्रतापगढ़। युवा कल्याण प्रादेशिक विकास दल विभाग द्वारा दो दिवसीय जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन जिला युवा कल्याण अधिकारी के० के० सिंह के निदेर्शानुसार जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम में शुभारंभ हुआ जिसका उद्घाटन सदर विधायक राजेंद्र मौर्य ने किया उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए बहुत काम कर रही है।

वह खिलाड़ियों के बेहतर भविष्य के लिए प्रत्येक सरकारी विभाग में खेल कोटा से, नौकरी देने को बढ़ावा दे रही है, जिससे युवा एक बेहतर भविष्य बना सकेगा। समस्त ब्लॉकों में ब्लॉक स्तरीय कबड्डी, वालीबाल, दौड़, ऊंची कूद, लंबी कूद, कुश्ती, जैसी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। जो प्रतिभागी विजेता उपविजेता रहे उनके द्वारा आज जिला स्तर पर प्रतिभाग किया गया जिसमें 800 मी० दौड प्रतियोगिता में बालिका वर्ग प्रथम दीक्षा यादव, द्वितीय संजना सरोज, तृतीय खुशी मिश्रा रही। बालक वर्ग में प्रथम शिवम सरोज, द्वितीय नकुल सरोज तृतीय अंकित रहे, वॉलीबॉल में प्रथम दिवस पर कई टीमों में प्रतिभाग किया।

लंबी कूद में सब जूनियर वर्ग में नंदिनी पटेल प्रथम, खुशी निर्मल, तीसरे पर, प्रियंका सरोज दितीय रही। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला युवा कल्याण अधिकारी केके सिंह ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन से ग्रामीण खिलाड़ियों को नई ऊर्जा मिलेगी जिससे वह देश प्रदेश में अपना नाम रोशन कर सकते हैं कार्यक्रम में जिला क्रीडाधिकारी पूनम लता राज ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर मौजूद खेलों के महत्व को बताया, कार्यक्रम का संयोजन युवा कल्याण विभाग के लेखाकार आशुतोष उपाध्याय ने किया कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी सुमित पाल ने किया। इस दौरान नेहरू युवा केंद्र के प्रशिक्षक विश्वजीत सिंह, योगा फेडरेशन के सचिव मनजीत सिंह, कुश्ती के कोच जय प्रताप सिंह, विनोद यादव, राधेश्याम तिवारी, क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी अविनाश मल, अभिनव शुक्ला, सुमित सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

बेल्हा-हिन्दी कविता के प्रमुख स्वर का लोकार्पण 14 को

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश द्वारा साहित्यकार डॉ. दयाराम मौर्य रत्न द्वारा प्रणीत काव्य कृति बेल्हा हिन्दी कविता के प्रमुख स्वर का लोकार्पण एंजिल्स इंटर कालेज (नगर) प्रतापगढ़ में 14 जनवरी 2024 दिन रविवार को पूर्वाह्न 11 बजे से होगा। कृति में सम्मिलित सभी रचनाकारों को पुस्तकें भेंट की जाएंगी। गौरतलब है कि कृति में 20वीं सदी से 21वीं सदी के आज तक के 60 कवियों की रचनाएं और समग्र समीक्षा प्रकाशित है। संपादन कार्य में साहित्यकार डॉ. संगम लाल त्रिपाठी भंवर, डॉ. शाहिदा खान व डॉ. श्याम शंकर शुक्ल श्याम सहयोग दिया है। यह जानकारी डॉ. दयाराम मौर्य रत्न ने सृजना कुटीर अजीत नगर में आयोजित एक बैठक में दी है।

डीएलएड परीक्षाः तीन पाली में हुई चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षा, 84 परीक्षार्थियों ने छोड़ा मैदान

अखंड भारत संदेश

परीक्षा कक्ष का निरीक्षण करती डायट की टीम।

प्रतापगढ़। जिले के चार कालेजों में शनिवार को डीएलएड के चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षाएं हुईं। इनमें कुल 84 परीक्षार्थियों अनुपस्थित रहे। डीआईओएस सरदार सिंह के साथ ही डाइट के परीक्षा प्रभारी जितेंद्र यादव ने परीक्षा केदो का निरीक्षण किया।

शनिवार को पहली पाली में 10 से 11 बजे तक हिंदी, दूसरी पाली में 11.30 से 12.30 तक अंग्रेजी तथा तीसरी पाली में दो से चार बजे तक शांति शिक्षा एवं सनातन विकास की परीक्षा सम्पन्न हुई। राजकीय इंटर कालेज के प्रधनाचार्य कुलश्रेष्ठ तिवारी के अनुसार तीनो पालियों में कुल 23 प्रशिक्षु अनुपस्थित रहे।

राजकीय बालिका इंटर कालेज की प्रधानाचार्य गरिमा श्रीवास्तव ने बताया कि 30 प्रशिक्षु अनुपस्थित रहे। केपी कालेज के प्रधानाचार्य आदित्य प्रताप सिंह के अनुसार तीन प्रशिक्षु अनुपस्थित रहे। पीबी इंटर कालेज के प्रधानाचार्य डा.अनूप सिंह के अनुसार 28 प्रशिक्षु अनुपस्थित रहे। राजकीय बालिका इंटर कालेज सहित अन्य केंद्रों पर परीक्षा के पूर्व प्रशिक्षुओं की प्रवेश पत्रों की जांच की गई। डायट के उप शिक्षा निदेशक अशोक कुमार सिंह ने बताया कि परीक्षाओं को सुचारु रूप से संचालित कराने को लेकर डीआइओएस सरदार सिंह व डायट की टीम ने निरीक्षण किया।

ग्राम पंचायत अंधरीपुर में पहुंची विकसित भारत मोदी सरकार की गारंटी वैन

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। संसदीय क्षेत्र कौशांबी के विकास खंड कालाकांकर के ग्राम पंचायत अंधरीपुर में हमारा संकल्प विकसित भारत मोदी सरकार की गारंटी वैन शनिवार की दोपहर पंहुचने पर ग्रामीणो ने भव्य स्वागत किया जिसमें मुख्य अतिथि लोकसभा कौशांबी के सांसद विनोद सोनकर के बड़े भाई संतोष सोनकर का ग्राम प्रधान प्रतिनिधि सुभाष पटेल ने फूल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। साथ में सहायक विकास खंड अधिकारी पंचायत कालाकांकर संतोष कुमार शुक्ला, ग्राम पंचायत सचिव रामप्रताप यादव, मंदीप कुमार, व ब्लॉक के समस्त कर्मचारी गण,सी एच सी कालाकांकर अधीक्षक मनोज वर्मा व समस्त स्टाफ कार्यक्रम स्थल पर मौजूद रहे जिसमे पीएम किसान सम्माननिधि, आयुष्मान कार्ड, शौचालय, आवास, बिजली, पानी की व्यवस्थाओं के बारे में कार्यक्रम स्थल पर मौजूद लोगों से जाना और वंचित लोगों को चिन्हित कर शीघ्र लाभ पहुंचाने के लिए भरोसा दिलाया और सभी योजनाओं को लाभ पहुंचाने का संकल्प लिया। इस मौके पर भाजपा कार्यकर्ता, मोहित मिश्रा, शुभम सोनकर, अनुज शुक्ला तारिक फारूकी कक्कू अग्रहरी व समस्त अंधरीपुर ग्रामवासी मौजूद रहे। सांसद प्रतिनिधि संतोष सोनकर व मौके पर मौजूद सभी अधिकारियों के द्वारा बताई गई सभी बातों को सुनकर ग्रामीणों में काफी उत्साह देखने को मिला इस मौके पर डॉ सुखराम पटेल, डब्लू, सुनील पांडेय, ज्ञानचंद आदि लोग मौजूद रहे।

नहीं रहे सामाजिक नेता राम मनोहर, शोक की लहर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भयहरण नाथ धाम क्षेत्र के कटरा गुलाब सिंह नगर पंचायत में सराय देव राय वार्ड के निवासी सुप्रसिद्ध सामाजिक नेता मनोहर लाल बाघ जी का आज निधन हो गया। शोक की यह लहर क्षेत्र में सूचना पहुचते ही फैली गई। सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा की स्मृति शेष राम मनोहर बाघ का निधन क्षेत्र व समाज के लिए अपूर्णनीय क्षति है। इस दौरान श्रद्धांजलि देने वालो में विश्वनाथगंज विधायक जीत लाल पटेल, रानीगंज विधायक डा0 आर के वर्मा, नगर पंचायत अध्यक्ष अशोक यादव मुन्ना, नेहरू युवा केंद्र संगठन के पूर्व राष्ट्रीय निदेशक डॉ चंद्र शेखर प्राण, अमर जनता इंटर कालेज के प्रबन्धक भैरव प्रताप सिंह, शिक्षक नेता विनोद सिंह, व्यापार मण्डल के अध्यक्ष, डा अमर बहादुर सिंह, सामाजिक नेता लालजी सिंह, डा0 अशोक अग्रहरी, वरिष्ठ पत्रकार पी बी सिंह, मतेन्द्र कीर्ति, हरकेश बहादुर सिंह व अजय अग्रहरी तथा सभासद सराय देव राय मोती लाल चैधरी सहित समस्त सभासदो ने दुख व्यक्त किया।

पुलिस की मौजूदगी में महिला के शव का हुआ अंतिम संस्कार

जाम लगाने व पथराव करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की तैयारी में पुलिस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कार की टक्कर से दुर्घटना में मृत हुई महिला का शव पीएम के बाद शुक्रवार की देर शाम घर लाया गया तो कोहराम मच गया। अगले दिन शनिवार को सुबह भारी पुलिस फोर्स की मौजूदगी में परिजनों ने गांव स्थित अपने खेत में शव को दफन किया। वहीं घटना के बाद से जलेसरगंज में तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है। एहतियातन जलेसरगंज इलाके में भारी संख्या मे पुलिस व पीएसी की तैनाती अभी भी बनी हुई है। वही महिला के शव का अंतिम संस्कार होने के बाद पुलिस अब जाम लगाने वालो व पत्थरबाजी करने वालों के खिलाफ कडी कार्रवाई करने के मूड में नजर आ रही है।

कोतवाली के कटरा दुग्धा निवासी रामसमुझ की पत्नी पैंसठ वषीर्या कृपाला की गुरूवार को कार दुर्घटना में मौत हो गयी थी। इससे आक्रोशित परिजनों व ग्रामीणों ने जलेसरगंज हीरागंज मार्ग पर जाम लगा दिया था। जाम समाप्त न होने पर रात में वहां पहुंचे सीओ रामसूरत सोनकर ने ग्रामीणों को काफी समझाया बुझाया लेकिन ग्रामीणों ने सीओ की बात अनसुनी कर दी। सूत्रों की मानें तो सीओ के पुलिसिया अंदाज में ग्रामीणों पर धौंस जमाने से मामला बिगड गया और ग्रामीण पत्थर चलाने लगे थे। जिसमे सीओ समेत उनके हमराही सिपाहियों को भी मामूली चोटें आयी थी। मौके पर एएसपी पश्चिमी संजय राय व पांच थानों की फोर्स पहुंचने के बाद हालात नियंत्रण में हो सके थे। इधर मृतका का शव गांव के बाग मे ही परिवार के लोगों ने सुबह करीब साढ़े ग्यारह बजे दफन कर दिया। मृतका का शव दफन होने के बाद राहत में दिखी पुलिस अब जाम लगाने वाले व पत्थरबाजी करने वालों के खिलाफ कडी कार्रवाई करने की तैयारी में दिख रही है। कोतवाल अवन दीक्षित का कहना है कि मामले मे मृतका के बेटे नोखेलाल की तहरीर पर अज्ञात कार चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज है। मृतका के शव का शांतिपूर्ण अंतिम संस्कार हो गया है। जाम लगाने वालों व पत्थर चलाने वालों के खिलाफ कडी कार्रवाई की जाएगी।

कौशांबी लोकसभा सीट से वाचस्पति का नाम आते ही सियासी गलियारे में मचा हड़कंप

अखंड भारत संदेश

भाजपा से कौशाम्बी सीट से टिकट मांगने वाले संभावित लोकसभा प्रत्याशियों में मची खलबली

वाचस्पति और मधुपति का नाम सुनते ही कपकपाती ठंड में भी लोकसभा कौशांबी सीट से भाजपा के बैनर तले दावेदारी करने वाले तमाम नेताओं को रात में पसीने आने लगे हैं

कौशाम्बी। लोकसभा सीट कौशाम्बी से दो बार से लगातार विनोद सोनकर भाजपा के बैनर तले सांसद चुने जाते रहे लेकिन अपने कठोर वचन के चलते जनता के बीच उनकी पकड़ कमजोर होती दिखाई पड़ रही है यह बात पार्टी हाई कमान तक भी पहुंच चुकी है लोगों को धमकी देकर दबाव बनाकर प्रताड़ित करके लोगों पर शासन करने की नीति के चलते आम जनता अब इनको पसंद नहीं कर रही है जिससे एन वक्त पर पार्टी में टिकट बदल जाने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है इस बार के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी से संभावित प्रत्याशियों की लंबी सूची दिखाई पड़ रही है पार्टी भी जिताऊ और टिकाऊ प्रत्याशी को टिकट देने के प्रयास में लगी है जिसमें वाचस्पति खरे उतरते दिखाई पड़ रहे हैं राजनीति में बड़ी पकड़ के बाद वाचस्पति कौशांबी के जनप्रिय नेता माने जाते हैं वर्तमान सांसद विनोद सोनकर जहां भाजपा से टिकट के प्रबल दावेदार है वहीं पूर्व विधायक लाल बहादुर पूर्व सांसद शैलेंद्र कुमार के साथ-साथ पूर्व ब्लॉक प्रमुख जितेंद्र सोनकर पूर्व में सपा नेता रहे शीतल सोनकर भी भाजपा से टिकट के दावेदारो की लिस्ट में शामिल बताए जाते है पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष रमेश पासी बीते कई चुनाव से भारतीय जनता पार्टी से टिकट के दावेदार है लेकिन प्रत्येक बार रमेश पासी को एंन वक्त पर पार्टी किनारे लगा देती है गुरुवार को अचानक वाचस्पति ने अपनी पत्नी मधु पति के साथ सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की है वाचस्पति और मधुपति की मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से यह मुलाकात राजनीतिक गलियारे में अहम मानी जाती हैं वाचस्पति का कौशांबी क्षेत्र में हमेशा दबदबा रहा है सरल स्वभाव मृदु भाषी वाचस्पति का कौशांबी की राजनीतिक क्षेत्र में मजबूत पकड़ है और पासी बिरादरी से रिश्ता रखने के चलते पासी मतदाताओं का भी बड़ा समर्थन वाचस्पति को हमेशा मिलता रहा है और आने वाले दिनों में भी पासी मतदाताओं का समर्थन वाचस्पति को मिलना तय है जिससे सपा प्रत्याशियों की मुश्किलें बढ़ना आता है पासी बिरादरी के मतदाताओं पर वर्तमान सांसद विनोद सोनकर की पकड़ कमजोर है और पार्टी इसी के चलते आने वाले लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी बदलने की तैयारी में दिखाई पड़ रही बहुजन समाज पार्टी से एक बार वाचस्पति विधायक रह चुके हैं और एक बार समाजवादी पार्टी से भी वाचस्पति विधायक रह चुके हैं उनकी पत्नी मधुपति पति दो बार जिला पंचायत की अध्यक्ष रह चुकी हैं वर्तमान में वाचस्पति प्रयागराज के बारा विधानसभा से भाजपा अपना दल एस गठबंधन से विधायक हैं मुख्यमंत्री से वाचस्पति की मुलाकात के बाद यह कयास लगाए जाने लगा है कि कौशांबी की सीट अपना दल एस के खाते को भाजपा टेकर लोकसभा प्रत्याशी उतार कर पासी मतदाताओं पर सेंध करने की तैयारी कर सकती है एक विशेष वार्ता में वाचस्पति ने कहा है कि मुख्यमंत्री ने उन्हें चुनाव की तैयारी में लगे रहने का आश्वासन दिया है और वह लोकसभा कौशांबी सीट से चुनाव की तैयारी में लगे हैं उन्होंने समर्थकों को भी तैयारी के लिए निर्देशित कर दिया है हालांकि इस सीट पर एक रिटायर्ड आईपीएस अफसर भी तेजी से लगे हुए हैं हालांकि जितेंद्र सोनकर शीतला प्रसाद सोनकर रमेश पासी और शैलेंद्र कुमार का कौशांबी लोकसभा सीट में वर्चस्व नहीं दिखाई पड़ रहा है जनता इन्हें बुझे दीपक की तरह मानती है यह केवल पार्टी के नाम पर अपनी दावेदारी करना चाहते हैं लगातार आम जनता से दूरी बनाए रखने के चलते इन नेताओं की आम जनता से नजदीकी खत्म हो चुकी है राजनीति के क्षेत्र में धुरंधर समझे जाने वाले वाचस्पति का नाम चर्चा में आते ही कौशांबी लोकसभा सीट पर हलचल तेज हो गई है समाजवादी पार्टी के संभावित दावेदार भी बेचैन दिखाई पड़ रहे हैं तमाम नेताओं की बेचैनी बढ़ गई है वाचस्पति और मधु पति का नाम सुनते ही कपकपाती ठंड में भी लोकसभा कौशांबी सीट से भाजपा के बैनर तले दावेदारी करने वाले तमाम नेताओं को रात में पसीने आने लगे हैं।

न्यूज झरोखा

एसडीएम और सीओ सिराथू ने फरियादियों की सुनी समस्या

टेढ़ी मोड़ /कौशाम्बी थाना समाधान दिवस के अवसर पर सैनी थाना समाधान दिवस में उप जिलाधिकारी सिराथू और सीओ सिराथू पहुंचे और थाना समाधान दिवस में फरियाद लेकर पहुंची फरियादियों की समस्याओ को सुना उन्होंने फरियादियों की शिकायत समस्या को हल करने हेतु थाना और राजस्व की संयुक्त टीम बनाकर निस्तारित करने के निर्देश दिए उन्होंने कहा कि शिकायतों को गुणवत्तापूर्ण त्वरित निस्तारित किया जाए थाना समाधान दिवस के अवसर पर राजस्व विभाग के लेखापाल कानूनगो मौजूद रहें।

टेम्पो टैक्सी, ई रिक्शा, आटो रिक्शा चालकों को श्री राम उत्सव के बारे में दी जानकारी

कौशाम्बी उप संभागीय परिवहन कार्यालय में 11 जनवरी को जनपद के टेम्पो टैक्सी, ई रिक्शा, आटो रिक्शा के वाहन स्वामियों चालकों की बैठक आहूत की गई। बैठक में एआरटीओ द्वारा श्रीराम उत्सव (भगवान राम की चरण पादुका) के दौरान जनपद में संचालित टेम्पो टैक्सी, ई रिक्शा, आटो रिक्शा चालकों को श्री राम उत्सव के बारे में जानकारी प्रदान की गई तथा उनसे अपील की गई कि किसी भी यात्री, सवारी, श्रद्धालु से अभद्रता का व्यवहार न करें, उनसे शालीनता से पेश आयें, नशा करके वाहन का संचालन न करें। जिस पर सभी वाहन स्वामियों व चालकों द्वारा आश्वासन दिया गया कि वह उपरोक्त बातों का अनुपालन करेंगे एवं श्रीराम उत्सव में पूर्ण सहयोग करेंगे।

थानाध्यक्ष चरवा ने समस्त चौकीदारों के साथ की बैठक

कौशाम्बी। थानाध्यक्ष चरवा बलराम सिंह ने पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी के निदेशी का पालन कराते हुए समस्त चौकीदारों को बुला कर 14 जनवरी को मकरसंक्रांति व 22 जनवरी को राम जन्मभूमि अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा व शीतलहर के मद्देनजर पीस कमेटी की बैठक किया। शीतलहर को देखते हुए थानाध्यक्ष ने चौकीदारों से कहा कि अपने - अपने क्षेत्र में रात्रि को सतर्कता से गस्त करें, जिससे अपराध को रोका जा सके। राम जन्मभूमि अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा वाले दिन सभी लोग अपने-अपने घरों में दीपक जलाकर खुशियां मनाये तथा 14 जनवरी से 21 जनवरी के मध्य राम चरण पादुका निकलेगी। तीन दिवस तक स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा जिसमें प्रांगण साफ सुथरा दिखाई देता रहे।

समाधान दिवस : एसडीएम चायल ने फरियादियों की सुनी समस्या

कौशाम्बी। थाना समाधान दिवस के अवसर पर चरवा थाना समाधान दिवस में उप जिलाधिकारी चायल थाना समाधान दिवस में फरियाद लेकर पहुंची फरियादियों की समस्याओ को सुना उन्होंने फरियादियों की शिकायत समस्या को हल करने हेतु थाना और राजस्व की संयुक्त टीम बनाकर निस्तारित करने के निर्देश दिए उन्होंने कहा कि शिकायतों को गुणवत्तापूर्ण त्वरित निस्तारित किया जाए थाना समाधान दिवस के अवसर पर राजस्व विभाग के लेखापाल कानूनगो मौजूद रहें।

अस्पताल की जांच के दौरान मिली कई खामियां

कौशाम्बी अवैध तरीके से संचालित अस्पताल और अल्ट्रासाउंड सेंटर की जांच स्वास्थ्य विभाग की टीम ने रविवार को किया है जांच टीम के निरीक्षण के दौरान अस्पताल और अल्ट्रासाउंड सेंटर में तमाम खामियां मिली हैं डिप्टी सीएमओ व तहसीलदार पुष्पेंद्र गौतम की मौजूदगी में तिल्हापुर मोड़ के आदित्य हॉस्पिटल में स्वास्थ्य टीम द्वारा जाच की गई साक्षी अल्ट्रासाउंड सेंटर वा राज हॉस्पिटल व अरमान हॉस्पिटल की भी स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा जाच की गई अस्पताल और अल्ट्रासाउंड के जांच के दौरान अधिकारियों को तमाम खामियां मिली हैं जिस पर अधिकारियों ने अस्पताल और अल्ट्रासाउंड संचालक के खिलाफ कार्रवाई का निर्देश दिया है जांच टीम को देखकर अस्पताल और अल्ट्रासाउंड सेंटर के संचालकों में हड़कंप मचा रहा

नायब तहसीलदार ने फरियादियों की सुनी समस्या

कोखराज कौशाम्बी थाना समाधान दिवस के अवसर पर कोखराज थाना समाधान दिवस में नायब तहसीलदार संजय सिंह व एसओ इन्द्र देव ने थाना समाधान दिवस में फरियाद लेकर पहुंचे फरियादियों की समस्याओ को सुना उन्होंने फरियादियों की शिकायत समस्या को हल करने हेतु थाना और राजस्व की संयुक्त टीम बनाकर निस्तारित करने के निर्देश दिए उन्होंने कहा कि शिकायतों को गुणवत्तापूर्ण त्वरित निस्तारित किया जाए थाना समाधान दिवस के अवसर पर राजस्व विभाग के कानून गो सुरेन्द्र सिंह , कानून गो सोहन लाल सिंह,लेखापाल,लोक नाथ पांडेय,दिलीप कुमार, देवेंद्र सिंह,सुमित केशरवानी, अमन सिंह पटेल,साधना सिंह,पूनम मौर्य, नित्यापाल, साधना वर्मा, व चौकी प्रभारी, सिंघिया, सन्तोष चौरसिया, चौकी प्रभारी भरवारी सत्य प्रकाश शर्मा,चौकी प्रभारी, शहजादपुर कृष्णबिन्द,मौके पर आठ लोगों ने अपनी शिकायत दर्ज कराई गई जिसमें दो शिकायत का मौके पर निस्तारण किया गया मौके पर तमाम गणमान्य लोग मौजूद रहें।

मकर संक्रांति व अयोध्या में मन्दिर उद्घघाटन को लेकर हुई पीस कमेटी की मीटिंग

कोखराज कौशाम्बी थाना कोखराज में पीस कमेटी की मीटिंग में ग्राम प्रधान व क्षेत्र के गणमान्य लोगों के साथ एसओ कोखराज इन्द्र देव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई इसमें 22 जनवरी को अयोध्या में मन्दिर उद्घघाटन को लेकर ग्रामीणों से चर्चा किया गया और यह भी जानकारी ली गयी कि किन किन ग्राम सभा में मकरसंक्रांति के उपलक्ष्य में पूजा पाठ का कार्यक्रम रखा गया है जिसमे ग्राम व नगर पालिका के लोगों ने बताया कि इस उपलक्ष्य में हर बार की तरह इस बार भी पूजा अर्चना करने के बाद खिचडी के रूप में प्रशाद वितरण किया जाता हैं मौके पर इंस्पेक्टर राकेश कुमार,चौकी प्रभारी सिंघिया सन्तोष चौरसिया, चौकी प्रभारी, सत्य प्रकाश शर्मा,आदि लोंगो की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

समाधान दिवस पर एसडीएम से शिकायत

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र अंतर्गत रामनगर गांव के ही एक दबंग ने जबरन रास्ता रोकने के फिराक में रास्ते पर में सटा कर दरवाजा लगा दिया और उसी के ऊपर बारजा बना रहा है जिसकी शिकायत पीड़ित ग्रामीणों ने शनिवार को चरवा थाना में थाना समाधान के अवसर पर उपजिलाधिकारी से इसकी शिकायत की जानकारी के मुताबिक रामनगर गांव के रहने वाले महेश कुमार पुत्र दुखी लाल , दुखी पुत्र ननकु द्वारा गांव के आम रास्ते से सटाकर बिना नाली की जगह छोड़े दबंगई से जबरन दरवाजा लगा दिया है और उसके ऊपर बारजा जबरन बना रहा है जो के यह कार्य न्याय संगत नहीं है और जिससे भविष्य में रास्ता अवरुद्ध हो सकता है ग्रामीणों ने बताया की यह गांव का आम रास्ता है जिससे काफी लोगो का आवागमन बाधित हो सकता है, जिसकी लिखित शिकायत राम नगर गांव के रहने वाले अजीत कुमार, छेदी लाल , अवधेश, मिथिलेश, प्रकाश, श्यामू, जगदीश, लक्ष्मण ने थाना समाधान दिवस पर एसडीएम चायल के समक्ष की और न्याय की मांग की मामले की रिपोर्ट दर्ज कर एसडीएम चायल द्वारा मामले को गंभीरता लेते हुए उचित कार्यवाही करने का निर्देश दिया ।

संदीपन घाट थाने पहुंचे आईजी डीएम एसपी ने फरियादियों की सुनी फरियाद

कौशांबी। शानिवार को थाना समाधान दिवस के अवसर पर संदीपन घाट थाना पहुंचे आईजी जोन प्रयागराज प्रेम कुमार गौतम थाने का निरीक्षण करते हुए। समाधान दिवस पर पहुंचे फरियादियों की फरियाद सुने और उन्होंने फरियादियों की आई शिकायत की समस्याओं को हल करने हेतु आवश्यक कार्यवाही करने के दिशा निर्देश दिए इसी कड़ी में 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाले कार्यक्रम का जिक्र करते हुए संदीपन घाट थाना प्रभारी को आदेशित किया गया की थाना क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने के कहा गया। साथ ही इस थाना दिवस के अवसर पर संदीपन घाट थाने पहुंच जिलाधिकारी कौशांबी सुजीत कुमार और पुलिस अधिक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने भी फरियादियों की फरियाद सुनी जहां एसपी डीएम के सामने दो फरियादियों ने जमीनी विवाद की समस्या की शिकायती प्रार्थना दिया जिसे राजस्व विभाग और पुलिस को जांच के आदेश दिए गए और उचित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया गया इस कड़ी में डीएम एसपी ने थाने के अभिलेख और दस्तावेज रजिस्टर की जांच पड़ताल की गई और थाना प्रभारी को उचित तरीके से दस्तावेज बनने को कहा और प्रतिपुष्टि के बारे में भी जानकारी दी गई और कहा गया की जांच आधिकारी और फरियादियों के फीडबैक के बारे में अभिलेखों को सही ढंग से लिखे को कहा गया।इस मौके पर संदीपन घाट थाना के समस्त पुलिस बल और राजस्व विभाग के लेखापाल कानून गो मौजूद रहें।

15 वर्षो से बनी सार्वजनिक नाली को अधीक्षण अभियंता ग्रामीण द्वारा समाप्त कर दिया गया

कल्यानपुर कौशाम्बी तहसील सिराथू के ग्राम उदाहीन खुर्द में 15 वर्षो से बनी सार्वजनिक नाली को अधीक्षण अभियंता ग्रामीण द्वारा समाप्त कर दिया गया है जिससे पानी के बहाव की दिक्कत होने लगी है बनाई जा रही आरसीसी रोड को कुछ दबंगों द्वारा ठेकेदार के मुंशी को धमका डरा कर नाली को समाप्त कर पूरे में आरसीसी रोड का निर्माण करा दिया गया है जिससे ग्रामीणों के घरों का पानी निकलना बंद हो गया है।इसकी शिकायत ग्रामीणों द्वारा मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सांसद जिला अधिकारी पुलिस अधीक्षक मुख्य विकास अधिकारी उपजिलाधिकारी सिराथू एवं थाना प्रभारी मोहम्मदपुर पैसा सिराथू को लिखित सूचना दिया गया लेकिन आज तक किसी भी जिम्मेदार के कान में जूं तक नहीं रेंगी और न ही मौके पर स्थलीय निरीक्षण ही किया गया। कहीं न कहीं जिम्मेदार अधिकारियों की लापरवाही से कोई न कोई बड़ी घटना घटित हो जाती है ।यदि समय रहते ऐसे सार्वजनिक समस्या का निदान न किया गया तो बड़ी घटना हो सकती है।

चित्रकूट से आने वाली रामचरण पादुका यात्रा के रूट व्यवस्था का एसडीएम सीओ ने किया निरीक्षण

अझुवा कौशाम्बी जनपद चित्रकूट से आने वाली रामचरण पादुका यात्रा के रूट व्यवस्था का थाना कोखराज अंतर्गत उप जिलाधिकारी सिराथू व क्षेत्राधिकारी सिराथू द्वारा भौतिक निरीक्षण कर तैयारियों का जायजा लिया गया भगवान राम की स्थापना दिवस 22 जनवरी 2024 को चित्रकूट से रामचरण पादुका यात्रा लेकर भक्त अयोध्या जा रहे हैं चित्रकूट से रामचरण पादुका यात्रा लेकर जाने वाले भक्तों के रूट पर पड़ने वाले होटल ढाबों व पेट्रोल पंप आदि पर साफ सफाई की व्यवस्था उप जिला अधिकारी और क्षेत्राधिकारी ने देखी भगवान राम की स्थापना दिवस पर निकलने वाले भक्तों के स्वागत की तैयारी में अधिकारी पूरी तैयारी से लगे हैं किसी प्रकार की कमी ना रह जाए इसके लिए अधिकारियों ने सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए है।

भगवान राम के स्थापना दिवस को ले कर शोभा यात्रा निकाल कर क्षेत्र की जनता को किया गया जागरूक

कौशांबी चायल तहसील के इमली गांव में पूर्व ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि धर्मेंद्र पांडेय एवम बिजेंद्र नारायण मिश्र की अगुवाई में भगवान राम के स्थापना दिवस 22 जनवरी 2024 को ले कर एक शोभा यात्रा निकाल कर क्षेत्र की जनता को जागरूक किया गया एह शोभा यात्रा इमली गांव से शुरू हो कर नेवादा ब्लाक से तिलहापुर मोड़ से डहिया होते हुए कटरा चौराहा से नगर पंचायत सराय अकिल कस्बे के अंदर से घूमते हुए पटेल चौराहा से सरैया के पुल होते हुए पुरखास चौराहा होते हुए तिलहापुर गांव के ब्रम्हचारी मंदिर में जा कर पूजन एवम दर्शन करते हुए सेउथा गांव होते हुए नेवादा ब्लाक के सामने से होते हुए वापस इमली गांव अवध वाटिका में समापन किया गया यात्रा के दौरान क्षेत्रीय जनता ने जगह जगह पर भगवान राम का पूजन करते हुए लड्डू एवम मिठाई बांटी यात्रा में सामिल लोगो को क्षेत्रीय जनता ने चाय नाश्ता करवाते हुए माला एवम फूल से जोरदार स्वागत किया इस काफिले में लगभग 20 से 25 गाड़ियों ने प्रतिभाग करते हुए डीजे की धुन पर सराय अकिल के राम भक्त प्रेमियों ने नाचते गाते हुए जय श्री राम के नारे बाजी किया भगवान राम की शोभा यात्रा ने यह साबित कर दिया कि कौशांबी की जनता अयोध्या में होने वाले भगवान राम की स्थापना में अपना सर्वस्व योगदान करने को तैयार है इस दौरान धर्मेद्र पाण्डे बृजेंद्र नारायण मिश्र सोनू पाण्डे नितेश मिश्रा मनोज द्विवेदी अनूप सिंह हरी प्रसाद तिवारी राहुल मिश्रा विवेक मिश्रा मनोज कुमार मिश्रा मनोज कुमार पाण्डे पुलिस बल के जवान एवम हजारों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

भरी पंचायत में पिता ने पुत्र को पटककर लात - घूंसो से पीटा

कौशाम्बी। भरी पंचायत में पिता ने पुत्र को जमीन पर पटककर लात - घूंसो से जमकर पीट दिया है। भैंस बांधने को लेकर पिता - पुत्र में विवाद हो गया। विवाद के बाद पुत्र ने पंचायत बुलाई भरी पंचायत में पिता ने पुत्र को जमकर पीटा है। बीच - बचाव करने पहुंची बहु को भी ससुर ने पीट दिया है जिसके बाद पीड़ित महिला थाना पहुंचकर लिखित शिकायती पत्र देकर ससुर के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है। पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के बाकरगंज गांव निवासिनी संतोषी देवी पत्नी राजू कोरी ने शिकायती पत्र देते हुए बताया कि उसका ससुर भोला प्रसाद उसके पति को गोड़ा में भैंस नही बांधने दे रहा था। इसके बाद उसके पति ने ग्राम प्रधान और सम्मानित लोगों की पंचायत बुलाई। पंचायत के बीच उसके ससुर ने पति और उसको गाली - गलौज करते हुए मारपीट किया है। पीड़िता ने थाना में तहरीर देकर ससुर के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है।

आमने सामने भिड़े मोपेड बाइक सवार हुए गंभीर घायल, पुलिस ने भेजा अस्पताल

अझुवा कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र ग्राम सभा बरीपुर प्राथमिक विद्यालय के पास 2 बाइक सवार आमने सामने से टकरा गए जिसमे दोनो बाइक सवार गंभीर घायल हो गए।ग्रामीणों का मजमा लग गया।सूचना पर पहुंची पुलिस कार्रवाई में जुट गई है। घटनाक्रम के मुताबिक अशोक कुमार उम्र लगभग 48 वर्ष पुत्र बदरू निवासी वार्ड नंबर 3 शांतिनगर अझुवा कपड़ा की फेरी करता है आज शनिवार शाम को गांव देहात से फेरी कर वापस अझुवा लौट रहा था ग्राम सभा बरीपुर के प्राथमिक स्कूल के सामने अझुवा से लौटकर घर जा रहे विक्की सवार अतुल उम्र लगभग 30 वर्ष पुत्र अवधेश निवासी भटपुरवा मजरे बरी पुर से आमने सामने टकरा गए इस दुर्घटना में दोनो बाइक सवार घायल हो गए मौके पर अतुल के परिजन पहुंचकर मोटरसाइकिल से अस्पताल ले गए वहीं गंभीर घायल अशोक को अझुवा चौकी पुलिस ने एंबुलेंस के माध्यम से अस्पताल भेज दिया।

बाइक ने अधेड़ को मारी टक्कर, 108 एम्बुलेंस ने पहुंचाया अस्पताल

कौशाम्बी। कोतवाली सैनी थाना अंतर्गत सयारा पुल के पास नशे में धुत बाइक सवार ने सड़क के किनारे से जा रहे केवल सिंह उम्र 64 वर्ष पुत्र मोती लाल को जोरदार टक्कर मार दी जिससे केवल सिंह सड़क पर गिर गए और लहूलुहान हो गए। आस पास के लोग तत्काल मदद के लिए आए, 108 एम्बुलेंस और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पुलिस टीम और 108 एम्बुलेंस पहुंची। घायल केवल सिंह को 108 एम्बुलेंस द्वारा सी एच सी सिराथू में भर्ती करवाया, जहाँ उनका इलाज चल रहा है।

घर से खेत जा रही महिला को बाइक ने मारी टक्कर, जिला अस्पताल में भर्ती

कौशाम्बी। सिराथू तहसील की मोहम्मदपुर पइंसा की रहने वाली कुसुम देवी 38 वर्ष पत्नी राम आसरे घर से अपने खेत में चारा लेने जा रहीं थी कि अचानक पीछे से दोपहिया वाहन ने टक्कर मार दी जिससे कुसुम रोड पर गिर गयीं। बेहोशी की हालात में घायल महिला को 108 एम्बुलेंस द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिराथू ले जाया गया जहाँ से प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने 108 एम्बुलेंस द्वारा ही जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

कनवार गांव में विकसित भारत संकल्प यात्रा योजनाओं की दी जानकारी

अझुवा कौशांबी जनपद कौशांबी के विकासखंड कड़ा के ग्राम पंचायत कनवार गांव सभा में भारत संकल्प यात्रा का भव्य आयोजन किया गया जहां भारी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे और इस दौरान वक्ताओं ने ग्रामीणों की मोदी और योगी सरकार की जनहित की योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष धर्मराज मौर्य ने केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं को समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचाने एवम लाभार्थियों को मोदी सरकार की गारंटी योजनाओं के विषय में संपूर्ण जानकारी दी। इस दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना, हर घर जल जीवन मिशन, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान कार्ड योजना, प्रधानमंत्री जनधन व आरोग्य योजना विधवा पेंशन विकलांग व पीएम किसान सम्मान निधि, पीएम पोषण योजना, किसान क्रेडिट कार्ड योजना, पीएम विश्वकर्म योजना ,अटल पेंशन योजना पीएम प्रणाम योजना ,नैनो उर्वरक का उपयोग व गरीब कल्याण योजना दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन आदि तरह-तरह की योजनाओं की समस्त जानकारी दी। मुख्य अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष धर्मराज मौर्य जिला महामंत्री ब्रह्म प्रसाद ,शीलू पांडे नगर पंचायत अझुवा अध्यक्ष प्रतिनिधि ओमप्रकाश कुशवाहा, मंडल महामंत्री प्रशांत केसरवानी मंडल उपाध्यक्ष शिव प्रसाद मौर्य व ग्राम प्रधान प्रतिनिधि मेवालाल सहित तमाम ग्रामीण महिला पुरुष मौजूद रहे हैं।

साप्ताहिक बंदी को सफल बनाने हेतु नगर पंचायत द्वारा चलाया गया अभियान

चायल कौशाम्बी जिलाधिकारी के आदेश के क्रम में दिन शनिवार को नगर पंचायत चायल में साप्ताहिक बंदी होना निश्चित हुआ है। उक्त आदेश के क्रम में आज दिनांक 13 जनवरी 2024 को नगर पंचायत चायल द्वारा साप्ताहिक बंदी को सफल बनाने हेतु नगर पंचायत द्वारा अभियान चलाया गया। जिसमें अधिशासी अधिकारी द्वारा यह बताया गया कि प्रत्येक दुकानदारों द्वारा प्रत्येक शनिवार को साप्ताहिक बंदी की जाएगी जिसमें आवश्यक सुविधाओं के अलावा समस्त दुकान बंद रहेगी उक्त आदेश का पालन न करने पर विधिक कार्रवाई की जाएगी। इस अवसर पर नगर पंचायत चायल के अधिशासी अधिकारी प्रवीण प्रकाश एवं अध्यक्ष अमर सिंह एवं नगर पंचायत के कर्मचारी गण मौजूद रहे।

फर्जी बिल देकर महिला से ऐंठे रुपए,महिला ने चौकी पुलिस को तहरीर देकर मांगा इंसाफ

अझुवा कौशांबी विद्युत विभाग में एक और फर्जी बिल देकर रुपए वसूली का मामला सामने आया है महिला ने अझुवा चौकी पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की अपील की है। घटनाक्रम के मुताबिक महिला सुमन देवी पत्नी विजय शंकर वार्ड नंबर 8 अमीरता पुर की मूलनिवासी है महिला ने पुलिस को बताया कि अनूप नामक व्यक्ति आया और मीटर देखकर बताया कि उसका 6 हजार बिजली बिल बकाया है कनेक्सन काटने की धमकी देकर रुपया लेकर विजय शंकर निवासी फतेहपुर के नाम 4190 रुपए की रसीद देकर शेष बिल माफ करने की बात कह कर चला गया जब महिला बिजली बिल चेक कराया तो फर्जी पाया महिला ने बताया उसके पति रोजी रोटी के सिलसिले में बाहर रहते हैं महिला ने पड़ोसी मुन्ना नामक बिजली कर्मचारी के कहने पर रुपया दिया था वहीं क्षेत्रीय विद्युत अभियंता महेंद्र नाथ ने बताया उपरोक्त मुन्ना और अनूप हमारे विद्युत विभाग में कोई कर्मचारी नहीं हैं वहीं चौकी पुलिस मामले की लीपापोती में जुट गई है।

प्राण प्रतिष्ठा दिवस को बनाएं गौरवमयी

टेढ़ी मोड़ कौशाम्बी अयोध्या के श्रीराम मंदिर में होने वाली प्राण प्रतिष्ठा दिवस को ऐतिहासिक व गौरवमयी बनाने के उद्देश्य से शिक्षक व समाजसेवी अजय साहू के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विभाग प्रचारक प्रवेश ने दर्जनों स्वयंसेवकों सहित कड़ाधाम स्थिति शीतला माता मंदिर में अध्यक्ष उदय पंडा के साथ बैठककर कार्ययोजना बनाई। बैठक में विभाग प्रचारक ने सभी से अपील की अपने आसपास के मंदिरों में समूह के साथ मिलकर साप्ताहिक स्वच्छता अभियान चलाकर 22 जनवरी को दीपावली सा सुसज्जित कर सुंदरकांड अथवा रामायण का पाठ करें। विभाग प्रचारक ने कहा कि करीब 500 वर्षों के बाद अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर का निर्माण हुआ है। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लिए भव्य स्तर पर तैयारी की जा रही है। इसके लिए पूरे अयोध्या को सजाया जा रहा है। देश भर से लोगों को वहां जाने के लिए विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं। 22 जनवरी को मंदिरों व घरों को सजाकर इसे ऐतिहासिक व गौरवमयी बनाएं। बैठक की समाप्ति पर आयोजक अजय साहू ने संघ के विभाग प्रचारक,जिला प्रचारक व अन्य स्वयंसेवकों को अंगवस्त्र पहनाकर आभार व्यक्त किया। बैठक के बाद विभाग प्रचारक ने सेवित बस्ती में जाकर अयोध्या से आए अक्षत व पत्रक का वितरण कर 22 जनवरी को होने वाले आयोजनों के बारे बताया। इस दौरान स्वयंसेवक विश्वदीपक, सप्तमी पण्डा, लैला पंडा, संजीत मोदनवाल, रजत पाण्डेय, अवधेश नितिन,राममिलन आदि उपस्थित रहे।

संपादक की कलम से

क्रिप्टो करेंसी (आभासी मुद्रा) का मायाजाल, भौतिक अस्तित्व पर सवाल

आज का युग तकनीकी तथा नवाचार का युग है॥ वैश्विक स्तर पर हर देश में आज तकनीकी परिवर्तन हो रहे हैं॥ तकनीकी परिवर्तन के कारण देश में हर क्षेत्र में डिजिटलाइजेशन हो रहा है॥ ऐसा ही एक नया प्रयोग,नवाचार आभासी मुद्रा यानी क्रिप्टो करेंसी का आर्थिक क्षेत्र में पदार्पण हुआ है॥ क्रिप्टो करेंसी के सिक्के के भी दो पहलू हैं एक पहलू में बहुत सारे लाभ हैं और दूसरे पहलू में आर्थिक संदर्भ में चुनौतियां या सुरक्षा अंतर्निहित है। इसको अपनाने से पहले या इसे स्वीकार करने से पहले इसके कानूनी पक्ष और विधि सम्मत स्वीकार्यता पर पूरा ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होगी। क्रिप्टोकरंसी एक डिजिटल मुद्रा है, जिसे ना तो देखा जा सकता है ना ही छुन सकते न मुद्रा की भांति जेब में या पर्स में रखा जा सकता है, क्योंकि इसकी हार्ड कॉपी या मुद्रित रूप उपलब्ध ही नहीं है। यह करेंसी भौतिक रूप से उपलब्ध ना होने के कारण इसे आभासी मुद्रा कहा जाता है। यह एक स्वतंत्र किस्म की मुद्रा है इसका संचालन व नियमन किसी संस्था या सरकार द्वारा नहीं किया जा सकता इसे विकेंद्रीकृत मुद्रा भी कहा जाता है। यह एक डिजिटल मुद्रा है। यह एक ऐसी मुद्रा है जिसे कंप्यूटर एल्गोरिथ्म के आधार पर बनाया जाता है। किसे केवल कंप्यूटर में ही देखा जा सकता है गिना जा सकता है एवं भुगतान किया जा सकता है। यह मुद्रा सरकारी नियंत्रण से मुक्त है। विश्व में सबसे पहले 2009 में जापान के संतोषी नाकमोतो द्वारा बनाई गई थी। वर्तमान में बाजार में 1500 से भी ज्यादा क्रिप्टो करेंसी उपलब्ध है, जो पियर टू पियर इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम के रूप में काम करती है। वर्तमान में क्रिप्टोकरेंसी काफी लोकप्रिय होती जा रही है इसकी लोकप्रियता का कारण एक यह भी है कि यह गोपनीयता बनाए रखने में सहायक होती है। जिसके लेन देन में छद्म नाम एवं पहचान बनाई जाती है। ऐसे में निजता से लेकर अत्यधिक संवेदनशील व्यक्तियों को यह व्यवस्था बहुत उपयुक्त लगती है। इसके लेनदेन में राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी आर्थिक बोझ कम पड़ता है। जिसके लेन देन में थर्ड पार्टी के सर्टिफिकेशन की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लेनदेन में समय तथा धन की बहुत ज्यादा बचत होती है। सामान्य बैंक खातों की तरह इसमें किसी भी प्रकार के कागजात की आवश्यकता भी नहीं होती है। बैंकिंग प्रणाली तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले लेनदेन पर सरकार का कड़ा नियंत्रण होता है, जबकि यह राष्ट्रीय बैंकिंग सिस्टम के प्रत्यक्ष नियंत्रण के बाहर होने कारण लेनदेन के आदान-प्रदान का विश्वसनीय एवं सुरक्षित माध्यम बनकर उभरा है। सरकार के पास बैंक खाते को जप्त करने का अधिकार होता है, जबकि की क्रिप्टो करेंसी के मामले में ऐसा नहीं कर सकती अतः सरकार से बचाव के प्रभावशाली विकल्प के रूप में इस मुद्रा का प्रयोग किया जा रहा है। साथ ही नोटबंदी एवं मुद्रा के अवमूल्यन का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

यह डिजिटल करेंसी है, अतः इसमें धोखाधड़ी की संभावनाएं बहुत कम होती है। या निवेश के लिए इस प्लेटफार्म पर अधिक पैसा होने पर क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करना लाभप्रद माना जा रहा है, क्योंकि इसकी कीमतों में बहुत तेजी से उछाल होता है। क्रिप्टो करेंसी राशि सीमाओं से परे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत ही कम लागत पर एक देश से दूसरे देश को पैसा भेजने के लिए सुगम साधन बन चुका है। 2009 में बिटकॉइन क्रिप्टो करेंसी की शुरुआत हुई थी। वर्तमान में एक बिलियन बिटकॉइन इंटरनेट के नेटवर्क में समाहित है, तथा नए बिटकॉइन का लगातार आगमन हो रहा है। आज प्रत्येक बिटकॉइन का मूल्य ?500 है, जो दुनिया की सबसे महंगी करेंसी मानी जाती है। कुछ लोग इसे गोल्डरश के नाम से भी पुकारते हैं। वर्ष 2014 से माइक्रोसॉफ्ट ने अपनी सेवाओं के लिए बिटकॉइन के रूप में भुगतान लेना शुरू कर दिया है। निकोसिया विश्वविद्यालय ने विद्यार्थियों के प्रवेश शुल्क के रूप में बिटकॉइन करेंसी स्वीकार किया था । 2018 प्रशांत महासागर में स्थित मार्शल द्वीप क्रिप्टो करेंसी के लीगल टेंडर को मान्यता देने वाला पहला वैश्विक देश है। वेनेजुएला ने भी क्रिप्टो करेंसी की तर्ज पर पेट्रो नामक एक करेंसी प्रारंभ की है ऐसा करने वाला विश्व का पहला संप्रभुता वाला देश है। कई देशों में इसे आर्थिक संकट से उबारने वाला उपाय की तरह देखा जा रहा है। विश्व के कई देश इसकी पारदर्शिता तथा विधि स्वीकार्यता को सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत हैं। कई देशों ने इस पर प्रतिबंध लगा रखा है उसे मान्यता प्रदान नहीं की है। भारत ने भी अभी इसे किसी भी तरह की मान्यता प्रदान नहीं की है।

भारतीय संदर्भ में आभासी मुद्रा में उच्च स्तर की अनिश्चितता एवं के कारण भारत सरकार का दृष्टिकोण प्रतिबंधात्मक ही रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक ने 1913 में पहली बार इस संदर्भ में चेतावनी जारी की थी फिर 2017 में रिजर्व बैंक ने इस संदर्भ में जनता को आगाह कर इससे सावधान रहने के लिए कहा है। रिजर्व बैंक के अंदर क्रिप्टो करेंसी के संचालन में आर्थिक, वित्तीय, परिचालनात्मक कानून ग्राहक संरक्षण और उसकी सुरक्षा संबंधी जोखिम मौजूद हैं। रिजर्व बैंक द्वारा किसी प्रकार की क्रिप्टो करेंसी को मान्यता प्राधिकार या लाइसेंस नहीं दिया है। क्रिप्टो करेंसी पर प्रतिबंध और अधिकारिक डिजिटल मुद्रा विधेयक 2019 के ड्राफ्ट में यह प्रस्ताव दिया गया है कि देश में क्रिप्टोकरंसी की खरीद बिक्री करने वालों को 10 वर्ष की जेल की सजा होगी।

वीगन जनवरी: क्या महिलाओं से ज्यादा मांस खाते हैं पुरुष?

2019 में जब बर्गर किंग अपना 'इंपॉसिबल वॉपर' लाया, तो लंबे समय से वीगन आहार की वकालत करती आ रहीं टोनी वेरनेली को जैसे यकीन ही नहीं हुआ.

30 साल पहले उन्होंने कंपनी के खिलाफ मुहिम छेड़ी थी. अब वही कंपनी गर्व से अपना वीगन बर्गर लॉन्च कर रही थी और 2030 तक अपना 50 फीसदी मेन्यू वीगन करने की प्रतिबद्धता जता रही थी. इससे दिखता था कि कितना कुछ बदल चुका है. ये इस बात का संकेत भी था कि अब पीछे की ओर लौटना मुमकिन नहीं रहा. वेरनेली कहती हैं, "यह आंदोलन सिर्फ एक ही रास्ते पर आगे बढ़ सकता है.

एक जमाने में जीवनशैली से जुड़ी एक पसंद के तौर पर देखा गया वीगनिज्म या वीगनवाद, आज पश्चिमी मुख्यधारा संस्कृति में तेजी से बड़ी जगह बनाता दिख रहा है.

वेरनेली अब ब्रिटेन की एक गैर-लाभकारी संस्था वीगनरी में काम करती हैं. इसी संस्था ने जनवरी में वीगन आहार को बढ़ावा देने का अभियान चलाया. यह मुहिम तेजी से फैल रही है. पिछले साल उत्तर कोरिया के अलावा हर देश के सात लाख से ज्यादा लोगों ने इसपर हस्ताक्षर किए थे. गूगल की वैश्विक सर्च में जर्मनी का नाम सबसे ऊपर आता है, जहां 2016 के बाद से वीगन प्रेमियों की संख्या कमोबेश दोगुनी हो चुकी है. उसके बाद ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया का नंबर है.

वीगनिज्म के प्रति बढ़ती दिलचस्पी ने इसे एक फलते-फूलते अरबों डॉलर के उद्योग में बदल दिया है. बड़े पैमाने पर ऐसे उत्पाद पेश किए जा रहे हैं, जो पूरी तरह पौधों से मिली चीजों से तैयार किए जाते हैं. वीगन इन्फ्लूएंसर, अपनी रेसिपी और जीवनशैली को सामने रखने में जुटे हैं.

जलवायु जागरूकता है बड़ी वजह

मांस और डेयरी उत्पादों को खाने से पर्यावरण पर पड़ने वाले असर को लेकर हुई भारी मीडिया कवरेज, वीगनिज्म के प्रति रुझान का एक मुख्य बिंदु है. ब्रिटेन स्थित 'द वीगन सोसायटी' की मीडिया अधिकारी मेजी स्टेडमान कहती हैं, "मेरे ख्याल में उससे लोगों के नजरिए में एक बड़ा बदलाव आया क्योंकि हम लोग जलवायु संकट के कारण जीवन पर हो रहे प्रभाव और स्पष्टता से देख रहे हैं."

नेचर फूड नाम के जर्नल में इस साल प्रकाशित एक वैज्ञानिक रिपोर्ट के मुताबिक, वीगन आहार में 75 फीसदी कम ग्रीनहाउस गैसें निकलती हैं. वन्यजीवन की तबाही और जल प्रदूषण भी उल्लेखनीय रूप से कम होता है.

पशुओं से मिलने वाले भोजन के मुकाबले फल-सब्जी, दालों और अनाज में कम ऊर्जा, कम जमीन और कम पानी खर्च होता है. मांस उत्पादन में बड़े पैमाने पर चरागाहों का इस्तेमाल शामिल है. चारागाह बनाने के लिए पेड़ काटे जाते हैं. गाय और भेड़ जैसे जीव, पाचन के दौरान मीथेन भी छोड़ते हैं. उनका चारा उगाने के लिए जो खाद इस्तेमाल की जाती है, उससे नाइट्रस ऑक्साइड निकलती है. दोनों ही गंभीर ग्रीनहाउस गैसे हैं.

घिसी-पिटी धारणाएं तोड़ना जरूरी

वीगन अभियान चलाने वालों का कहना है कि वीगनिज्म पर बढ़ते ध्यान से नए और पुराने दोनों किस्म के स्टीरियोटाइप भी उभर आए हैं.

वेरेनेली बताती हैं कि वीगनरी ने उपदेश और दुहाई वाली पारंपरिक वीगन धारणा का सीधा मुकाबला करने की कोशिश की है. इसके तहत, हमेशा के लिए वीगन बने रहने की असाध्य संभावना के बदले, कोशिश करने और नाकाम रहने की छूट को प्रोत्साहित किया है।

नये विश्व एवं विश्वास के लिये दावोस से उम्मीदें

स्विट्जरलैंड के पूर्वी आल्पस क्षेत्र के दावोस में अगले सप्ताह 54वीं वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की सालाना बैठक दुनिया को नये विश्वास एवं नवीन संभावनाओं से सराबोर करने के लिये आयोजित हो रही है। इससे नये विश्व एवं नये मानव समाज की संरचना का आकार उभर कर सामने आना चाहिए। इस महत्वपूर्ण एवं दुनिया को नयी दिशा देने वाली बैठक की थीम है विश्वास का पुनर्निर्माण। मौजूदा दौर में सर्वथा प्रासंगिक विषय एवं सन्दर्भ में आयोजित हो रही यह बैठक इसलिये खास है क्योंकि आज दुनिया अनेक मोर्चों पर बिखरी हुई है, मानवता के सामने नित नयी चुनौतियां खड़ी हो रही है, किसी को किसी पर विश्वास नहीं है, स्वार्थ एवं संकीर्णताओं ने मानवता का गला घोट रखा है। युद्ध, हिंसा, आतंकवाद एवं पर्यावरण की चुनौतियों से विश्व मानवता कहरा रही है। दुनिया के विभिन्न देशों के बीच आपसी तनाव एवं द्वंद्व की फेहरिस्त तो खासी लंबी है। सभी का नुकसान हो रहा है, यह कहीं तो रुकना चाहिए। हर देश केवल खुद के बारे में ही सोच रहा है। ऐसा करते हुए वह अपने लिए नुकसानदायक पहलुओं का भी अहसास नहीं कर पा रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध दो साल से नहीं थमा है और इधर इजरायल-फिलिस्तीन आपस में लड़ रहे हैं। ताइवान के मुद्दे पर अमरीका और उसके समर्थक अन्य यूरोपीय देशों से चीन का लगातार टकराव हो रहा है। दावोस की बैठक में इस संबंध में कुछ ठोस पहल का मार्ग प्रशस्त होगा, इसकी उम्मीद की जा सकती है।

दावोस की इस बैठक के जो बड़े मुद्दें हैं, जिनमें पहला खंडित दुनिया में सहयोग और सुरक्षा का वातावरण निर्मित करना है। इस बैठक का दूसरा बड़ा मुद्दा जलवायु परिवर्तन का है, जो लगातार जटिल होता जा रहा है। दुनिया एवं हिमालय में बर्फ कम हो रही है, ग्लेशियर लगातार पिघल रहे हैं, कार्बन उत्सर्जन निरंतर विनाशकारी स्तर तक बढ़ता जा रहा है। पूरी दुनिया इन विनाशकारी स्थितियों से अवगत है। इसके बावजूद दुनिया के ज्यादातर देश इसे लेकर ज्यादा गंभीर नहीं हैं। जो देश इसके लिए बहुत ज्यादा जिम्मेदार हैं, उनको तो इस दिशा में गंभीरता दिखानी चाहिए। जो शक्ति एवं साधन सम्पन्न देश है उन्हें आगे आकर इन समस्याओं के निदान हेतु आर्थिक मदद करनी चाहिए, लेकिन वे इससे मुंह मोड़ रहे हैं।

दावोस की इस बैठक में दुनिया की ज्वलंत समस्याओं के समाधान की दिशा में ठोस होगा। चीन की बढ़ती महत्वाकांक्षाओं पर नियंत्रण जरूरी है, वही पाकिस्तान के द्वारा आतंकवाद को बल देना भी दुनिया की बड़ी समस्या है। इसके लिये बढ़ते साइबर अपराध, आर्थिक अपराधीकरण, साम्प्रदायिक संकीर्णताएं भी बढ़ते व्यापार एवं आर्थिक उन्नति की बड़ी बाधाएं हैं। बेरोजगारी, महिलाओं पर हो रहे अपराध एवं अत्याचार, युवाओं में बढ़ती निराशा आदि समस्याओं पर भी ठोस चिन्तन एवं मंथन जरूरी है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआइ की तकनीक की व्यापक चर्चा दुनियाभर में सुनने को मिल रही है, चिकित्सा एवं अन्य तकनीकी क्षेत्रों में जहां इसकी उपयोगिता है, वहीं इसके खतरे भी कम नहीं है। एआइ इस बैठक के अहम मुद्दों में शामिल है। सकारात्मक परिणामों के साथ इसके नकारात्मक प्रभावों की झलक हमें बड़ी-बड़ी कंपनियों में छंटनी, साइबर अपराधों में बढ़ोतरी, संवेदनशील क्षेत्रों में दुरुपयोग व जोखिम के रूप में देखने को मिल रही है। इसके बावजूद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। कुछ ऐसे रास्तों और उपायों की तलाश इस बैठक का मकसद होना चाहिए, जिनकी मदद से इस तरह की तकनीक का दुरुपयोग रोका जा सके। यह भी संभव है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कुछ खास किस्म के रोजगारों को खत्म या कम कर दे। दावोस की बैठक में ये सभी चिंताएं भी सामने आएंगी। उम्मीद की जानी चाहिए कि हालात को कुछ बेहतर बनाने का रास्ता निकलेगा और सभी देश अपने-अपने हिस्से की जिम्मेदारी का निर्वहन ईमानदारी के साथ करेंगे। खासतौर पर विकसित देशों को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

दावोस की बैठक में विश्व राजनीति, वैश्विक व्यापार, नागरिक समाज और विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों से सावधानीपूर्वक चुने गए 2000 दूत शामिल हैं, जिनमें विविध क्षेत्रों के प्रभावी हस्तियां दुनिया की स्थिति के बारे में सार्थक चर्चा को प्रोत्साहित करेगी और वैश्विक चिंताओं को दबाने के लिए सहयोगात्मक रूप से समाधान प्रस्तुत करेगी। यह बैठक प्रतिनिधियों के लिए एकजुट होने, प्रयासों में तालमेल बिठाने और अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करते हुए महत्वपूर्ण मुद्दों को एकजुट होकर संबोधित करने का एक अवसर है। ध्यान दें कि कम सहयोग, भू-राजनीतिक तनाव और व्यापक सामाजिक अशांति, निम्न-विकास, जलवायु परिवर्तन और 2050 तक कार्बन तटस्थता प्राप्त करने के लिए एक मजबूत और टिकाऊ नींव रखते हुए उद्योगों को फिर से आकार देने एवं संगठित करने, एआई का प्रभाव इस वर्ष के लिए कुछ मजबूत केंद्र बिंदु हैं। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की बैठकों में आर्थिक उन्नति की चचाओं के साथ विश्वशांति, अहिंसा एवं युद्धमुक्ति पर व्यापक चचाएं होनी चाहिए। आर्थिक उन्नति एवं शांति एक दूसरे के पूरक हैं। एकांगी दृष्टिकोण ही सारी समस्याओं का मूल हैं। मैं जो सोचता हूं, वह सच है और तुम जो सोचते हो, वह भी सच हो सकता है, ऐसा दृष्टिकोण जब तक नहीं बनेगा, दुनिया की समस्याओं का समाधान नहीं होगा। समस्या यह है कि हम दूसरों को सीमा में देखना चाहते हैं किन्तु अपनी सीमा नहीं करते। यह समय और विवेक का तकाजा है कि हर देश स्वयं अपनी सीमा करें तभी जलवायु परिवर्तन, युद्ध, आतंक एवं अतिश्योक्तिपूर्ण आर्थिक महत्वाकांक्षाओं से जुड़ी समस्याओं का अंत होगा। ऐसा होना ही दावोस की बैठक को सार्थकता एवं नया आयाम दे पायेगा।

खूबसूरत स्विस आल्प्स पहाड़ों के बीच आयोजित इस बैठक में भारत से भी कई बड़े नाम शामिल हो रहे हैं, जिनका मकसद सुस्त अर्थव्यवस्था और दो जंगों से जूझ रही दुनिया में भारत की मजबूती, प्रगति और अहमियत को दशार्ना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की आर्थिक प्रगति के साथ, औद्योगिक उन्नति, व्यापारिक उत्थान, सफल एवं सार्थक शासन-व्यवस्था, हिंसा एवं आतंकवाद पर नियंत्रण जैसी उपलब्धियां हासिल हुई है, उन विशेष स्थितियों पर भी चर्चा होगी। फोरम में हिस्सा लेने जा रहे गोदरेज इंडस्ट्रीज के चेयरमैन नादिर गोदरेज कहते हैं, ह्यभूराजनीतिक चुनौतियां तो हैं मगर भारत पर उनका उतना असर नहीं है। भारत तेजी से बढ़ रहा है।ह्व रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास और गौतम अदाणी, सुनील मित्तल तथा सज्जन जिंदल जैसे उद्योगपति के अलावा अल्पसंख्यक मामलों की मंत्री स्मृति इरानी, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी भी जाएंगे और दावोस में भारत की आर्थिक उन्नति, शांतिपूर्ण व्यवस्था एवं व्यापार की व्यापक संभावनाओं की झांकी दिखाएंगे। सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग से विप्रो के कार्यकारी चेयरमैन रिशद प्रेमजी, टाटा समूह के चेयरमैन और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के चेयर एन चंद्रशेखरन समेत कई बड़े नाम भारत का परचम फहरायेंगे।

ऐसा लगता है दावोस में भारत छाने वाला है। दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर भारत की अनेक चुनौतियों पर भी दावोस में चर्चा होगी। जिनमें मानव पूंजी और टिकाऊ संसाधनों को भारत के लिये दो सर्वप्रमुख चुनौतियों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इसके समाधान के लिये भारत को अपने अपेक्षाकृत युवा और तेजी से बढ़ते श्रमिक बल की क्षमताओं को बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिये शिक्षा पाठ्यक्रम को उन्नत करने, व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार लाने और डिजिटल कौशल में सुधार की जरूरत है। भारत को अपने ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने और उत्सर्जन स्तर को कम करने हेतु प्रयास जारी रखने होंगे क्योंकि इसके विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार आगे जारी रहेगा। भारत की ही भांति हर देश ऐसी चुनौतियों का सामना कर रहा है जो अकेले निजी क्षेत्र या सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा हल नहीं की जा सकती। इसमें सरकार की सहायता हेतु सार्वजनिक-निजी सहभागिता के परंपरागत मॉडल के पूरक के रूप में नवीन और नवाचारी दृष्टिकोणों को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि सरकार नए मानको को अपना सके।

(ललित गर्ग)
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92
फोनः 22727486, 9811051133

भारतीय त्योहार अनेकता में अंतर्निहित एकता के प्रतीक हैं

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर यह सर्वेविदित है कि पूरी दुनियां में भरत अनेकता में एकता का एक जीवंत उदाहरण है। भारत के नागरिक हो या प्रवासी या फिर मूल भारतीय हो जो दुनियां के किसी भी कोने में रहते हो,परंतु उनकी संस्कृति में अनेकता में एकता का भाव जरूर होगा, यानें भारतीय सांस्कृतिक विरासत के त्यौहार एक साथ मिलकर जरूर मनाएंगे चाहे फिर होली दिवाली हो या अनेक धर्मों के या फिर किसी भी धर्म जाति समुदाय का त्यौहार हो सभी मिलकर एक दूसरे को बधाइयां देते हैं, उनके कार्यक्रमों में शामिल होते हैं। इसका जीवंत उदाहरण अभी 14-15 जनवरी 2024 को मनाए जा रहे लोहड़ी मकर संक्रांति मांग बिहू और पोंगल त्योहार हैं, यहां यह बता देना जरूरी है कि यह त्यौहार मूल रूप से एक ही है परंतु विभिन्न प्रदेशों में इन्हें अलग-अलग नाम से मनाया जाता है और अपने-अपने प्रदेश की संस्कृति से मनाया जाता है जो अनेकता में एकता का बोध कराता है और राष्ट्रपतिउपराष्ट्रपति प्रधानमंत्री सहित अनेकोव्यक्तित्व इसकी बधाइयां देकर इस पर्व को विविधता में एकता का प्रतीक बताते हैं। चूंकि भारतीय त्योहार अनेकता में अंतर्निहित एकता के प्रतीक हैं, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, लोहड़ी मकर संक्रांति मांघ बिहू और पोंगल,त्योहार एक नाम अनेक है, वात्सल्यमई प्रकृति के प्रति हमारी विनम्र कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है।

साथियों बात अगर हम लोहड़ी, मकर संक्रांति, मांघ बिहू और पोंगल, त्यौहार एक नाम अनेक की करें तो,ये भारत के विभिन्न हिस्सों में मनाए जाने वाले त्योहार के अलग-अलग नाम हैं, जो सर्दियों के मौसम के अंत और वसंत के मौसम और नए साल का स्वागत करने के लिए मनाया जाता है। मकर संक्रांति महाराष्ट्र और गुजरात में, बिहू असम में, पोंगल केरल या दक्षिण भारत में और लोहड़ी पंजाब या उत्तर भारत में मनाई जाती है। ये सभी संक्रांति के शुभ दिन पर मनाए जाते हैं। इन त्योहारों का जश्न आमतौर पर हर साल 13 जनवरी को शुरू होता है, इसलिए इनको हम बिस्तर में समझेंगे (1) पूजा, मकर संक्रांति के दिन सूर्य और विष्णु पूजा का महत्व है जबकि पोंगल के दिन नंदी और गाय पूजा, सूर्य पूजा और लक्ष्मी पूजा का महत्व है। लोहड़ी पर्व में माता सती के साथ ही अग्नि पूजा का महत्व है। दूसरी ओर बीहू पर्व में मवेशी की पूजा, स्थानीय देवी की पूजा और तुलसी की पूजा की जाती है।(2)पकवान, मकर संक्रांति के दिन खिचड़ी, तिल गुडड़ के लड्डू खासतौर पर बनाए जाते हैं जबकि पोंगल पर खिचड़ी, नारियल के लड्डू, चावल का हलवा, पोंगलो पोंगल, मीठा पोंगल और वेन पोंगल बनाया जाता है। लोहड़ी में गजक, रेवड़ी, मुंगफली, तिल-गुड़ के लड्डू, मक्का की रोटी और सरसों का साग बनाया जाता है जबकि बीहू में नारियल के लड्डू, तिल पीठा, घिला पीठा, मच?छी पीतिका और बेनगेना खार के अलावा विभिन्न प्रकार के पेय बनाए जाते हैं (3) फसल और पशु , दक्षिण भारतीय पर्व पोंगल पर्व गोवर्धन पूजा, दिवाली और मकर संक्रांति का मिला-जुला रूप है। जबकि मकर संक्रांति पर स्नान, दान और पूजा के ही महत्व है। लोहड़ी अग्नि और फसल उत्सव है और बिहू फसल कटाई का उत्सव है। इस दिन मवेशियों को पूजा का प्रचलन है।(4) नववर्ष जिस प्रकार उत्तर भारत में नववर्ष कीशुरूआत चैत्र प्रतिपदा से होती है उसी प्रकार दक्षिण भारत में सूर्य के उत्तरायण होने वाले दिन पोंगल से ही नववर्ष का आरंभ माना जाता है। थाई तमिल पंचांग का पहला माह है जो पोंगल से प्रारंभ होता है। लोहड़ी ऋतु परिवर्तन का त्योहार है।(5) सूर्य का उत्तरायण,चारों हीत्योहार में सूर्य पूजा का और सूर्य के उत्तरायण होने का महत्व है।मकर संक्रांति के दिन स्नान, दान, सूर्य और विष्णु पूजा का महत्व है तो पोंगल, लोहड़ी और बिहू के दिन फसल उत्सव का महत्व हैलोहड़ी अनिवार्य रूप से अग्नि और सूर्य देव को समर्पित त्योहार है।(6) कथा मकर संक्रांति की कथा सूर्य के उत्तरायण होने, भागिरथ के गंगा लाने और भीष्म पितामह के द्वारा शरीर त्यागने से जुड़ी है और पोंगल की कथा भगवान शिव के नंदी और फसल से जुड़ी हुई है। लोडड़ी की कथा माता सती और दुल्ला भट्टी के साथ ही फसल से जुड़ी हुई है। बिहू की कथा सूर्य के उत्तरायण होने और फसल से जुड़ी हुई है।

साथियों बात अगर हम भारतीय संस्कृति में अलग-अलग त्योहारों को मनानें की करें तो, भारत की संस्कृति अलग अलग प्रकार के लोग, भाषा, व्यवहार और धर्म से भरी है और यही चीज हमारे त्योहारों को भी खास बनाती है। मकर संक्रांति देशभर में मनाया जाने वाला एक ऐसा ही प्रमुख त्योहार है, जो फसल कटाई की खुशी, सूर्य का उत्तरायण यानी मकर राशि में प्रवेश और नई शुरूआत का प्रतीक है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस एक त्योहार को भारत के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। पंजाब में मकर संक्रांति को लोहड़ी के नाम से जाना जाता है. लोहड़ी की रात लोग खुले मैदान में आग जलाते हैं, उसके चारों ओर नाचते-गाते हैं और रेवड़ी व मूंगफली का प्रसाद चढ़ाते हैं।

तमिलनाडु में मकर संक्रांति को पोंगल के नाम से मनाया जाता है। यह चार दिनों का उत्सव होता है, जिसमें पहले दिन घर की सफाई की जाती है, दूसरे दिन मीठा पोंगल बनाया जाता है, तीसरे दिन मसालेदार पोंगल बनाया जाता है और चौथे दिन मवेशियों की पूजा की जाती है। केरल में मकर संक्रांति को विशु के नाम से जाना जाता है। विशु का दिन बेहद खास माना जाता है। सुबह उठते ही लोग विशुकानी देखते हैं, जो फल, फूल, धान के खेत और सोने के सिक्के से सजाया हुआ एक पवित्र दृश्य होता है उत्तराखंड में मकर संक्रांति को उत्तरायणी के नाम से जाना जाता है। इस दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं, देवी-देवताओं की पूजा करते हैं और लोक नृत्य करते हैं।

साथियों बात अगर हम 12 जनवरी 2024 को माननीय राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति द्वारा दिए गए बधाई संदेशों की करें तो, राष्ट्रपति ने लोहड़ी, मकर संक्रांति, माघ बिहू और पोंगल (जो क्रमशः 13, 14 और 15 जनवरी को मनाये जाते हैं) की पूर्व संध्या पर देशवासियों को शुभकामनाएं दी हैं।अपने एक संदेश में, राष्ट्रपति ने कहा है,लोहड़ी, मकर संक्रांति, माघ बिहू और पोंगल के शुभ अवसर पर, मैं देश और विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं।ये पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत के जीवंत स्वरूप होने के साथ-साथ अनेकता में एकता के प्रतीक भी हैं। इन अवसरों पर, हम पवित्र नदियों में स्नान करते हैं और दान संबंधी एवं अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं। देश भर में अलग-अलग रूपों में मनाए जाने वाले ये त्योहार सामाजिक सौहार्द, एकता और भाईचारे को मजबूत करते हैं।कृषि से जुड़े ये पर्व पर्यावरण संरक्षण का भी संदेश देते हैं। इन त्योहारों को मनाकर हम अपने किसानों की मेहनत को भी सम्मान देते हैं।मेरी कामना है कि इन त्योहारों के माध्यम से प्रेम और सद्भाव की भावना बढ़े तथा देश में शांति तथा समृद्धि का और अधिक विस्तार हो । क्षेत्रीय विविधता से भरे हमारे राष्ट्र के अलग अलग अंचलों में मनाए जाने वाले ये पर्व वास्तव में लहलहाती फसलों की कटाई का उत्सव हैं। ये पर्व प्रकृति के प्रति हमारी विनम्र कृतज्ञता की अभिव्यक्ति हैं! इस अवसर पर जब हम सब साथ मिल कर वात्सल्यमयी प्रकृति द्वारा हमें प्रदान की गई समृद्ध संपन्नता का उल्लास मनाते हैं।

जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार जीवनशैली

- सुरेश भाई

ठंडे दिनों की संख्या लगातार घट रही है। पिछले दशक में 1961 से 1990 के दशकों की तुलना में ठंडे दिन 40 प्रतिशत घटे हैं। भारत में बाढ़ की समस्या भी बढ़ गई है। जून 2013 में भारी बारिश, पहाड़ों की बर्फ पिघलने की वजह से हिमालय क्षेत्र में बाढ़, भूस्खलन, भू-धंसाव की घटनाएं तेजी से बढ़ती जा रही हैं। बाढ़ के कारण इस दौरान भारत में हजारों मौतें हुई हैं।

दुबई में हुए 28वें 'जलवायु परिवर्तन सम्मेलन' (कॉप28) में 'संयुक्त राष्ट्र संघ' के महासचिव एंटोनियो गुटरेस ने चेतावनी दी थी कि दुनियां तबाही की कगार पर है और यह सम्मेलन हमें आखिरी मौका दे रहा है। इस सम्मेलन में दुनिया के 200 देश डीजल, पेट्रोल जैसे जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल से दूरी बनाने पर सहमत दिखाई दिये। जीवाश्म ईंधन 'ग्लोबल वार्मिंग' का सबसे बड़ा कारण माना जाता है। यदि इस पर निर्भरता धीरे-धीरे घटाई जा सके तो जलवायु को नियंत्रित किया जा सकता है।

इससे पहले वर्ष 2015 में 'संयुक्त राष्ट्र संघ' द्वारा जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयासों व सामूहिक प्रगति पर नजर रखने के लिए पेरिस में भी 200 से अधिक देशों का सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन के समझौते के अनुसार, वैश्विक तापमान वृद्धि को 'पूर्व औद्योगिक काल' (1850-1900) के स्तर के मुकाबले 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करना है, लेकिन महसूस किया गया कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवश्यक निधि अपर्याप्त है।

पिछले सम्मेलनों में संयुक्त-अरब-अमीरात की तरफ से इसका विरोध हुआ था। उसका कहना था कि जब तक नवीकरणीय ऊर्जा के पर्याप्त स्रोत उपलब्ध नहीं हो जाते, तब तक जीवाश्म ईंधन पर बंदिशें लगाना उचित नहीं है क्योंकि दुनिया की 80 फीसदी ऊर्जा जरूरतें इसी से पूरी हो रही हैं। दूसरी तरफ वे यह भी कह रहे हैं कि जीवाश्म ईंधन से दूर रहने के लिए वे भी सहमत हैं। इसके साथ ही 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को तीन गुना बढ़ाने का लक्ष्य भी रखा गया है।

40 से अधिक देशों और 20 संगठनों के मंत्रियों, नीति निमार्ताओं, मुख्य कार्यकारी अधिकारियों ने एक वार्ता करके कहा है कि वे वैश्विक स्तर पर स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को तीन गुना बढ़कर 11 हजार गीगावॉट करने और इस समय सीमा में वार्षिक ऊर्जा दक्षता सुधार को दोगुना करने के लक्ष्य प्राप्त करने पर सहमत हैं, लेकिन इसे हासिल करने के लिए 4.5 खरब डालर की आवश्यकता है।

वर्ष 2009 में कोपनहेगन में हुई जलवायु वार्ता में प्रस्तावित 'हरित जलवायु निधि' में अमीर देशों ने 2020 तक, हर साल विकासशील देशों को 100 अरब डॉलर की मदद करने का संकल्प लिया था, लेकिन किसी भी साल वे इस राशि को नहीं जुटा सके। इन देशों ने 2013 में 52.5 अरब डॉलर जुटाए थे जो 2015 में घटकर 44.6 अरब डॉलर हो गए थे। 2019 में उनकी तरफ से 80.4 अरब डॉलर का फंड संग्रह किया गया था जो 2020 में बढ़कर 83.3 अरब डालर हो गया था। अब तो 100 अरब डॉलर से भी अधिक की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ऐसे में 2030 तक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक रखने के प्रयासों को झटका लग सकता है।

एक अनुमान के मुताबिक दुनिया के 55 देशों को बीते दो दशक में जलवायु परिवर्तन संबंधी घटनाओं से 525 अरब डॉलर का नुकसान हो चुका है। 2030 तक यह बढ़कर 580 अरब डालर पहुंच जाएगा। वहीं अगर अकेले अमेरिका से उसके उत्सर्जन प्रभाव की कीमत वसूली जाए तो यह 1900 अरब डॉलर होती है। विकासशील देशों का सवाल है कि क्या अमेरिका इस कीमत को चुकाएगा? अगर नहीं तो फिर किसी दूसरे देश से कैसे कह सकते हैं कि वह विकास न करे। इस संदेश से ऐसा लगता है कि सभी देश अमेरिका की राह पर हैं और आधुनिक जीवन शैली व विकास के मायने जलवायु परिवर्तन ही है।

जीवाश्म ईंधन के उपयोग का आखिरी पन्ना 28वें जलवायु सम्मेलन में नहीं पलटा जा सकता है, लेकिन जीवाश्म ईंधन के अंत की शुरूआत यहां से की जा सकती है।

चरण पादुका यात्रा के प्रति खासे गम्भीर हैं डीएम-एसपी

यात्रा को सकुशल सम्पन्न कराने में जुटा प्रशासन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद व पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने रामचरण पादुका यात्रा पथ की तैयारी बाबत निरीक्षण कर कहा कि रामचरण पादुका भरतकूप से 15 जनवरी से शुरू होकर रामायण मेला पहुंचेगी। रामायण मेला में सांस्कृतिक कार्यक्रम, भजन, गायन सुश्री तृप्ति शाक्या मुंबई व क्षेत्रीय कलाकार प्रस्तुति देंगी। 16 जनवरी से सवेरे यात्रा शुरू होकर बेड़ीपुलिया, धनुष चैराहा होते हुए राजापुर जायेगी। 16 जनवरी को कौशांबी में प्रवेश करने के साथ प्रयागराज श्रृंगवेरपुर, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, नंदीग्राम होते हुए ये यात्रा 19 जनवरी को अयोध्या पहुंचेगी। शनिवार को जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने डीपीआरओ व ईओ को निर्देश दिये कि नेशनल हाईवे से लेकर भरतकूप तक साफ-सफाई करायें। भरतकूप के महंत लवकुश दास से कहा कि मंदिर की सजावट करायें। जिलाधिकारी ने पार्किंग व्यवस्था की जानकारी ली। अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत ने कहा कि यहां पर तीन पार्किंग व्यवस्था हैं। जिलाधिकारी ने साउंड व्यवस्था व पीने के पानी की चैकस व्यवस्था को कहा। मोबाइल टॉयलेट लगाकर दो सफाई कर्मी वर्दी में मौजूद रहेंगे। जिलाधिकारी ने एसडीएम कर्वी को निर्देश दिये कि जो दुकान बाहर है, उसे अंदर करायें। रैन बसेरा की साफ-सफाई करायें। डीपीआरओ को निर्देश दिये कि पॉलिथीन का प्रयोग न करें, का बैनर बनवायें। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी को निर्देश दिये कि ड्रोन कैमरे की व्यवस्था करायें। खोही चैराहे का निरीक्षण किया। लोनिवि व डीपीआरओ को निर्देश दिये कि रोड पर बालू व गोबर, झाड़ियों की सफाई करायें। खोही तिराहे से फ्लैग आफ का कार्यक्रम है। यहां पर मंच की व्यवस्था व साफ-सफाई अच्छी होनी चाहिए। खोही के ही सभासद अरुण कुमार त्रिपाठी ने बताया कि यहां संगठन पुष्प वर्षा करेंगे। जिलाधिकारी ने ईओ कर्वी को निर्देश दिये कि खोही तिराहे के तालाब की सफाई करायें। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी ने बताया कि बरहा हनुमान मंदिर के पास महंत पुष्प वर्षा करेंगे। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने रामायण स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने एक्सईएन विद्युत को निर्देश दिये कि बिजली समेत जनरेटर की व्यवस्था करायें। इस मौके पर एसडीएम सदर सौरभ यादव, सीओ सिटी हर्ष पांडे, क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी अनुपम श्रीवास्तव, ईओ लालजी यादव आदि मौजूद रहे।

चरण पादुका यात्रा बाबत निर्देश देते डीएम-एसपी।

विपक्ष सिर्फ अंग्रेजों को मानते थे प्रेमपुजारी दासः मदनगोपाल

अखंड भारत संदेश

पत्रकारों से बात करते मदनगोपाल दास।

चित्रकूट। अखिल भारतीय निमोर्ही अनी अखाडा कामदगिरि प्रदक्षिणा प्रमुख द्वार के महंत रहे प्रेमपुजारी दास महाराज के जन्मदिन पर श्री कामदगिरि पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामस्वरुपाचार्य जी महाराज के शिष्य मदनगोपाल दास महाराज ने बताया कि प्रेमपुजारी दास सिर्फ विपक्ष अंग्रेजों को मानते थे। उन्होंने इसी बात को लेकर विधानसभा चुनाव लडने से मना कर दिया था कि उनका विपक्ष तो सिर्फ अंग्रेज थे।

ये बात शनिवार को कामदगिरि पीठम के अधिकारी/ महंत मदनगोपाल दास महाराज ने पत्रकारों से कही। उन्होंने बताया कि प्रेमपुजारी दास का नाम उमाशंकर मिश्र भोलई महाराज था। उनका जन्म 14 जनवरी 1910 को मकर संक्रान्ति पर्व पर हुआ था। वे 1952 से 1957 तक निर्विरोध विधायक रहे, पहले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे। 1957 के बाद अन्य लोगों के चुनाव लडने पर चुनाव लडने से इसलिए इंकार कर दिया कि उनका विपक्ष तो सिर्फ अंग्रेज थे। वे मूलरुप से बाराबंकी जिले के शेषपुर दामोदर पोस्ट असंदरा के थे। हैदरगढ विधानसभा से चुनाव जीते थे। फिर वे चित्रकूट में आकर लोगों की सेवा में लीन हो गये।

मदनगोपाल दास ने बताया कि किसान आन्दोलन में जेल में रहने दौरान भगवान श्रीराम के चरणों में समर्पित हो गये। उन्होंने यहां आकर लोगों की ऐसी सेवा में लीन हुए कि फिर कहीं नहीं गये। 1958 से 21 अक्टूबर 1994 तक चित्रकूट कामदगिरि प्रदक्षिणा प्रमुख द्वार के अधिष्ठाता महंत के रुप में प्रतिष्ठित रहे। उनका जीवनकाल हमेशा लोगों की सेवा में बीता है। पंजाबी भगवान ने उनका जन्मदिन मनाने की परम्परा शुरू की, तब से ये परम्परा जारी है।

ग्रामोदय के खिलाफ क्यों न हो कार्यवाही

चित्रकूट। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने ग्रामोदय विश्वविद्यालय को नोटिस जारी कर कहा कि ये कोर्ट ने तीन तदर्थ लेक्चरर्स नीरज सिंह, नीरज कुमार व विवेक सिंह को लगातार कार्य पर रखने के आदेश दिये थे। विश्वविद्यालय ने कोर्ट के आदेश की अवहेलना की है। तीनों एडहॉक लेक्चरर्स को नौकरी से निकाल दिया। उनके अवमानना की 28/2024 फाइल की है। न्यायालय ने कोर्ट की अवमानना की नोटिस जारी कर कहा कि क्यों न विश्वविद्यालय के खिलाफ कार्यवाही की जाए। इसकी बहस प्रवीण/ज्योति वर्मा एड ने की।

34 साल पुराने हत्या का वारंटी कुख्यात डकैत राधे दबोचा

अखंड भारत संदेश

पुलिस गिरफ्त में दस्यु राधे।

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश में वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय की देखरेख में थानाध्यक्ष रैपुरा शैलेन्द्र चन्द्र पाण्डेय की टीम ने 34 साल पुराने बलबा व हत्या के मामले के वारंटी राधे पुत्र मिठाईलाल निवासी सपहा को कसहाई रोड स्थित घर के बाहर से गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपी पर उप्र-मप्र समेत विभिन्न थानों में एक सैकड़ा गम्भीर अपराधों के मामले दर्ज हैं। ज्ञात है कि उप्र-मप्र के कई जिलों में आतंक के पर्याय रहे दस्यु ददुआ गैंग के छोटे सरदार बतौर पहचाना जाने वाला डकैत राधे 2007 में ददुआ के मारे जाने के बाद 2009 में सतना मप्र पुलिस के समक्ष आत्म समर्पण किया था, तब से वह जेल में रहा, कई मामलों में उसे सजा भी हुई। 2023 में अदालत के आदेश पर रिहा होकर कुंजन पुरवा कसहाई में रह रहा था। शनिवार को रैपुरा थानाध्यक्ष शैलेन्द्रचन्द्र पाण्डेय की टीम ने उसे 34 साल पुराने हत्या के मामले में वारंट होने पर गिरफ्तार किया। टीम में थानाध्यक्ष के साथ दरोगा सिद्धनाथ राय, दरोगा दिनेश पाण्डेय, दीवान आशाराम, सिपाही राममूरत मिश्र, नंदलाल, अजीत यादव, महिला सिपाही आरती वर्मा शामिल रहे।

जुआ खेलते चार दबोचे

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक राजापुर मनोज कुमार की अगुवाई में दरोगा कन्हैया बक्श सिंह की टीम ने चार जुआरियों को जुआ खेलते रंगेहाथ दबोचा है। शनिवार को राजापुर थाने के दरोगा ने सुधीर कुमार गर्ग पुत्र राजाराम निवासी शिक्षक कालोनी, रामप्यारे पुत्र बाबूलाल निवासी गनीवा, रामू हरिजन पुत्र जमुना प्रसाद निवासी कारखाना व अभिनेस सिंह पुत्र प्रेम सिंह निवासी चनहट को ताश के पत्तों से हार-जीत की बाजी लगाते जुआ खेलते दबोचा है। जुआरियों के मालफड़ से 8900 रुपये व ताश के 52 पत्ते, जामा तलाशी से 1600 रुपये बरामद किये। सभी को जुआ अधिनियम में चालान किया है। टीम में दरोगा कन्हैया बक्श सिंह, सिपाही उज्जवल पाण्डेय, जितेन्द्र मौर्या, अजय वर्मा व लवकुश यादव शामिल रहे।

साइबर अपराधों के सबूत पाने को हुई कार्यशाला

अखंड भारत संदेश

कार्यशाला में मौजूद पुलिस कर्मियो को सम्बोधित करते एसएसपी।

चित्रकूट। अपर पुलिस महानिदेशक प्रयागराज जोन भानु भास्कर के निर्देश पर पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह की अगुवाई में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ कार्यालय राजकमल की मौजूदगी में साइबर अपराधों की विवेचना समेत डिजिटल एविडेंस पाने बाबत एक दिवसीय कार्यशाला हुई।

शनिवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय राघव प्रेक्षागार में कार्यशाला में पुलिस को विख्यात साइबर सिक्योरिटी एक्सपर्ट डॉ रक्षित टंडन ने प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में जिले के सभी थानों में गठित साइबर हेल्प डेस्क में तैनात पुलिस कर्मी व आईटी एक्ट के विवेचक, साइबर सेल, स्वाट/ सर्विलांस टीम, सभी थानों के साइबर अपराध व आईटी एक्ट के विवेचक, क्राइम ब्रांच टीम, स्वेच्छा से हिस्सा लेने वाले पुलिस कर्मियों को साइबर फ्रॉड, सोशल मीडिया फ्रॉड, नेट बैंकिंग फ्राड, साइबर सिक्योरिटी, टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन, मोबाइल एप्लीकेशन से फ्राड, एटीएम पिन सिक्योरिटी, ई-मेल सिक्योरिटी, सेक्सटोर्सन, हनी ट्रैप, ओटीपी फ्राड, यूपीआई फ्राड, क्यूआर कोड, ऑनलाइन शॉपिंग फ्राड बाबत जानकारी दी। वैज्ञानिक ढंग से साइबर अपराध की विवेचना करने बाबत बताया। थानों में आने वाले पीड़ितों की कैसे मदद करें, साइबर अपराध से बचाव बाबत जानकारी दी। खासतौर से बैंक फ्रॉड रोकने व सभी फ्रॉड के साक्ष्य संकलन के तरीके समेत डिजिटल एविडेंस व फिजिकल एविडेंस के साक्ष्य संकलन के वैज्ञानिक तरीके व विभिन्न ऐप से साइबर अपराध रोकने व साइबर अपराध का खुलासा करने बाबत जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रभारी साइबर सेल/ सोशल मीडिया सेल निरीक्षक विजय सिंह, प्रभारी क्राइम ब्रांच विनोद कुमार राय, प्रभारी निरीक्षक साइबर क्राइम थाना अर्जुन सिंह, निरीक्षक अपराध कोतवाली कर्वी आशुतोष तिवारी, निरीक्षक अपराध थाना कोतवाली कर्वी राजेश कुमार सिंह, निरीक्षक अपराध थाना सरधुवा अंजनी कुमार सिंह पुलिस कार्यालय की साइबर सेल टीम, सोशल मीडिया टीम समेत जिले के सभी थानों से आये विवेचक व पुलिस कर्मी मौजूद रहे।

डीएम-एसपी ने भरतकूप थाने में सुनी समस्यायें

एएसपी ने कर्वी कोतवाली में समस्या सुन किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

लोगो की समस्या सुनते डीएम-एसपी।

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद व पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने थाना भरतकूप में थाना समाधान दिवस में फरियादियों की शिकायतें सुनकर निस्तारण के निर्देश दिये।

शनिवार को डीएम-एसपी ने कहा कि भूमि विवाद के मामले राजस्व व पुलिस विभाग की संयुक्त टीम को मौके पर भेजकर जांचकर निस्तारित करायें। इस मौके पर सीओ सिटी हर्ष पांडेय, थानाध्यक्ष भरतकूप सूबेदार बिंद, पीआरओ प्रदीप पाल, राजस्व व पुलिस विभाग के अधिकारी/ कर्मचारी मौजूद रहे।

इसी क्रम में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी ने कोतवाली कर्वी में फरियादियों की समस्यायें सुनकर निस्तारण के निर्देश दिये। उन्होंने कोतवाली कर्वी का निरीक्षण भी किया। फरियादियों की शिकायतें सुनकर जल्द निस्तारण के निर्देश दिये। भूमि विवाद के मामलों को राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर भेजकर निस्तारित करने को कहा। उन्होंने कोतवाली कर्वी का निरीक्षण कर कार्यालय में रजिस्टरों को दुरुस्त रखने के निर्देश दिये। थाना परिसर का भ्रमण कर निमार्णाधीन भवनों को देखा। कार्यदायी संस्था के ठेकेदार को निर्माण कार्य गुणवत्ता से जल्द करने के निर्देश दिये। इस मौके पर कर्वी कोतवाल अजीत कुमार पाण्डेय, राजस्व व पुलिस विभाग के अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रहे।

मन्दाकिनी प्रेक्षागृह के सामने दलित की जमीन पर कब्जा कर रहे भू-माफिया

चित्रकूट। कर्वी तहसील के कालूपुर पाही में मन्दाकिनी प्रेक्षागृह के सामने राष्ट्रीय राजमार्ग किनारे पड़ी अनुसूचित जाति के गरीबों की जमीन पर कुछ लोग अवैध कब्जा करने में जुटे हैं। भूमिधरी की जमीन हड़पने की तैयारी किये हैं। शनिवार को मन्दाकिनी प्रेक्षागृह के सामने पड़ी कुछ जमीन गांव के ब्राह्मणों की थी, जिसे बेंच दिया। दूसरी ओर ब्राह्मणों की जमीन में राष्ट्रीय राजमार्ग किनारे की अनुसूचित जाति की गरीब चुन्नी देवी पत्नी सीताराम की थी। दबंग भू-माफिया अवैध कब्जा कर रहे हैं। कुछ वर्षों पूर्व चुन्नी देवी पत्नी सीताराम की मृत्यु हो गई है।

22 तक धर्मनगरी के 22 स्थानों पर होगा दीपोत्सव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में रामलला मूर्ति स्थापना को लेकर कर्मभूमि चित्रकूट में उत्साह है। मत्स्यगयेन्द्रनाथ मंदिर व बुंदेली सेना ने 22 जनवरी तक धर्मनगरी के 22 प्रमुख स्थानों पर दीपदान, कीर्तन व पूजन की तैयारी की है। रामशैय्या में सैकड़ों दीप जलाकर शुरूआत हुई।

शनिवार को बुंदेली सेना जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने बताया कि रामलला मंदिर में विराजमान हो रहे हैं। ये गर्व का क्षण है। सभी सौभाग्यशाली हैं कि विलक्षण क्षण के गवाह बनेंगे। धर्मनगरी तो प्रभु की कर्मभूमि रही, यहां प्रभु ने वनवास काल के साढे गयारह वर्ष बिताये हैं। 22 जनवरी को यादगार बनाने को तीर्थक्षेत्र के 22 प्रमुख स्थानों में दीपदान होगा। शुरूआत रामशैय्या से हुई है। विधिविधान से पूजन-अर्चन बाद कीर्तन हुई। सैकड़ों दीपों से रामशैय्या को जगमगा दिया।

मत्स्यगयेन्द्रनाथ मंदिर ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष प्रदीपदास महराज ने बताया कि 22 स्थानों पर दीपोत्सव के बाद मत्स्यगयेन्द्रनाथ मंदिर में 22 जनवरी को विशेष पूजन होगा। रुद्राभिषेक का दौर चलेगा। मंदिर की भव्य सजावट होगी। शयन आरती तक भजन-कीर्तन, प्रसाद वितरण के दौर चलेंगे। 22 जनवरी को हर मठ-मंदिर व घर-घर दीपोत्सव मनेगा। पांच सौ सालों के लम्बे इंतजार के बाद वह क्षण आया है, जब प्रभु भव्य दिव्य मंदिर में विराजमान होंगे। राजनीतिक दलों को राजनीति नहीं करनी चाहिए। इस मौके पर व्यापारी अंकित पहारिया, रामदास पटेल, प्रदीप द्विवेदी, अखिलेश त्रिपाठी, अम्बिका द्विवेदी, रोहित कुमार, रामजी शुक्ला, जगरूप पाठक समेत अन्य भक्तजन मौजूद रहे।

जन औषधि केंद्र स्थापना को हुए नामित

चित्रकूट। जिला सहकारी डरेशन डीसीएफ की बैठक बस स्टैंड स्थित श्याम दरबार में चेयरमैन योगेश जैन की अध्यक्षता में हुई। सचिव राजेश मिश्रा ने पिछली बैठक कार्यवाही की पुष्टि की। शनिवार को हुई बैठक में आगामी कार्य का एजेंडा रखा। उपाध्यक्ष आलोक द्विवेदी, डायरेक्टर सुरेश मिश्रा, पंकज मिश्रा को फरवरी तक जन औषधि केंद्र स्थापना को नामित किया। एक कार्यशाला के आयोजन की चर्चा हुई। इफ्को के कार्ड डेट उत्पादन केंद्र को डायरेक्टर दिव्या त्रिपाठी व सारंगधर मिश्र को नामित किया। राखी चैबे को सहयोग करने को कहा। बैठक में सहकार भारती लखनऊ के तुषार श्रीवास्तव ने सहकारिता बाबत विचार रखे। योजनाओं से अवगत कराया। अध्यक्ष योगेश जैन ने कहा कि वर्तमान में उर्वरक वितरण परिवहन आदि में कृषि विभाग अनावश्यक हस्तक्षेप कर कृत्रिम खाद का संकट पैदा करने का प्रयास किया है। शासन को पत्र लिखकर कार्यवाही की मांग की जाएगी, ताकि अगले सत्र में व्यवस्था में बेहतर सुधार हो सके। बैठक में सहकार भारती के परमहंस त्रिपाठी, राम सागर चतुवेर्दी, कुलदीप सिंह, सुनील द्विवेदी, कामता धतुरहा, हरिशंकर, पुष्पराज, अनुराग द्विवेदी मौजूद रहे। अंत में डीसीबी अध्यक्ष पंकज अग्रवाल की मां के निधन पर दो मिनट का मौन धारण किया।

बहिलपुरवा थाने का निरीक्षण करते एसपी।

थाने के रिकार्ड रखें चुस्त-दुरुस्तः एसपी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरूण कुमार सिंह ने थाना बहिलपुरवा का निरीक्षण कर कार्यालय में रजिस्टरों को देखकर दुरुस्त करने के निर्देश दिये। शनिवार को एसपी ने थाना परिसर का भ्रमण कर महिला हेल्प डेस्क, विवेचना कक्ष, आरक्षी बैरिक, भोजनालय, आवासीय परिसर देखे। थानाध्यक्ष को साफ-सफाई के निर्देश दिये। थाना परिसर में निमार्णाधीन आवासीय इमारत का निरीक्षण कर कार्यदायी संस्था के ठेकेदार को निर्माण कार्य जल्द एवं गुणवत्ता से पूरे करने के निर्देश दिये। इस मौके पर सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय, पीआरओ प्रदीप पाल आदि मौजूद रहे।

श्रीराम चरण पादुका यात्रा मार्गों को करें दुरुस्त

अखंड भारत संदेश

मार्गों का भ्रमण करते डीएम-एसपी।

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने 15 जनवरी से शुरू होने वाली श्रीराम चरण पादुका यात्रा मार्गों का निरीक्षण कर भरतकूप मंदिर देखा।

शनिवार को डीएम-एसपी ने भरतकूप मंदिर से रामसइया से खोही तिराहा, निर्मोही अखाड़ा, रामायण मेला परिसर होते हुये बेड़ीपुलिया के सड़क मार्ग को देखा। सम्बन्धित को यात्रा दौरान सुरक्षा व्यवस्था व यातायात व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त रखने के निर्देश दिये। इस दौरान एसडीएम सदर सौरभ यादव, सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय, थानाध्यक्ष भरतकूप सूबेदार बिन्द, पीआरओ प्रदीप पाल आदि मौजूद रहे।

22 को बन्द रहेंगी सभी शराब दुकानें: डीएम

चित्रकूट। जिलाधिकारी/जिला मजिस्ट्रेट अभिषेक आनन्द ने बताया कि आबकारी आयुक्त प्रयागराज के 11 जनवरी के शासनादेश में निर्णय लिया है कि 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि में बन रहे मंदिर में प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के मद्देनजर 22 जनवरी को प्रदेश की सभी मदिरा दुकानें बन्द रहेगी।शनिवार को जिला मजिस्ट्रेट ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि में बन रहे मंदिर में प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा पर चित्रकूट की सभी थोक/फुटकर आबकारी दुकानें (देशी मदिरा/विदेशी मदिरा/बीयर/भांग) पूर्ण रूप से बन्द करने के आदेश हैं। इस बन्दी का कोई प्रतिफल अनुज्ञापियों को देय नहीं होगा। आदेश का पालन करना सुनिश्चित करें।

जानकीकुण्ड चिकित्सालय में मुंबई की फिजीशियन डॉ श्वेता देंगी सेवायें

अखंड भारत संदेश

डॉ श्वेता।

चित्रकूट। श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट से संचालित जानकीकुण्ड चिकित्सालय में अब मुंबई की जनरल फिजीशियन डॉ श्वेता चिंदारकर जनवरी से सेवायें देंगी। श्री सदगुरू सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी/डायरेक्टर डॉ बीके जैन ने बताया कि क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा का अभाव है। लोगों को जनरल मेडीशिन बाबत बीमारियों को रोगियों को काफी दिक्कतें होती थीं। अच्छे फिजीशियन की कमी से बाहर जाना पड़ता था। बाहर काफी दिक्कतें होती थी। श्री सदगुरू से संघ ट्रस्ट बोर्ड ने फैसला लिया कि क्षेत्रवासियों को चिकित्सा को कौन-कौन सुविधायें दी जायें, ताकि यहां के लोगों को बाहर न जाना पड़े। डॉ श्वेता एमबीबीएस व एमडी हैं। निरंतर सेवायें देने से क्षेत्र के लोगों को लाभ होगा। जानकीकुंड चिकित्सालय में मुंबई की अच्छी फिजीशियन आने से क्षेत्रवासियों में खुशी का माहौल है।

बांग्लादेश में आग से झुलसी महिला और बच्चे की मौत,ठंड का कहर, 16 बच्चों ने अस्पताल में दम तोड़ा

ढाका। बांग्लादेश की राजधानी में आज तड़के एक झुग्गी बस्ती में आग लगने से झुलसी एक महिला और एक बच्चे की मौत हो गई। इस दौरान ठंड भी कहर बरपा रही है। पिछले छह दिनों में एक अस्पताल में भर्ती तीन सौ से ज्यादा बच्चों में से 16 ने दम तोड़ दिया।

स्थानीय समाचार पत्र द डेली स्टार की रिपोर्ट के अनुसार, राजधानी ढाका के कारवां बाजार में आज तड़के एक झुग्गी बस्ती में आग लगने से एक महिला और एक बच्चे की मौत हो गई और कई अन्य झुलस गए। मृतकों की पहचान तत्काल नहीं हो सकी है। फायर सर्विस और सिविल डिफेंस के मीडिया सेल के गोदाम निरीक्षक अनवारुल इस्लाम ने कहा, आग फिल्म विकास निगम (एफडीसी) के पास मोल्लाबारी झुग्गी में लगभग 2:23 बजे लगी। सूचना पर 13 दमकल गाड़ियों ने सुबह करीब 5:50 बजे आग पर काबू पा लिया। बाद में दमकलकर्मियों ने दो शव बरामद किए। इस दौरान कम से कम 300 झोपड़ियां जल गईं।

ढाका टिब्यून अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, रंगपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में पिछले छह दिनों में शनिवार तक ठंड संबंधित बीमारियों से कम से कम 16 बच्चों की मौत हो गई है। इसके अलावा 300 से ज्यादा बच्चे अभी भी यहां भर्ती हैं।

अमेरिका ने हूती विद्रोहियों के ठिकानों पर फिर किया हवाई हमला

सना (यमन)। अमेरिकी सेना ने शुक्रवार देररात ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों के खिलाफ फिर हवाई हमला किया। अमेरिकी सेना ने हूती नियंत्रित यमन में ताबड़तोड़ रॉकेट और मिसाइल दागे। एक दिन पहले अमेरिकी और ब्रिटिश सैनिकों ने ईरान समर्थित इस समूह पर बड़े पैमाने पर हमला शुरू किया था। हूती विद्रोही पिछले कुछ समय से लाल सागर में वाणिज्यिक शिपिंग यातायात पर कहर बरपा रहे थे।

द वाशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिकी अधिकारियों ने कहा है कि ताजा हमले में हूती की रडार साइट को निशाना बनाया गया। इस साइट को समुद्री यातायात के लिए खतरा माना जाता है। यमन की राजधानी सना में भी एक विस्फोट की आवाज सुनी गई है। हमलों से पहले नौसेना ने जहाजों को लाल सागर में यमन के आसपास के क्षेत्रों से बचने की चेतावनी दी। ताजा हमले से कुछ घंटे पहले अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने चेतावनी दी थी कि हूती को और भी हमलों का सामना करना पड़ सकता है। राष्ट्रपति ने कहा कि हूती को माकूब जवाब दिया जाएगा। द वाशिंगटन पोस्ट के अनुसार, ताजा हमले से पहले अमेरिकी और ब्रिटिश सैनिकों ने 28 अलग-अलग स्थानों पर बमबारी की और 60 से अधिक हूती के ठिकानों को नष्ट कर दिया। शुक्रवार को पेंटागन में ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के निदेशक लेफ्टिनेंट जनरल डगलस ए. सिम्स ने कहा कि अमेरिकी और ब्रिटिश युद्धक विमानों ने 30 से 60 मिनट के भीतर हमले किए। इन हमलों में टॉमहॉक मिसाइलों का प्रयोग भी किया गया। सिम्स ने कहा कि यह स्पष्ट नहीं सका है कि हूती के कितने विद्रोही मारे गए।

गाजा में फिलिस्तीनियों की मौत का आंकड़ा बढ़कर 23,708 हुआ

गाजा। गाजा स्थित स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, गाजा पट्टी पर चल रहे इजरायली हमलों में मरने वाले फिलीस्तीनियों की संख्या बढ़कर 23,708 हो गई है।

समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, मंत्रालय ने शुक्रवार को एक प्रेस बयान में कहा कि इजरायली सेना ने पिछले 24 घंटे के दौरान 151 फिलिस्तीनियों को मार डाला और 248 अन्य को घायल कर दिया।

इसमें कहा गया है कि 7 अक्टूबर को इजरायल-हमास संघर्ष शुरू होने के बाद से इजरायली हमलों में 60,005 फिलिस्तीनी घायल हो गए हैं। इसके अलावा बड़ी संख्या में पीड़ित अभी भी मलबे के नीचे हैं, और एम्बुलेंस और नागरिक सुरक्षा दल उन तक नहीं पहुंच सके हैं। प्रत्यक्षदर्शियों और स्थानीय सूत्रों ने शिन्हुआ को बताया कि इजरायली विमानों ने पहले मध्य गाजा पट्टी के दीर अल-बलाह शहर के पश्चिम में अल-अक्सा शहीद अस्पताल के पास एक घर को निशाना बनाया था, जिसमें 11 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। सूत्रों ने बताया कि इस बीच, गाजा पट्टी के दक्षिण में खान यूनिस और मध्य गाजा पट्टी में अल-मगाजी शरणार्थी शिविर में सशस्त्र झड़पें जारी रहीं।

नेपाल: राप्ती नदी में बस गिरने से 12 यात्रियों की मौत, मृतकों और घायलों में कई भारतीय

काठमांडू। नेपाल में बीती देर रात एक यात्री बस भालुवांग के निकट राप्ती नदी के पुल से नीचे नदी में गिर गई। इस दुर्घटना में 12 लोगों की मौत हो गई और 23 लोगों के घायल हो गए। घायल यात्रियों का अस्पताल में इलाज किया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि मृतकों और घायल यात्रियों में कई भारतीय नागरिक भी हैं। नेपालगंज से काठमांडू की तरफ आ रही यह यात्री बस बीती देर रात भालुवांग के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गई। घायल यात्रियों ने पुलिस को बताया कि शुक्रवार की शाम को नेपालगंज से काठमांडू के लिए रवाना हुई इस बस की स्पीड बहुत अधिक थी। राप्ती नदी के पुल पर ड्राइवर ने बस पर नियंत्रण खो दिया और बस पुल से नीचे नदी में गिर गई। जान बचाने के लिए कई यात्रियों ने बस से छलांग लगा दी थी। दुर्घटनास्थल से पुलिस को शनिवार दोपहर तक 12 शव मिल चुके थे। हालांकि इनमें से शाम चार बजे तक 9 शवों की ही पहचान हो पाई है। घटनास्थल पर पहुंची राजमार्ग पुलिस ने बताया कि मृतकों में अब तक दो भारतीय नागरिकों की भी शिनाख्त हुई है। पुलिस इंस्पेक्टर उज्जवल बहादुर सिंह ने बताया कि मरने वालों में उत्तर प्रदेश के मनोज (31) तथा बिहार के योगेन्द्र राम (67) भी हैं। पुलिस ने यह भी बताया है कि जिन तीन शवों की पहचान नहीं हो पाई है, उनमें भी कोई भारतीय नागरिक हो सकता है। इस दुर्घटना में घायल हुए 23 यात्रियों को नेपालगंज मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। अस्पताल की तरफ से दी गई जानकारी के मुताबिक गम्भीर रूप से घायल भारतीय नागरिकों में उत्तर प्रदेश के निरंजन कोरी (20), आशुतोष गौतम (24), अरबाज खान (20), मोहम्मद जावेद (25), छोटी सिलौरा (20), नाफीजा खान (19), राहुल कुमार अहीर (23) हैं। इनके अलावा 16 नेपाली नागरिक भी घायल हुए हैं। इस बीच पुलिस ने बस चालक और सह चालक को हिरासत में ले लिया है।

लंदन के मेयर पद के लिए चुनाव मैदान में उतरेंगे भारतीय मूल के दो कारोबारी

लंदन। लंदन के मेयर पद के लिए भारतीय मूल के दो प्रत्याशी मैदान में उतर रहे हैं। दो मई को होने वाले चुनाव के लिए भारतीय मूल के दो कारोबारी निवर्तमान मेयर सादिक खान को चुनौती देने के लिए स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में उतर गए हैं। व्यवसायी तरुण गुलाटी (63) ने पिछले साल के अंत में भारत की यात्रा के दौरान अपना मेयर पद का चुनावी अभियान शुरू किया था वहीं, 62 वर्षीय उद्यमी श्याम भाटिया के चुनाव में ताल ठोंकने से लगभग एक दर्जन उम्मीदवार मैदान में हैं। गुलाटी का चुनावी नारा ह्यह्यविश्वास और विकासह्लह्ल है, जबकि बत्रा ने ह्यह्यआशा के दूतह्लह्ल का नारा दिया है। गुलाटी ने से कहा, ऐसी धारणा बढ़ रही है कि मौजूदा सत्ताधारी ने समर्थन खो दिया है और पार्टी के एक अन्य प्रमुख दावेदार से भी मतदाता बहुत खुश नहीं हैं। उन्होंने कहा, मैं लंदन का अगला मेयर बनने के लिए एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में खड़ा हूं क्योंकि मैं पार्टी विचारधारा और पूर्वाग्रह के बिना विचारों और नीतियों के मुक्त प्रवाह को प्रोत्साहित करना चाहता हूं। मैं लोगों के विचार जान रहा हूं और उसके अनुसार निर्णय लेने की प्रक्रिया में जहां भी संभव होगा, लोगों को शामिल करने के लिए काम करूंगा।

ताइवान में राष्ट्रपति, विधायिका चुनाव के लिए मतदान शुरू

ताइपे। ताइवान में राष्ट्रपति पद और विधायिका के चुनाव के लिए मतदान आज सुबह आठ बजे शुरू हो गया। लोग शाम चार बजे तक मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे। स्थानीय समाचार पत्र ताइपे टाइम्स के अनुसार, प्रत्येक पात्र मतदाता राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए एक मत डालेगा, जबकि विधायिका चुनाव के लिए दो मत डाले जाएंगे।

ताइवान चुनाव आयोग के अध्यक्ष ली चिन-युंग के अनुसार मतदान के नतीजे शनिवार देररात घोषित होने की उम्मीद है। आयोग के अनुसार, कुल 19,548,531 लोग राष्ट्रपति पद के लिए मतदान करने के पात्र होंगे, जबकि अतिरिक्त 17,476 लोग विधायकों के लिए मतदान कर सकेंगे।

उल्लेखनीय है कि चीन के साथ बढ़ते तनाव के बीच ताइवान में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव हो रहे हैं। पूरी दुनिया की नजर इस चुनाव पर टिकी हुई है। पिछले आठ वर्षों में ताइपे पर चीन के हमले की धमकियों ने ताइवान की चिंता बढ़ा दी है। ताइवान की जनता देश की पहली महिला राष्ट्रपति साई-इंग-वेन के उत्तराधिकारी का चयन करेंगी। साई-इंग-वेन 2016 और 2020 का चुनाव जीतकर राष्ट्रपति बनी थीं। इस बार चुनाव में तीन मुख्य उम्मीदवार- डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (डीपीपी) से लाई चिंग-ते, कुमिनटंग (केएमटी) से हू-यू-इह और ताइवान पीपुल्स पार्टी (टीपीपी) से को-वेन-जे हैं।

अमेरिकी वैज्ञानिकों का निष्कर्ष, दवाओं के लिए मारिजुआना पर लगा प्रतिबंध हटा दिया जाना चाहिए

वाशिंगटन। अमेरिका के वैज्ञानिकों का मत है कि दवाओं के लिए मारिजुआना पर लगे प्रतिबंध को हटा देना चाहिए। संघीय वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि मारिजुआना उतना जोखिम भरा नहीं है, जितना आंका गया है। न ही अन्य कड़ाई से नियंत्रित पदार्थों की तरह इसके दुरुपयोग की संभावना है। इन वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि इसके संभावित चिकित्सीय लाभ हैं। इसलिए देश की दवाओं की सबसे प्रतिबंधात्मक श्रेणी से इस अब बाहर कर देना चाहिए।

द न्यूयार्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, टेक्सास के वकील मैथ्यू जोर्न ने मारिजुआना पर लगे प्रतिबंध के संबंध में संघीय स्वास्थ्य अधिकारियों के खिलाफ मुकदमा दायर किया है। मैथ्यू ने मांग की है कि यह प्रतिबंध हटाया जाए। उन्होंने इस संबंध में 250 पेज की रिपोर्ट दाखिल की है। इस रिपोर्ट में ही मारिजुआना पर किया गया वैज्ञानिक अध्ययन शामिल है। इसका शुक्रवार रात ऑनलाइन प्रकाशित किया। एक एचएचएस अधिकारी ने दस्तावेज की प्रामाणिकता की पुष्टि की है। अखबार के अनुसार, 1970 से अमेरिका में मारिजुआना पर प्रतिबंध लगा हुआ है। इस प्रतिबंध मेंहेरोइन भी शामिल है। यह प्रतिबंध यह कहते हुए लगाया गया था कि इससे निर्मित दवाओं का कोई चिकित्सीय उपयोग नहीं है और इसके दुरुपयोग की अत्यधिक संभावना है। मैथ्यू की रिपोर्ट में् खाद्य एवं औषधि प्रशासन और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन ड्रग एब्यूज के वैज्ञानिकों ने सिफारिश की है कि ड्रग इनफोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन मारिजुआना को केटामाइन और टेस्टोस्टेरोन जैसी दवाओं के साथ अनुसूची तीन में शामिल दवाओं की श्रेणी में शामिल कर दे। उल्लेखनीय है कि मारिजुआना पर अमेरिका बहस चलती रहती है। दिसंबर, 2020 में हाउस ऑफ रिप्रेसेंटेटिव्स ने मारिजुआना (गांजा) को कानून के दायरे से बाहर करने के लिए मतदान किया था।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

यमन में हूती विद्रोहियों के ठिकानों पर हमले आत्मरक्षा के लिए किये गये : सुनक

लंदन। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने शुक्रवार को कहा कि यमन में हूती विद्रोहियों के ठिकानों के खिलाफ अमेरिका के साथ संयुक्त हवाई हमला आत्मरक्षा के लिए आवश्यक था। लाल सागर में नवंबर 2023 से अंतरराष्ट्रीय जहाजों को निशाना बना रहे हूती के खिलाफ अमेरिका के नेतृत्व वाला यह पहला हमला है। सुनक ने ईरान समर्थित समूह पर ब्रिटेन के जहाजों को धमकी देने का आरोप लगाया। अमेरिकी वायुसेना ने कहा कि यमन में हूती द्वारा इस्तेमाल किए गए 16 स्थानों पर 60 से अधिक ठिकानों पर हमला किया गया। सुनक ने कहा, अंतरराष्ट्रीय समुदाय की बार-बार चेतावनियों के बावजूद, हूती ने लाल सागर में हमले जारी रखा है, जिसमें इस सप्ताह ब्रिटेन और अमेरिकी युद्धपोतों पर हमले भी शामिल हैं। उन्होंने कहा, इसे सहन नहीं किया जा सकता। ब्रिटेन नौ-परिवहन की स्वतंत्रता और मुक्त व्यापार के लिए हमेशा खड़ा रहेगा। हमने आत्मरक्षा के लिए कार्रवाई की है। ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय (एमओडी) ने कहा कि हूती पर दो हमले किये गये और हमलों के विस्तृत परिणामों का आकलन किया जा रहा है। ब्रिटेन, अमेरिका, बहरीन, कनाडा, डेनमार्क, जर्मनी, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड और कोरिया गणराज्य की सरकारों के एक संयुक्त बयान में दोहराया गया कि कड़ी चेतावनियों के बावजूद, अमेरिका और ब्रिटेन के जहाजों सहित लाल सागर में जहाजों के खिलाफ कई मिसाइल और एकतरफा हमले जारी थे।